हिंदुत्व का मातृहृदय

वं. ताई जी

हिंदुत्व का मातृहृदय

वं. ताई जी

वं. सरस्वती विनायक उपाख्य ताई जी आपटे

द्वितीय प्रमुख संचालिका - राष्ट्र सेविका समिति

जन्म - फाल्गुन कृष्ण 11 शके 1832 17 मार्च 1910

निर्वाण - माघ कृष्ण 12 शके 1916 9 मार्च 1994

संघमित्रा सेवा प्रतिष्ठान

सेविका प्रकाशन , देवी अहल्या मंदिर, धंतोली

नागपुर - 440 012

☎ : (0712) 2442097

सहयोग राशी - रू. ४०/-

लो श्रद्धांजलि वंदनीय माँ

लो श्रद्धांजलि वंदनीय माँ, भावपुष्प से अर्चन
तेजोमय वात्सल्यमूर्ति माँ, तुमको अंतिम वंदन ।।

गंगा का पावन प्रवाह जब, द्वार तुम्हारे बहते आया
भगिनी के स्वागत में तुमने, स्नेहमयी मृदु हाथ बढाया
अहंकार का लेश न मन में, केवल मात्र समर्पण
लक्ष्मी की पूजावेदी पर-सरस्वती का चंदन ।।

सौम्य सरल व्यक्तित्व तुम्हारा, सबका मन आनंदित करता
उस विशाल वटवृक्ष छाँव में, हर पंछी कुछ क्षण रुक जाता
हो कृतार्थ और हो कृतज्ञ वह, झोली भर आशिष ले जाता
हर मानव को वहाँ हुएं है शिवशक्ति के दर्शन, तुमको अंतिम वंदन ।।

देख प्रबल कर्तृत्व मौसी ने, गुरुतर भार दिया समिति का
प्रांत प्रांत और ग्राम ग्राम में उत्कट कार्य हुआ समिति का
यही तुम्हारी प्रेरक शक्ति, मधुर स्नेह का बंधन
राष्ट्रभक्ति की करांजलि से, भाव पुष्प ये अर्पण ।।

मनःपटल

वं. ताई जी मृदु, ऋजु, पारदर्शी, कार्यशरण व्यक्तित्व। समर्पण का लोकविलक्षण आदर्श। अपने भारतीय मूलाक्षरों में श, स, ष ये तीन अक्षर हैं। वे हमें मानो कहते हैं शरण में रहना - नम्र रहना, शांत रहना, समर्पण करना, षड् विकारों का दमन करना, संयमित करना। ताई जी के जीवन में इस का दर्शन होता है। उनके स्वभाव में न क्रोध था, न मोह, मद, मत्सर। वह थी ममता, माया की गागर, स्नेह का, प्रेम का अथाह सागर। वात्सल्य का आगर।

ताई जी का नाम सरस्वती था। 'सह' भाव का प्रयोग करते समय हम 'स' का उपयोग करते है। जैसे स-रस, स-स्नेह आदि। मनुष्य का अस्तित्व ही 'स' से है। सत्, सत्य, सत्त्व, स्वत्व, सद्गुण, ऐसे अनेक शब्दों से वह प्रकट होता है। भारतीय संस्कृति में मुक्ति के चार प्रकार 'स' से ही प्रांरभ होते है - समीपता, सलोकता, स्वरुपता, सायुज्यता।

ताई के व्यक्तित्व में भी सरलता, सहजता, सहनशीलता, सस्मितता, सख्य, समरसता, सततोद्योग, सहकारिता, समन्वयी, सक्रियता, सद्विद्या, समानता, स्नेह, सेवा, साधना, सामंजस्य, सावधानता, आदि सभी उत्तमोत्तम गुणों का संग्रह था परंतु उन सबका विकास 'स्व' के लिये नही अपितु समाज, राष्ट्र के लिये था। ताई जी का जीवन अर्थात् एक साधिका का जीवन, स्वलोपी जीवन। 1936 से 1994 तक 58 वर्ष का समय सतत समिति कार्यरत जीवन, ध्येय की ओर निरंतर प्रतिपल आगे बढनेवाला जीवन था वह। हजारों व्यक्तियों को, सेविकाओं को जोडना, उनसे संबंध बनाये रखना, उन्हें कार्यप्रवण करना। आज भी अनेकों सेविकाओं के मन में उनकी प्रतिमा विराजमान है। उनका गृहस्थ जीवन भी एक आदर्श वस्तुपाठ है इसमें कोई दो राय नही। अनेकोंने उसकी छांव में सुखशांति प्राप्त की, अनेक लोग राष्ट्रकार्य के साधक बने। उनके 84 वर्ष का लौकिक और 58 वर्ष का साधनामय, संगठनात्मक जीवन को पुस्तिका के सीमित पृष्ठों में बांधना अतीव कठिन काम है। अतः उनके जीवन की अंशात्मक झलकियाँ मात्र इस पुस्तिका में है।न्यूनत्व के लिये क्षमाप्रार्थी है।

मा.सत्यपाल जी पटाईत पूर्व संपादक दैनिक युगधर्म नागपुर, प्रा.गीता सिंग इन्होंने हस्तलिखित पढकर मौलिक सुझाव दिये। उनके हम अतीव आभारी है।

रथसप्तमी 5110 संपादिका

2.2.09

लो श्रद्धांजलि वंदनीय माँ

लो श्रद्धांजलि वंदनीय माँ, भावपुष्प से अर्चन
तेजोमय वात्सल्यमूर्ति माँ, तुमको अंतिम वंदन ।।

गंगा का पावन प्रवाह जब, द्वार तुम्हारे बहते आया
भगिनी के स्वागत में तुमने, स्नेहमयी मृदु हाथ बढाया
अहंकार का लेश न मन में, केवल मात्र समर्पण
लक्ष्मी की पूजावेदी पर-सरस्वती का चंदन ।।

सौम्य सरल व्यक्तित्व तुम्हारा, सबका मन आनंदित करता
उस विशाल वटवृक्ष छाँव में, हर पंछी कुछ क्षण रुक जाता
हो कृतार्थ और हो कृतज्ञ वह, झोली भर आशिष ले जाता
हर मानव को वहाँ हुएं है शिवशक्ति के दर्शन, तुमको अंतिम वंदन ।।

देख प्रबल कर्तृत्व मौसी ने, गुरुतर भार दिया समिति का
प्रांत प्रांत और ग्राम ग्राम में उत्कट कार्य हुआ समिति का
यही तुम्हारी प्रेरक शक्ति, मधुर स्नेह का बंधन
राष्ट्रभक्ति की करांजलि से, भाव पुष्प ये अर्पण ।।

मनःपटल

वं. ताई जी मृदु, ऋजु, पारदर्शी, कार्यशरण व्यक्तित्व। समर्पण का लोकविलक्षण आदर्श। अपने भारतीय मूलाक्षरों में श, स, ष ये तीन अक्षर हैं। वे हमें मानो कहते हैं शरण में रहना - नम्र रहना, शांत रहना, समर्पण करना, षड् विकारों का दमन करना, संयमित करना। ताई जी के जीवन में इस का दर्शन होता है। उनके स्वभाव में न क्रोध था, न मोह, मद, मत्सर। वह थी ममता, माया की गागर, स्नेह का, प्रेम का अथाह सागर। वात्सल्य का आगर।

ताई जी का नाम सरस्वती था। 'सह' भाव का प्रयोग करते समय हम 'स' का उपयोग करते है। जैसे स-रस, स-स्नेह आदि। मनुष्य का अस्तित्व ही 'स' से है। सत्, सत्य, सत्त्व, स्वत्व, सद्गुण, ऐसे अनेक शब्दों से वह प्रकट होता है। भारतीय संस्कृति में मुक्ति के चार प्रकार 'स' से ही प्रांरभ होते है - समीपता, सलोकता, स्वरुपता, सायुज्यता।

ताई के व्यक्तित्व में भी सरलता, सहजता, सहनशीलता, सस्मितता, सख्य, समरसता, सततोद्योग, सहकारिता, समन्वयी, सक्रियता, सद्विद्या, समानता, स्नेह, सेवा, साधना, सामंजस्य, सावधानता, आदि सभी उत्तमोत्तम गुणों का संग्रह था परंतु उन सबका विकास 'स्व' के लिये नही अपितु समाज, राष्ट्र के लिये था। ताई जी का जीवन अर्थात् एक साधिका का जीवन, स्वलोपी जीवन। 1936 से 1994 तक 58 वर्ष का समय सतत समिति कार्यरत जीवन, ध्येय की ओर निरंतर प्रतिपल आगे बढनेवाला जीवन था वह। हजारों व्यक्तियों को, सेविकाओं को जोडना, उनसे संबंध बनाये रखना, उन्हें कार्यप्रवण करना। आज भी अनेकों सेविकाओं के मन में उनकी प्रतिमा विराजमान है। उनका गृहस्थ जीवन भी एक आदर्श वस्तुपाठ है इसमें कोई दो राय नही। अनेकोंने उसकी छांव में सुखशांति प्राप्त की, अनेक लोग राष्ट्रकार्य के साधक बने। उनके 84 वर्ष का लौकिक और 58 वर्ष का साधनामय, संगठनात्मक जीवन को पुस्तिका के सीमित पृष्ठों में बांधना अतीव कठिन काम है। अतः उनके जीवन की अंशात्मक झलकियाँ मात्र इस पुस्तिका में है।न्यूनत्व के लिये क्षमाप्रार्थी है।

मा.सत्यपाल जी पटाईत पूर्व संपादक दैनिक युगधर्म नागपुर, प्रा.गीता सिंग इन्होंने हस्तलिखित पढकर मौलिक सुझाव दिये। उनके हम अतीव आभारी है।

रथसप्तमी 5110 संपादिका

2.2.09

अनुक्रमणिका

सुरम्य जीवन	1 - 5
व्यष्टि समष्टि संगम सुंदर	6 - 23
सेवामय जीवन	24 - 27
ध्येय पथ पर निरंतर	28 - 42
ताई जी वं. प्रमुख संचालिका	43 - 63
कार्य व्यापक हो हमारा	64 - 88
भैरवी के स्वर	89 - 98

मुद्रक : एम. प्रिन्टस् , 190, डॉ. मुंजे मार्ग, धंतोली, नागपूर - 440 012

☎ : (0712) 2426182

सुरम्य जीवन

सतेजोऽस्तु नित्यं शांतपावित्र्यस्य।
दिव्यचारित्र्यस्य नंदादीपः।।

समिति की शाखाओं पर नित्य गाया जानेवाला यह श्लोक। हमने यह केवल गाया ही नही अपितु वं. ताई जी के रूप में उसे चरितार्थ होते हुए देखा है। हमारे आसपास ही वह साकार हुआ, प्रज्वलित रहा। शांत नंदादीप ही तो था वह। उसके प्रकाश से न किसीकी आँखें चकाचौंध हुई, न वह कभी हवा से फरफराया, न बीच में बुझा। जिस प्रकार शांत नंदादीप तेल की आखरी बूंद तक जलता है, फिर शांत हो जाता है, वैसा ही ताईजी का जीवनदीप शरीर के अंतिम सांस तक कार्यरत रहा और उसी सहजता से वह शांत भी हुआ। कहीं वेदना की चीत्कार नही, कराहना नही, या तडपना नही। चाबी खत्म होते ही घडी या खिलौना रुक जाता है वैसा हुआ। गीत की एक पंक्ति है - "ज्योति मंदिर में जलेगी, राष्ट्र का आंगन सजेगा" - ताईजी नाम की इस ज्योति ने स्वयं जलकर समिति का एवं भारत का आंगन, अनेक सेविकाओं का जीवन आलोकित किया। बकुलपुष्प जैसा सुगंध प्रसारित करता है, चंद्रमा जैसी शीतलता, चांदनी फैलाता है वैसे ही ताई जी ने ममता प्रसारित करते हुए जीवन व्यतीत किया, सहजता से। कारण कुछ संस्कार मिले थे विरासत में और कुछ थे पूर्वसुकृत की कमाई और कुछ थे प्रयासपूर्वक ग्रहण किये हुए।

तापहारिणी तापी

कोंकण में आंजर्ले नाम के छोटेसे ग्राम में अपने ननिहाल में एक छोटी बालिका ने फाल्गुन कृष्ण 11 शके 1831 - दिनांक 17-3-1910 को जन्म लियां। जन्मदात्री का नाम था - सावित्री और पिता का नाम था गंगाधरपंत विद्वांस। गंगाधरपंत 'नाना' इस नाम से ही अधिक परिचित थे। सावित्री जी की गर्भावस्था में कुछ कारणवश वह पुणे में गायकवाड वाडा में अपने मामाससुर जी अर्थात् लो. तिलक जी के पास रही थी। उस समय गायकवाड वाडा, भारत के स्वाधीनता आंदोलन का 'शक्तिकेंद्र' था। और उसके स्वामी तिलक

जी भारतीय जनता के अनभिषिक्त सम्राट थे। प्रतिपल मातृभूमि का चिंतन करनेवाले, जनसेवा यही ईश्वर की पूजा समझनेवाले, गीता में वर्णित सात्त्विक कार्यकर्ता थे लोकमान्य जी। गर्भस्थित बालिका पर उनके ही संस्कार हुए, देशभक्ति के, कणकण से देश के लिये चंदन जैसे स्वयंको घिसने के। भारत के प्रति अनन्य भक्ति, सेवा और त्याग तपोमय जीवन जीने के। सांवले रंग की इस तेजतर्रार बालिका का नामकरण हुआ तापी। महाराष्ट्र, म.प्र., गुजरात को संपन्न करनेवाली नदी का नाम उसे दिया गया। तापी ताप हरण करनेवाली, जनजीवन समृद्ध करनेवाली, प्यास बुझानेवाली, जीवन में शुचिता देनेवाली तापी। तापी बडी प्यारी थी। सबके मुँह में तापी का नाम था। और वह नाम, जीवन में उसे कौनसे गुणों की आराधना करना है यह दृढ करता जा रहा था।

तापी का शैशव तथा बाल्यकाल अपने पिता जी के घर केळशी में व्यतीत हुआ। नन्हीमुन्ही तापी दिनप्रतिदिन बडी हो रही थी। उसकी किलकारियों से घर गूंज उठता था। खेलते खेलते कोंकण की लाल मिट्टी से शरीर सन जाता था। शायद उसी माटी ने उसे दी अमर्याद सहनशीलता, क्षमा, शांति और अपरिमित श्रमशक्ति। आम, कटहल ने अपनी इस दुलारी को दी मिठास और नारियल, तांबूल ने दी सदा सदा के लिये ताजगी, हराभरापन।

पारिवारिक जीवन

तापी को एक बडी बहन थी - माई, दो भाई थे और दो छोटी बहनें थी - इंदु, सिंधु । माई तापी से बडी थी परंतु उसका स्वास्थ्य हमेशा ही नरमगरम चलता था। अतः तापी ही बडी बहन जैसी बन गयी। छोटे भाईबहनों को संभालती थी। माँ को घरेलु कामों में मदद करती थी। मानो माँ का वह आधार बन गयी।

तापी और कोंकण माटी का ऋणानुबंध अल्पकाल का ही रहा । तापी 6-7 वर्ष की हुई और गंगाधरपंत जी के मामा ने - लोकमान्य तिलक जी ने - उन्हें पुणे बुला लिया। तापी पुणेनिवासी हुई। अपनी अंतिम सांस भी उसने वहीं ली। पुणे में आने के बाद तापी विद्यालय में जाने लगी। घर में माँ पाकशास्त्र के पाठ पढाती थी, तो नाना उसे अपने साथ बाजार में ले जाते, हिसाब समझाते और रास्ते में सुंदर कहानियाँ बताते। मानों उस माध्यम से सद्गुणों की बालघुट्टी ही उसे पिलाते थे।

समय बीतता गया। तापी अभी 15 वर्ष की हुई। सातवी कक्षा तक पढ पायी। सुंदर नाक नक्शेवाली सांवली तापी - उत्तम स्वास्थ्य के कारण आकर्षक दिखती थी। शीघ्र ही विनायकराव जी आपटे के साथ उसका विवाह तय हुआ। उनके पिता जी गोपाळराव आपटे रजिस्ट्रार कचेरी में काम करते थे। प्लेग से उनका देहांत हुआ। तब विनायकराव जी की आयु मात्र तेरा वर्ष की थी। छोटी आयु में ही ट्यूशन कर उन्होंने माँ और अपनी इकलौती बहन को संभाला। बहन का विवाह कर दिया। वैसे आपटे परिवार था मूलतः पुणे जिले के खेड तालुका के चासकमान गाँव का। वहाँ घर था, थोडी खेती थी। बाईस वर्ष की आयु में आपटे जी का यह द्वितीय विवाह था। उनकी प्रथम पत्नी का प्रथम प्रसव में ही देहांत हुआ। छोटी बालिका को विनायकराव जी की झोली में डालकर वह चल बसी। छः माह के पश्चात् वह छोटी बालिका भी अपनी माँ से मिलने चली गयी। बहु, पोती की मृत्यु का दुख सहन करना कठिन होकर विनायकराव जी की माँ की भी मृत्यु हुई। विनायकराव जी का जीवन अंधकारमय हुआ।

पुणे जिले में अकाल आया और गाँव में निर्वाह होना कठिन होता देखकर वे पुणे आयें और तबसे पुणेवासी बन गये। वहीं उनकी कर्मभूमि, पुण्यभूमि, मोक्षभूमि बनी। पुणे में उनके मामा, मौसी तथा अन्य रिश्तेदार भी रहते थे। पुणे आने के बाद वे विद्यालय में पढाने लगे। शायद विनायकराव और तापी की जन्मगाँठ बांधने हेतु ही भगवान ने भिन्नभिन्न कारणों से उनको पुणे लाया था। तापी की माँ का मन तापी को विधुर को देने में हिचकिचा रहा था। पर उस समय विधुर के साथ विवाह, यह सर्वसाधारण बात थी। तापी के पिता जी ने विचार किया यह युवक होनहार है। विद्यालय में शिक्षक है, पैतीस रुपये वेतन है। मेरी बेटी सुख में रहेगी। मेरी नम्र, सुशील कन्या उनके जीवन में सुख के फूल बरसायेगी। उनका जीवन आलोकित करेगी। विवाह निश्चित हुआ और मार्गशीर्ष शुद्ध 11 गीताजयंती (सन् 1925) के शुभ अवसर पर तापी विद्वांस, सरस्वती विनायक आपटे बनी। गीताजयंती का पर्व भारतीय संस्कृति में बहुत मायने रखता है। श्रीकृष्ण कुशल सारथी माने जाते हैं। गीताजयंती के दिन ही अर्जुन के रथ की बागडोर उन्होंने अपने हाथ में ली थीं। उसी शुभ दिन तापी ने विनायक गोपाळराव आपटे जी के गृहस्थीरथ की

बागडोर अपने हाथ में ली और अतीव कुशलतापूर्वक उस रथ का सारथ्य किया।

तापी का विवाहोत्तर दूसरा नाम भी नदी का ही था। नदी का प्रवाह गतिमान होता है, वैसा ही ताई का जीवन रहा। निरंतर आगे बढनेवाला। अपने ध्येयविषय तक पहुँचने में ही जीवन की सार्थकता अनुभव करनेवाला। सरस्वती यह त्रिवेणी संगम की एक नदी। सरस्वती का प्रवाह गंगायमुना जी में मिल जाता है। बाद में वह स्वयं लुप्तप्राय हो जाती है। तापी का जीवन भी वैसा ही रहा। अपना जीवन विनायक राव जी के जीवन में समर्पित और संगठन का जीवन समिति को समर्पित।सरस्वती अब बहू बनी - उसकी स्वयं की सासू जी नही थी परंतु विनायक राव जी रहते थे अपने मामा के पडोस के 'गुणे' वाडे में। अतः मामाससुर, मामेरी सास थी। उस वाडे में अनेक परिवार थे परंतु मानों सबका घर एक ही था। उनकी स्वयंकी गृहस्थी में चचेरी बुआ सासू जी उनके पास रहती थी। सरस्वती उस बाडे की बहू थी। साथ साथ भाभी, चाची कई रिश्ते जुड गये। अपनी हसमुखता से, मिलनसार, नम्र स्वभाव से उसने सबका मन जीत लिया। भोर में उठते ही पल्लू बांधकर वह काम में लग जाती तो देर रात तक वही क्रम चलता था। उनका काम भी था सुव्यवस्थित।

विनायक राव जी का दिनक्रम भी सुनिश्चित था। वे भोर में पांच बजे उठते थे। व्यायाम, स्नान, स्वयं के कपडे धोना, भगवान की पूजा यह सब साडेसात बजे तक पूर्ण कर ट्युशन्स लेने के लिये जाते थे। संस्कृत, गणित तथा अंग्रेजी ये उनके विषय थे। साडे नौ बजे घर आने के पश्चात् वाचन, लेखन। भोजन होने के पश्चात् विद्यालय जाते थे। शिवाजी महाराज के दुर्गों में भ्रमण उन्हें अतीव प्रिय था। विनायकराव जी का स्वभाव मिलनसार था। अतः घर में मित्रों का तांता लगा रहता। वे सब देशकी परिस्थिति पर विचार करते थे। घरेलू काम करते करते वह सभी चर्चा सुनती थी। कुछ चीजें उसी समय समझ में आती तो कुछ बाद में सोचने पर समझ में आती थी। नही तो विनायकराव जी से पूछती थी, समझ लेती थी।

वसंत की बहार

धीरे धीरे सरस्वती अपने घर में रम गयी। दोपहर में समय निकालकर माँ के घर जाकर आती थी। माँ का स्वास्थ्य हमेशा ही नरमगरम चलता था।

विवाह के पूर्व वही चूल्हाचौका सब संभालती थी। उसका विवाह हुआ तो नाना ने कहा था "आज हमारा सिपाही चला गया।" अतः पीहर में जाकर वहाँका भी सब सुव्यवस्थित कर आती थी। विद्यालय से आने के बाद इंदु - सिंधु, ताई आयेगी (वे सरस्वती को ताई कहती थी। मराठी में ताई अर्थात् बडी बहन) वह खिलायेगी, पिलायेगी करके उसकी राह देखते हुएं सीढियों पर बैठी रहती।

शीघ्र ही सरस्वती के जीवन को पूर्णत्व प्राप्त हुआ। जीवन में मानों वसंत की बहार आयी। बालक का नामकरण भी हुआ - वसंत। कुछ अंतराल में कुमुद और विजया ये दो कलियाँ उनके बगीचे में खिलीं और एक कली छोटी आयु में ही मुरझा गयी।

सरस्वती के साथ लक्ष्मी भी

विनायक राव जी की रुचि पढाई में थी। अतः उन्होंने रात्रि विद्यालय में जाना प्रारंभ किया और एल. एल. बी किया। उन्नीससौ तीस में वे उच्च न्यायालय के वकील बनें। मामी खुश हुई। कोर्ट में जाने के लिये 'सनद' लेने के लिये आवश्यकता थी पैसे की। बिना बतायें ही सरस्वती उनकी चिंता समझ गयी। यही उसकी विशेषता थी। साथ के व्यक्ति के मनोभाव वह अचूक जानती थी। क्या करूँ मैं? कैसे पूर्ण होगी इनकी आवश्यकता? वह मन ही मन सोच रही थी। आखरी उसने रास्ता निकाला। अपने हाथ के सोने के कंगन डिब्बी में रखकर, वह डिब्बी उसने विनायकराव जी के हाथ में रखी। 'यह क्या है?' 'धनलक्ष्मी' वे चूडियाँ देखकर विनायक जी असमंजस में पडे। यह तो स्त्रीधन है उसे कैसे बेचना? पर बाद में फिर से चूडियाँ बनाकर देंगे ऐसा निर्णय कर उन्होंने चूडियाँ बेचीं। सनद लेकर कोर्ट में जाना शुरु किया। धीरे धीरे उनकी यशोपताका फहरती गयी। सरस्वती के साथ साथ लक्ष्मी भी घर में निवास करने लगी। घर की शुद्ध सात्विकता देखकर वहाँ स्थिर होने लगी। घी परोसने का चांदी का बरतन, नथ रखने के लिये चांदी की डिब्बी ऐसी तरह तरह की वस्तुएँ घर को समृद्ध करती रही।

व्यष्टि समष्टि संगम सुंदर

सन् 1936 यह वर्ष आपटे परिवार के लिये अतीव महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस परिवार के जीवन को नई दिशा प्राप्त हुई। मानों अमृतकलश उनके हाथ में लग गया। एक दिन विनायकराव जी कोर्ट से लौटते समय कुछ कारणवश टिळक स्मारक गये। वहीं खुले मैदान पर कुछ युवक खेल रहे थे। पुणे शहर की वह इकलौती शाखा थी। मंत्रमुगध जैसे अपलक नेत्रों से वे देखते रहे। खेल, पश्चात् गीत, प्रार्थना, प्रार्थना की पद्धति उनके मन को छू गयी।

संघमय बना जीवन

शाखा के शिक्षक से मिलकर उन्होंने पूरी जानकारी प्राप्त की। वह एक क्रांतिकारक क्षण था। घर गये तो भी प्रार्थना के स्वर उनका पीछा कर रहे थे। वे शाखा की ओर खींचते चले गये। उनके जीवन को संघ का पारसस्पर्श हुआ और जीवन सुवर्ण जैसे तेजस्वी बन गया। प. पू. डॉक्टर जी द्वारा 1925 में प्रारंभ किये गये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वे स्वयंसेवक बने। उसी क्षण शायद जो जीवन में चिरप्रतीक्षित था वह रास्ता मिल गया और एक अनोखा संघसमर्पित जीवन प्रारंभ हुआ। अपना स्वयंका अस्तित्व मिट गया। बूंद समुद्र में समा गया। विनायक जी संघमय बने और सरस्वती विनायकमय बनी थी वह भी संघमय बनी। स्त्री होते हुएं भी मन से स्वयंसेवक बन गयी। प्रत्यक्ष मैदान में न जाते हुएं घर में रहकर ही उस विचार के साथ, भाव के साथ तादात्म्य प्राप्त कर गयी।

प. पू. डॉक्टर जी ने विनायकराव जी को परखते हुए उन्हें पुणे के संघचालक का दायित्व दिया। विनायकराव जी को लोग 'दादा' संबोधित करने लगे। उनका शरीर, उनका मन, उनके प्राण संघमय हो गयें। संघध्यास से प्रेरित दादा कार्यवृद्धि के लिये निरंतर प्रयास करने लगे। घरघर जाने लगे। उनकी लगन, उनका बोलने का ढंग सामनेवाले व्यक्ति को छू जाता। उनका मित्रपरिवार, उनके विद्यार्थी सभीसे वे संघ के बारे में बात करते। युवा वर्ग से संपर्क करते।

विश्व घर में समाने लगा

धीरे धीरे स्वयंसेवकों की संख्या बढने लगी। विनायकराव जी का दिनक्रम बदल गया। अब घर में उनके पैर टिकते ही नही थे। बैठकों के कारण देर रात घर आते थे। संपर्क हेतु सुबह जल्दी ही निकल जाते। कोई बीमार है उसे मिलने जाना है, कोई युवक दो-चार दिनसे दिखा नही उसकी पूछताछ करनी है। उत्सव की सूचना देनी है। अब घर की भाषा ही बदल गयी। बारबार शिविर, वर्ग, बौद्धिक, बैठक आदि शब्द ही सुनने मिलते थे। विनायकराव घर से बाहर रहने लगे और बाहर का विश्व घर के अंदर समाने लगा। स्वयंसेवकों की, शाखाओं की संख्या बढने लगी। घर में मिलने के लिये आनेवालों का तांता लगा रहता। उनके आतिथ्य में अब सरस्वती को क्षणभर की फुरसत नही मिलती थी।

यह कार्य महिलाओं के लिये भी हो

ताई के हाथ काम करते वैसा उनका मन भी चिंतन करता रहता। बैठकों से अनेक विषय सुनती रहती। अनुशासनबद्ध पथसंचलन, तरह तरह के प्रात्यक्षिक, वह देखती थी। अब उन्हें लगा महिलाओं के लिये भी यह कार्य होना चाहिये। शिशुसंगोपन यह तो स्त्री का दायित्व है ही। शिशु के रूप में वह अपनी संस्कृति को ही चिरंतन बनाती है। मुझे मेरे माँ-पिता ने अच्छे संस्कारों का पाथेय दिया। हर महिला को ऐसा पाथेय मिले - वह स्वाभिमानी बने। देश की परिस्थिति से अवगत रहे। आज मेरे घर में देश की पराधीनता की, देश के अतीत के गौरव की चर्चाएं होती रहती हैं। मुझे जानकारी है वैसी ही सभीको होना चाहिये। स्त्रियों में इस तरह का काम बहुत आवश्यक है। एक दिन चिंतनशील अंतर्मन में प्रश्न उठा, होना चाहिये, कहने से थोडे ही होगा। किसी को करना होगा। कुछ दिन ऐसे ही गये। मन इन्हीं विचारों में उलझा हुआ था। कौन करेगा? मन ने कहा, "तू ही क्यों नही करती?"

'मैं-मैं? मैं कैसे करूँ? निभेगा मुझसे?' परंतु अनिश्चय की स्थिति में उनके अंदर की लगन उन्हें उकसाती रहती। आखिर सरस्वती ने दादा से बात की -

'संघ जैसा काम हम महिलाओं के लिये भी आवश्यक है।' 'हम' शब्द से दादा चकित हुएं।

'हाँ, आवश्यकता तो है, विचार भी अच्छा है' - दादा

'फिर अपने घर में प्रारंभ करें?' - सरस्वती
'अपने घर का दायित्व संभालते हुएं कर पाओगी तो करो।'- दादा

हम महिलायें देशसेवा के लिये अग्रेसर होवें

ताई का मन प्रफुल्लित हो उठा। अब वह अपनी कुछ परिचित बहनों से मिली। शनिवार के दिन उन्हें अपने घर में आमंत्रित किया। अपनी छोटी बहन सिंधु, भांजी गंगू, सिंधु केतकर, मधुमती तांबे, कलावती देवकुळे, सीताबाई करंदीकर, मंदा लोंढे, छत्रे भगिनी, कमल लिमये, बकुळ नातु ऐसी पच्चीस बहनें आयी। सरस्वती ने कहा आज हल्दीकुमकुम् या कोई पर्व या त्यौहार नही है, फिर भी हम बहनें एकत्रित हुई हैं, कुछ विचार करने के लिये। आज हमारा देश पराधीन है। कब स्वाधीन होगा हमारा देश? अपने देश की स्थिति हम रोज पढ ही रही हैं। लगता है, हम भी अपने समाज के लिये, देश के लिये कुछ करें। संघ के माध्यम से पुरुषों में तो यह चेतना जागृत हो रही है। अपने देश के लिये वे कैसे कटिबद्ध हो रहे हैं, इसका मैं अनुभव ले रही हूँ। हम बहनें इस विचार से कब तक दूर रहेंगीं? क्या वह उचित होगा? आज अचानक मुझे स्मरण हो रहा है, मेरे दादा जी, लो. तिलक जी का। मंडाले से मुक्त होकर वे आये तब मैं गायकवाड वाडा में थी। उनका भव्य दिव्य स्वागत हुआ। भाषण भी हुआ। उसमें से एक ही वाक्य मेरे मन में गढा है। उन्होंने कहा था, 'हमें स्वयंसेवक चाहिये। स्वयंसेवक अपनी इच्छा से अंतःप्रेरणा से, स्वयंस्फूर्ति से, निरपेक्ष भाव से सेवा करनेवाला स्वयंसेवक।' क्या हम स्वयंसेवक नही बन पायेंगीं? *सेवा तो हम महिलाओं का स्थायीभाव है। सासू जी, ससुर जी, पति की सेवा तो हम करती ही हैं। वहीं भाव लेकर हम समाज की, अपने देश की सेवा के लिये आगे बढे। अग्रेसर होवें"* सभीको यह विचार पसंद आया। सप्ताह में एक दिन एकत्रित होने का निश्चय हुआ। स्थान अर्थात् आपटे का घर। सब नियमित रूप से आने लगीं। इंदु, सिंधु, सरस्वती जी को ताई कहती थी अतः सभी उन्हें ताई कहने लगे। (ताई का अर्थ मराठी में बडी बहन ऐसा होता है।ताई सबकी बडी बहन बन गयी।)

हे मातृभूमि प्रिय पावन पुण्य भूमि

प्रत्येक एकत्रीकरण में अलग अलग विषयों पर चर्चा होती थी। बकुळ छोटी थी। आती तो बडे उत्साह से। परंतु केवल चर्चा में उसका मन लगता नही

था। वह थी बहुत होनहार। दंड चलाती, जंबिया खेलती, थेरती भी थी।मुळामुठा को आयी बाढ में छलांग लगायी थी उसने। ताई ने सोचा और छोटी बालिकाओं को एकत्रित किया ।विंचूरकर के वाडे में बकुळ अब उन्हें दंड आदि सिखाने लगी। ताई पूरा समय वहाँ उपस्थित रहती थी। प. पू. डॉक्टर जी का पुणे प्रवास हुआ। वे घर में आये तब ताई ने उनसे बात की। अपने छोटे से कार्य के बारे में बताया। मार्गदर्शन हेतु प्रार्थना की। डॉक्टर जी ने बताया - "ताई आपको मार्गदर्शन करेंगी वर्धा की लक्ष्मीबाई केळकर। 1936 में विजयादशमी के दिन वहाँ राष्ट्र सेविका समिति का शुभारंभ हुआ है। वर्धा जाने पर मैं उन्हें आपके बारे में बताऊंगा।" राष्ट्र सेविका समिति नाम सुनते ही ताई के मन में विद्युत् लहर दौडी। मधुर स्वर झंकृत हो उठें। कैसी पद्धति होगी? कितनी सेविकायें आती होंगी? ऐसे अनेक प्रश्न मन में संजोती रहती।

लक्ष्मी सरस्वती का एकात्मभाव

एक दिन ताई जी बाहर जाने के लिये तयार हुई। दरवाजे की कुंडी लगायी। एक हाथ में ताला चाबी थी। और प्रश्न सुनायी दिया "सरस्वतीबाई आपटे यहीं रहती है ?"

'हाँ, यहीं रहती है' ऐसा कहते हुएं ताई जी ने नीचे झांककर देखा एक मध्यम आयु की गौरवर्णा महिला छोटे बालक के साथ खडी थी।

" आईये, ऊपर" कहते ही वह ऊपर आयी।

"सरस्वतीबाई आप ही है?"- उस महिला ने पूछा

"जी, हाँ -" ताई ने कुंडी खोलते हुए कहा। " आप बाहर जाने के लिये निकली थी?" उस स्त्री ने संकोच के साथ पूछा।

'जी नही, आईये, बैठिये' - ताई ने अंदर जाकर बर्फी और पानी लाया।

'मैं लक्ष्मी केळकर, वर्धा से ....' सुनते ही ताई आश्चर्यचकित हुई। अपलक वह देखते ही रह गयी।

'यह डॉक्टर जी का पत्र ' - वं. मौसी जी

"हाँ मुझे बताया है डॉक्टर जी ने आपके बारे में'

दोनों की बाथे प्रारंभ हुई जैसे पुराना परिचय है। *लक्ष्मी और सरस्वती का मनोहारी मिलन हो गया। दो महिलायें एकत्रित आयी थीं, अपना देश, अपना समाज, अपनी संस्कृति, अपने धर्म के बारे में सोचने हेतु । अपने देश*

के प्रति अपना भी कुछ कर्तव्य निभाने के लिये। अपने समाजऋण से उनृण होने के लिये। ऐसा कहते हैं लक्ष्मी और सरस्वती की आपस में बनती नही है। पर यहाँ तो दोनोंने एक होकर राष्ट्र का आंगन सजाया। अनेक जीवन आलोकित कियें। अनेक दीप जलायें। अपना कार्य ताई ने बिनाशर्त वर्धा की 'वरदा' के प्रवाह में प्रवाहित कर दिया।

स - समर्पण का

सरस्वती का 'स' समर्पण का था। 'हम दोनों मिलकर एक सशक्त राष्ट्र समर्पित स्त्रीसंगठन खडा करेंगें। विदर्भ की वरदा में पुणे का मुळामुठा का तथा भंडारा, अकोला, कराड ऐसे अनेक प्रवाह मिलें। उसकी शक्ति बढ गयी। उसकी गति बढ गयी। किसी का महिला मंडल था किसी का और कुछ परंतु अब सभी राष्ट्र सेविका समिति के एक साये के नीचे आ गये । राष्ट्र कार्य के लिये अनेक गगरे सागर में समा गयीं। घटाकाश महदाकाश में लीन हो गया। लक्ष्मीबाई केलकर अर्थात् वं.मौसी जी समिति की प्रमुख संचालिका थी। भगवा ध्वज उनका गुरु था। वे रोज एकत्रित होकर प्रार्थना करती थीं। 'हे मातृभूमि प्रिय पावन पुण्यभूमि।' भारत अब उनके लिये केवल देश नही था। न वह केवल एक जमीन का टुकडा था। वह उनकी माँ थी। जन्मभूमि थी, मातृभूमि थी। थी तो पहले से ही परंतु आज इस भाव की उत्प्रेरणा उनके मन में थी। उनके मन में चाह थी स्वसरंक्षणक्षम अर्थात् स्व में अंतर्निहित स्वदेश, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वराष्ट्र के रक्षण की। गोपियों को जैसा कृष्ण का ध्यास था वैसा ही उनको भी ध्यास था राष्ट्र कार्य का, शाखा का। चार दीवारें छोडकर महिलाओं का बाहर निकलना तब समाजमान्य नही था। शाखा के मैदान पर लाठीकाठी घूमने लगी। अन्यान्य विषयों पर चर्चायें होने लगीं। बौद्धिकों की योजना होने लगी।

संगठना के एक मार्ग से होगा देशोद्धार

गरजकर बोलो जयजयकार, गरजकर बोलो जयजयकार

जैसे गीत कंठस्थ होने लगे। अधिकारी प्रशिक्षणहेतु तीस दिन का वर्ग होता था। उसके लिये महिला घर से निकलकर दूर वर्गस्थान पर जाकर रहने लगी। समिति की शाखा अब केवल ताई के घर तक सीमित नही रही। अब

केवल एकत्रित आना और चर्चा करना इतना ही नहीं था तो उसकी एक चौखट निश्चित थी। शाखा में लगनेवाला ध्वज मन को प्रेरणा देता था। गौरव के भाव हिलोरे लेते थे।

समिति का कार्य अब पुणे से भी आगे विस्तारित होने लगा। सांगली, सातारा,कराड, आदि। दादा संघकार्य के लिये जब भी सातारा, कराड में जाते तो वहाँ की बहनों से बात होती थी। घर में वापस आने पर ताई को बताते थे। ताई आज इंदिराबाई दिवेकर से भेंट हुई ...या उनका कुछ संदेश भी बताते थे। इत्यादि। वं. मौसी जी से भी पत्रव्यवहार चलता था। जब भी उनसे भेट होती मन उत्साह से लबालब भर जाता। मन के भाव बदलते थे। जो कुछ है वह सबका यह संस्कार वं. मौसीजी के सह वासमें दृढ होता गया। ताई जी कहती थी - 'यह मेरा, यह तेरा या अन्य गाँव का ऐसी कल्पना कभी भी मौसी जी के मन को स्पर्श नही करती थी। जो है वह हम सबका अपना यही उनका स्थायीभाव था। वह मैंने भी अपना लिया। व्यवहार में लाया।'

व्यक्ति व्यक्ति को वहाँ हुएँ है शिवशक्ति के दर्शन

ताई और दादा शिवशक्ति का प्रत्यक्ष स्वरूप। उनके ही जैसा समाजकार्य में लीन परिवार। घर की आर्थिक स्थिति साधारण ही थी। परंतु समृद्धि के परिमाणों का अभाव ताई के समृद्ध सहवास ने मिटा दिया। उनके वाडे में तलमंजिल पर श्रीराम मंदिर में एक कमरे में संघकार्यालय था। राम मंदिर में कार्यालय होने के कारण उसे कहते थे राम कार्यालय। सरस्वती को किसीने बताया नही था, फिर भी उसकी सफाई करना, पानी भरना वे अपने आप करने लगी। यहीं उसके स्वभाव की विशेषता थी। कार्यालय में क्या करना चाहिये वह स्वयं समझकर काम कर लेती थी। कभी शिविर में जाने के लिये बाल स्वयंसेवक आथे, उन्हें बिस्तर बांधना नही आता। ताई बिस्तर बांध देती। कोई विद्यार्थी विस्तारक रहने लगा। कुछ लोग संपर्क हेतु उस बाजू आते वहीं से महाविद्यालय जाना है तो आपटे जी के घर भोजन करके विद्यालय चलें जाथे, या अपने काम से चलें जाथे। सातारा, सांगली, मुंबई सभी ओर से वहाँ स्वयंसेवक आथे। सरस्वती उनकी देखभाल करती। किसीको सिरदर्द है तो बाम लगाना। किसी को सेंक देना, खांसी जुकाम है तो कषाय बनाके देना, खीर बनाकर देना - स्वयंसेवकों की सभी तरह की चिंता सरस्वती करती

थी। किसीका चेहरा देखकर भांप लेती थी की उसका भोजन नही हुआ है और चलो मेरे साथ भोजन करने ऐसा कहकर भोजन खिलाती। दीपावली के दिन कार्यालय में रहनेवालों को उसने अभ्यंगस्नान भी कराया है। घर से दूर है यह भाव वहाँ रहनेवाले किसी कार्यकर्ता के मन में नही आया और वह न आये इसलिये ताई दक्ष थी। अब वह केवल वसंत, कुमुद, विजया की नही अपितु सभीकी माँ बनी। उनका ममत्व अपने आप विस्तारित होने लगा। आनेवाले हर स्वयंसेवक को उनमें अपनी माँ का दर्शन होता था। उन्हें दादा का भय लगता था परंतु अपनी अडचन, अपने दुःख वे सहजता से ताई के साथ बाँट लेथे। घर की छोटी बडी अडचनें निःसंकोच बताने का, अपने मन की बाते खुलकर बताने का वह एक निश्चित विश्वासनीय स्थान था। स्वयंसेवकों के लिये ताई जी कामधेनु जैसी ही सिद्ध हुई। 751 शनिपार अब स्वयंसेवकों का आधारस्थान, मातृधाम बन गया। यह दंपती सबके विश्वासपात्र बने थे।

विनायक राव जी एवं ताई जी का श्रमिकों के प्रति विशेष स्नेह था। इसी कारण कसबा पेठ पूर्व भाग में श्रमिक वस्ति के सैंकडो घरों से उनका नित्य संपर्क था। पूरणसिंग बिडी कामगार थे। ताई जी सुखदुख बांटने उनके घर जाती। चर्च के निकट टिकाराम राऊत यह राजपूत अपाहिज परिवार रहता था। उनका निवास छोटासा था, 12 बाय 15 का उसी में रहना, बकरी बांधना आदि। दोनों पतिपत्नी उनके घर गये, उनकी रुखीसुखी रोटी एवं चटनी आनंद से खायी। वही उनका आनंद था।

अहम् से वयम्

ताई के निरपेक्ष प्रेम के कारण घर की दीवारें विस्तारित हुईं। ताई जी का शब्दप्रयोग 'मेरा घर' ऐसा कभी नही था। अपितु वह नित्य 'अपना घर' ऐसा ही शब्दप्रयोग करती थी। 'अहम् से वयम्' तक यह प्रवास कठिन था परंतु वह उन्होंने सहजता से किया। आपटे इस नाम की दीवार ढह गयी। संघ विस्तारित होता गया, वैसा यह घर भी। ताई साक्षात् अन्नपूर्णा थी। गृहस्थी धर्म का अर्थ उन्हें समझा था। ताई जी हमेशा पूछती थी "कब आयेगें अपने घर?" यह घर मेरा नही आपका अपना है यह भाव था। दादा भी ताई जैसी 'भार्या मनोहारिणी' मिलनेके कारण स्वयं को भाग्यशाली मानते थे। नमक या शक्कर स्वयं का अस्तित्व मिटाकर पानी में घुल जाते है वैसे ही ताई जी आपटे परिवार में, संघ के वातावरण में घुलमिल गयी थी।

दादा का दायित्व बढता गया वैसे वैसे पुणे तथा बाहर से भी स्वयंसेवक आने लगे। उनके घरमालिक कहते थे 'आपटे के घर इतने लोग आते हैं कि मेरे घर की सीढियाँ उस कारण घिस गयी।' तो कोई कहता रोज आने के कारण सीढी की कील भी मेरी चिरपरिचित मित्र बन गयी है। अ. भा. वनवासी कल्याणाश्रम के संगठन मंत्री मा. रामभाऊ गोडबोले जी उस घर को 'संतनिवास' कहते थे। 1937 से लेकर 1967 में विनायकराव का स्वर्गवास होते तक ही नही बाद में भी अनेक लोग इस घर में आते रहे। वेदमूर्ति पं. सातवळेकर जी, श्यामा प्रासाद मुखर्जी, दीनदयाल जी उपाध्याय, बाळशास्त्री हरदास आदि। बाळशास्त्री की व्याख्यानमाला दादा ने पुणे में आयोजित की तब वह 751 में ही उतरें और पश्चात् वहीं उनका क्रम बन गया। सांगली के काका लिमये, प. पू. डॉक्टर जी के निकट स्नेही वर्धा के आप्पा जी जोशी और उनके दामाद आदि सब वहाँ अवश्य आते थे। एक बार मा. आप्पा जी ने ही घर में प्रवेश करते करते पूछा 'क्या चल रहा है सरस्वती सदन में ?' तबसे घर का नाम 'सरस्वती सदन' ही हो गया। काशीनाथपंत लिमये जी महाराष्ट्र प्रांत के संघचालक थे, उनका निवास दो तीन माह पुणे में रहता था। तब वे इसी घर में रहते थे। उन्हें भी यह घर कभी पराया नही लगा और आपटे परिवार के सब लोग उन्हें अपने घर का ज्येष्ठ व्यक्ति मानते थे। एकनाथ जी रानडे, रामभाऊ गोडबोले, जगन्नाथराव जोशी, यादवराव जोशी, आदि प्रचारक इस घर से अपना पाथेय लेकर ही कार्यक्षेत्र में जाते थे। बापुराव जोगळेकर जी का ताई जी के घर भोजन कर के ही कार्यक्षेत्र में जाना यह क्रम 50 वर्ष तक अबाधित रहा। आ.सोनोपंत दांडेकर, विद्यानिधि सिद्धेश्वरशास्त्री चित्राव, पु. ग.सहस्रबुद्धे, मामा दाते, बाबाराव सावरकर, तात्याराव सावरकर, आचार्य अत्रे, गो. नी. दांडेकर, सुधीर फडके आदि आदि। वैसे ही उनके आशिर्वाद के लिये नित्य आनेवाले प्रचारक अर्थात् श्री.रामभाऊ म्हाळगी, डॉ.आप्पासाहेब पेंडसे, श्री.अच्युतराव कोल्हटकर, श्री. केशवराव दीक्षित, श्री.अनंतराव काळे, श्री.नाना पालकर इत्यादि। ताई जी का रसोई घर याने शिवशाहिर बाबासाहेब पुरंदरे जी का रुठने का, हठ करने का स्थान था। वे ताई को अपनी माँ समझते थे ।स्वयं के बच्चों पर प्रेम करना यह तो प्राणीयों का भी स्वभाव है। परंतु सन्निध आये व्यक्ति को माँ जैसा स्नेह देना ताई जी का स्वभावधर्म था।

ताई जी का स्वास्थ्य उत्तम होने के कारण वह यह सब आवभगत निभाती। पडोस में रहनेवाले मामाससुर, मौसेरीसास, के काम करना, मंदिर होने के कारण उत्सव की तयारी करना, माँ के घर में जाकर माँ की सहायता करना, आदि काम वह अष्टौप्रहार करती रहती। किसीके साथ बात करते भी हाथ कुछ ना कुछ काम करते रहथे।

कभी दादा अचानक संदेशा भेजते 'आज भोजन के लिये छः लोग आनेवाले हैं'। अकेली होती हुएं भी ताई जी रसोई बनाती। थाली, कटोरी सब पोछकर एकत्रित करके रखती। साफसुथरापन, सुनियोजित, सुव्यवस्थित काम यह उनका स्वभाव था। भोजन के लिये कौन आनेवाले है यह जानकर उनकी पसंद ध्यान में रखकर उनकी रूचि के अनुसार वह भोजन बनाती। कभीकभी बतायी हुई संख्या से अधिक लोग आथे। उन्हें लगता पहले बता देते तो अधिक रसोई बनाती - फिर समय पर भाकरी, दूसरी सब्जी या कुछ ना कुछ बनता रहता। उन्होंने कभी नाराजी या गुस्सा प्रकट नही किया।

अतिथि हँसते हुए घर से विदा हो

परंतु एक बार उनकी सहनशीलता की सीमा टूट गयी। उनके पिता नाना सब्जी बजार जाते समय ताई के पास नित्यक्रम के अनुसार आये।

'ताई क्या लाना है? मिरची, नींबू, लाना है क्या अचार के लिये?' ताई का जवाब नही।

नाना ने बडे प्रेम से पूछा - "बुखार है क्या बेटी? सिरदर्द?

'नहीं, नाना, कुछ भी नही।'

'फिर चूप क्यों हो?' - नाना

'नाना मुझसे यह निभेगा या नही? लगातार लोग आते रहते है? कल भी पूरा काम निपटकर मैं सोयी और अचानक बाहर गांव के कार्यकर्ता आये। भोजन करना है न ?' मैं ने पूछा। आनाकानी करने लगे। फिर मैं ने पूछा - घर से कब निकलें? चार बजे। मैं जान गयी भोजन नही हुआ है। फिर भोजन बनाया। खिलाया। 'परंतु मैं भी मनुष्य हूँ । थक जाती हूँ। ऊब गया मेरा मन इन सब बातों से।' - ताई ने कहा उस समय तो चूल्हें पर भोजन बनता था। गॅस का जन्म नही हुआ था।

"ताई, भोजन खिलाया न तुमने ? बात तो हो गयी। अब नाराजगी किस लिये? अतिथि देवो भव यह तो अपनी संस्कृति है। छुटपन में मैंने तुम्हें कहानी बतायी थी श्रियाळचांगुणा की। शिबिराजा का स्मरण करो। देखो बिटिया, गृहस्थी है तो अतिथि आयेगें ही। आते समय दुखी हो सकते है परंतु जाते समय हसते हुए ही जाना चाहिये। वे तुम्हारी झोली बिना मांगे ही आशिषों से भर देंगें। तुम्हारे आतिथ्य की प्रशंसा अपने स्थान में जाकर करेंगे। ध्यान रखो, अतिथि हंसते हुए जायें रोते हुए नही।"

नाना से बात करने से ताई का मन हलका हो गया। अपनी आँखें पोछते हुए बताया, 'नाना, कितना अच्छा बताया आपने। मैंने "हंसते हुएं अतिथि को घर से भेजने का व्रत लिया है - आप निश्चिंत रहिये।'

द्रौपदी की थाली

एक बार यह व्रत लेने के पश्चात् उनके घर से कोई रिक्त हाथ से नही गया। अद्रक की बरफी, मिश्री कुछ न् कुछ हाथ पर अवश्य रखती। किसीको कुछ आवश्यक है तो घर से देती। सीमित आय में यह करना कठिन था - क्योंकि दादा का ध्यान वकालत से अधिक संघकार्य में ही था। पर उन्होंने यह व्रत आनंद से प्राणपण से निभाया। भंडारा के एक स्वयंसेवक के पुत्र को परीक्षा के लिये पुणे आना था। संबधित संघ अधिकारी का पत्र लेकर वे पुणे पहुंचे। उनकी रहने की व्यवस्था ताई जी ने नीचे रामकार्यालय में की।परंतु भोजन वे उपर से ही भेजती थी। दो दिन पश्चात् संकोच के कारण उन्होंने ताई जी को बताया कि उस दिन वे सिंहगड आदि स्थान देखने के लिये जायेंगे।अतः भोजन की व्यवस्था नही करना है। ताई जी ने उनको पूछा क्या आप ये स्थान जानते है? उनका चेहरा देखकर ही ताई जी समझ गयी कि उनको पता नहीं है। उनके साथ एक स्वयंसेवक और तीनों का भोजन दिया।उन स्वयंसेवकों की इच्छा थी उस दिन ताई जी का भोजन का भार वे हलका करें। परंतु ताई जी ने भोजन देकर अचंभित कर दिया।

ताई जी साक्षात् द्रौपदी की थाली थी और कोई न् कोई कृष्ण रूप बनकर अपनी बहन की लाज बचाते थे। तळेगाव के बापूराव धान आया की घर में एक मन चाँवल डालकर चले जाते। बाबासाहेब सरदेशपांडे प्रतिमाह दो किलो शक्कर रखकर चले जाते। कब रखकर जाते किसी को पता भी नही चलता। कभी किसी बात की कमी नही रही।

सन् 1940 में प. पू. डॉक्टर जी का देहावसान हुआ। प. पू. गुरुजी सरसंघचालक बनें। उनके भी दादा एवं ताई के साथ उतने ही स्नेह के संबंध रहे।

पांच रुपये भी महंगे हो गयें

1942 में 'चले जाव' की घोषणा से आसमंत निनादित हो रहा था। सरकारी नोकरी, वकालत या व्यवसाय आदि छोडनेका अनेक लोगोंने निर्णय लिया। उभरी हुई उस लहर ने अनेकोंको अपनी ओर खींच लिया। एक दिन कोर्ट का समय हो गया यह सोचकर भोजन की थाली लगाकर उनकी राह देखनेवाली ताई को विनायकराव ने बताया की उन्हें अब से भोजन की जल्दी नही रहेगी।

क्यों?- असमंजस से ताई ने पूछा

'मैंने वकालत छोड दी - संघ कार्य के लिये।' शांति से उन्होंने कहा ।

'ठीक है', ताई जी ने कहा।

परंतु ऊपरसे शांत पृथ्वी के गर्भ में ज्वालामुखी रहता ही है। आज ताई जी के अंतःकरण में भी ऐसा ही लाव्हा उबल रहा था। बच्चों की शिक्षा, निरंतर आनेवाले अतिथि, सदा चलनेवाला यह अन्नसत्र इसकी व्यवस्था कैसी होगी? खेती के भरोसे यह सब निभाना कठिन था। परंतु सरस्वती का स सेवाव्रत का था, सहनशीलता का था। दादा ने उनपर दोहरी जिम्मेदारी डाली थी, वह उन्होंने बच्चों को साथ लेकर निभायी। इस कार्य में न उन्होंने स्वयंको अपयश आने दिया न दादा को। घर की तनावग्रस्त स्थिति या मन का बोझ ताई ने कभी बाहर दिखाया नही। परंतु अपने जीवन के अंतिम दिनों में बातों बातों में उन्होंने अपने पुत्र से सहजता से कहा- 'वसंत, एक समय पांच रुपये भी हमारे लिये बहुत महंगे थे, नही?' गरीबी तो अनेकोंके भाग्य में होती है परंतु ताई जी ने उस गरीबी को भी अमीरी में जिया मनोबल के आधार पर। दादाने अपनी वकालत छोडने के बाद आगे चलकर मुद्रण का कार्य शुरु किया। आज भी 'हिंदुस्थान मुद्रणालय' इस नाम से वह प्रतिष्ठापूर्वक सुप्रतिष्ठित है। ताई जी का पोता उमेश आपटे उसका कार्यभार संभाल रहा है। कभी कभी आवश्यकतावश ताई भी पुस्तकें गिनने के, या बाईंडिंग जैसे कामों में हाथ बटाती थी।

आप प्रचारिका बनने का न सोचें

ताई जी रोज प्रचारकों का जीवन देखती थी। उनका मन भी बहुत काम करना चाहता था। परंतु घर-गृहस्थी की डोर उन्हें खींचकर ले आती थी। संपर्क, प्रवास इसपर बहुत ही मर्यादित समय दे पाती थी। एक दिन घर में रहनेवाले प्रचारक बाळूकाका वझे जी को उन्होंने सहजता से कहा 'मुझे लगता है प्रचारिका बनकर बाहर निकलूँ, तो कितना अच्छा होगा।'

'नहीं ताई, आपने ऐसा नही सोचना चाहिये।' - बाळूकाका वझे

'क्यों नही? क्या मैं यह काम नही कर पाऊँगी?' - ताई जी

'आप अवश्य कर पाओंगी। परंतु फिर हमें यह अपनत्व भाव कहाँ और कैसा मिलेगा?' - बाळूकाका वझे

यह बात भी सत्य ही थी। मन की निर्मलता, उदारता पूर्वसुकृत का ही फल होती है। सामान्य स्वयंसेवक से लेकर द्वितीय सरसंघचालक प. पू. गुरुजी तक सभीको यह अपना स्वयंका घर प्रतीत होता था। एक दिन ताई दादा घर में नही थे। प. पू. गुरुजी घर गये और उन्होंने चाय बनायी। कहा 'मैं स्वयं देख रहा था अपने घर में चाय बना सकता हूं या नही।'

समिति का कार्य भी बढता जा रहा था। स्वाधीनता पूर्व समय में सबके मन में एक लगन थी। देश के लिये कुछ करने की जिद थी। एक दिन सेविकाओं की मानसिकता देखने हेतु, आज्ञा के अनुसार तुरंत कृति करनेकी कितनी थेयारी है यह भांपने हेतु प्रातः छः बजे सबको सूचना पहुंचायी गयी कि 7 बजे विशिष्ट स्थान पर एकत्रित होना है। सुखद अनुभव था कि वहाँ लगभग 1000 बहनें एकत्रित हुई। उसमें बुजुर्ग थी वैसे कुछ युवतियाँ और बालिकायें भी थी। अपने छोटे बालकों को रखकर, अपने हाथ के काम छोडकर दौडते-भागते आयी थी।

पुणे शाखा में डॉ. श्यामाप्रसाद जी

एक बार संघ के गुरुपौर्णिमा उत्सव में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी आये थे। चाय की व्यवस्था ताई जी के घर थी। ताई जी ने समिति कार्य की जानकारी देते हुए मार्गदर्शन के लिये अनुरोध किया। उन्होंने कहा 'ताई जी, मुझे कल सुबह 6 बजे समय है। चलेगा आपको?'

क्यों नही? - ताई जी ने जवाब दिया और प्रातः 6 बजे शिवाजी नगर

में कार्यक्रम हुआ। ताई जी ने टूटीफूटी हिंदी में धन्यवाद ज्ञापन कियें तो भी उन्होंने उनकी प्रशंसा की। इतनी सुबह और इतने कम समय में महिलाओं का एकत्रित आना उन्हें बहुत सुखद लगा। नागपुर में भी प. पू. गुरुजी श्यामाप्रसाद जी को 'हिंदु मुलींची शाळा' में लगनेवाली समिति शाखा में ले गये थे।

तिलगुड - संपर्क का साधन

1944 में दादा ने मकरसंक्राति के समय सभी स्वयंसेवकों को तिलगुड भेजने का निश्चय किया। ताई जी स्वयं ही वह तिलगुड बनाती थी। उसे मराठी में हलवा कहा जाता है। शक्कर की चाचणी बनाकर तील, लौंग, इलायची, मीठे लव के बीज आदिपर उसकी परथे चढाना। परते चढती जाती है वैसे कांटे के साथ उसको एक सुंदर सा आकार आता है। परथे चढाते समय शक्कर की शुभ्रता कायम रखना कठिन काम होता है और यह काम काफी समय ले लेता है। परंतु ताई जी वह करती थी। छोटी छोटी थेलियाँ सीलकर उसमें वह हलवा भरकर दादा एक पत्र के साथ सबको भेजते थे। यह संपर्क का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम था। दादा से तिलगुड पाकर उनके स्नेह की अनुभूति से लोग गद्गद् हो उठथे। दादा थे तबतक यह क्रम अबाधित रहा एक-दो नही 24 वर्ष, दो तपों तक यह काम ताई ने किया। वैसे ही दशहरे के दिन प्रातः संघ का संचलन और शाम को घर में कॉफीपान का कार्यक्रम रहता था। लगभग 500 कप कॉफी बनती थी। एक बार ताई बीमार थी, ज्वर था। फिर भी ताई जी ने यह नित्यक्रम निभाया।

समिति कार्य की पावनधारा

यह सब निभाते निभाते भी वह समिति के लिये कुशलतापूर्वक समय निकालती थी। रसोई बनाते समय भी उनकी चर्चा चलती रहती थी। नोकरी के लिये पुणे से मुंबई गयी योगिनी ने, विवाह होकर मुंबई निवासी हुई बकुळ ने मुंबई के विभिन्न भागों में शाखाओं की पहले नींव रखी, जहाँ शाखायें थी, उनकी गति बढायी। 1945 में मुंबई में, 1947 में मिरज में समिति का सम्मेलन हुआ। क्योंकि अब समिति का कार्य केवल महाराष्ट्र तक सीमित नही था, वह म.प्र., पंजाब, गुजरात, दिल्ली, सिंध, जम्मू तक फैल चुका था। मुंबई में हुएं समिति शिक्षा वर्ग में सिंध की बहनें आयी थी। 1947 में पुणे की विमलताई

एवं बकुळताई, नागपुर की कुसुमताई कराची वर्ग में शिक्षिका के रूप में गयी थी। समिति कार्य भी व्यापक बनता जा रहा था।

वं. मौसी जी ने बालक मंदिर, छात्रावास, उद्योगमंदिर की कल्पना सबके सम्मुख रखी थी। इसी समय देश के इतिहास ने करवट ली। देश स्वाधीन हुआ। परंतु हमारी प्राणप्रिय मातृभूमि तीन हिस्सों में बँट गयी। इतनाही नही तो देश में हिंसा, बलात्कार, लूटपाट की आग धधक उठी। सब दूर क्रंदन था, अश्रु थे। हजारों लोगों को बेघर होना पडा। अपना देश उनके लिये बेगाना हुआ। अपनी खेतीबाडी, अपनी जन्मभूमि, अपनी संपत्ति, अपना पशुधन, अपने रिश्तेदार सभीको छोडकर उन्हें विस्थापित बनना पडा। कल के लखपति निष्कांचन हुएं। बेघर हुएं। उनमें हमारी सेविकाएं भी थी। विभाजन के पूर्व दिन वं. मौसी जी कराची में ही थी। उसके पश्चात् अनेक सेविकाएं भारत आयी, उनकी व्यवस्था मुंबई में की गयी।

संकट छाया बनकर साथ घूमने लगा

देश की स्वाधीनता का क्षण अपने साथ अनेक आपत्तियाँ लेकर आया। गांधी जी ने तुष्टीकरण नीति के कारण 'पचपन करोड रुपये' पाकिस्तान को देने के लिये उपोषण प्रारंभ किया और भारतीय जनता के घाँवों पर नमक छिडक दिया।

30 जनवरी 1948 देश में एक भयानक दुर्घटना हुई। उस दिन पुणे शाखा की सेविकाओं का एकत्रीकरण था। वहीं ताई को यह दुखद समाचार मिला कि महात्मा गांधी जी की हत्या हुई है। परिस्थिति का गांभीर्य ध्यान में लेते हुएं - ताई जी ने शीघ्र ही सबको घर भेज दिया। घर पहुँचते तक मन आशंकाओं से घिरा था। गांधी जी की हत्या के लिये जिम्मेदार व्यक्ति की जाति को लेकर विद्वेष की लपटें आसमान छूने लगी। उसने पूरे हिंदुस्थान को अपनी चपेट में ले लिया। अनेकों के घर पर हमले हुएं, कुछ घर धूधू कर जलने लगे। संघ पर जनता और शासन का विशेष रोष था। ताई का घर उनकी सूचि में अग्रक्रम में था। ताई का घर जलाने के लिये एक गुट आया। स्वयंसेवकों ने आग बुझायी। घर का रक्षण किया। दादा प्रवास में थे। फिर भी उनके सुरक्षा के समाचार ताई तक पहुँचते रहथे। अपने कारण घरमालिक को तकलीफ न हो इसलिये ताई ने सोचा, कुछ दिन के लिये यह घर छोडना

ठीक होगा। मन में निश्चय किया। स्थिर चित्त से ताजा बनाया घी, आटा, खराब होनेवाली चीजें पडोस में देकर माँ के घर गयी। लोग वहाँ भी पहुँचें। मनुष्य की परछाई नित्य उसके साथ रहती है। सूर्य या दीप की स्थिति के अनुसार उसके प्रकाश की स्थिति निश्चित होती है। मनुष्य की परछाई की दिशा लंबाई, चौडाई सब सूर्य पर निर्भर होती है। आज ताई को भी वही अनुभव आया। समाज के विद्वेष की आग उनका पीछा करते करते उनके पीहर तक पहुँच गयी। संकट उनकी परछाई बनकर उनके साथ साथ चल रहा था। अब कहाँ जायें? दादा के मित्र ताई जी को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने हेतु आये थे। परंतु ताई जी का मन अशांत, उद्विग्न था। आखिर ताई जी अपनी सहेली कमलताई मांडके के घर गयी। उन दोनों पतिपत्नी ने मनःपूर्वक उनका स्वागत किया। 'जो कुछ भी है वह साथ साथ सहेंगें, जो भी रुखासूखा है वह साथसाथ खायेंगें, आनेवाली परिस्थिति से संघर्ष करेंगें।' स्थिति कुछ संभलते तक ताई जी वहीं रही। घर की तीन बार तलाशी ली गयी। ताई ने धैर्यपूर्वक उसका सामना किया। तलाशी लेने के लिये आये पुलिस को पूछा 'आपके पास कोई सरकारी आदेश है, वॉरंट कहाँ है?' 'अखंड भारत का मानचित्र क्यो रखा है?' ऐसे अनेकानेक प्रश्न पुलिस अफसर ताई जी से पूछते । ताई धैर्यपूर्वक उनके जवाब देती।

गांधी जी की हत्या के पीछे संघ का हाथ है यह मानकर स्वतंत्र हिंदुस्थान में हिंदु संगठन को कुचलने का, तहस नहस करने का भरसक प्रयत्न हुआ। स्वाधीनता ने हिंदुओं को दिया हुआ यह सबसे बडा उपहार था। हिंदुत्व की यह कठोर अग्निपरीक्षा थी। इस परीक्षा में हिंदुत्व खरा उतरा। अग्नि ज्वालायें कभी नीचे झुकती नही है।

संघ पर प्रतिबंध लगाया गया था। अनेक घरों की तलाशी ली गयी। संघ के अधिकारियों को और स्वयंसेवकों को कारागृह में ठूंसा गया। दादा भी पकडे गये। पकडने के कारण रोज छिपते रहना बंद हुआ। ताई उन्हें मिलने के लिये कारागृह गयी। अब वहीं उनका जीवनक्रम बन गया। कारागृह में जाना, अन्यान्य बंदी लोगों की पूछताछ करना, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना। बंदी बनाये गये लोगों के घर में जाकर परिवारजनों का ढाढस बांधाना, उनकी आवश्यकतायें क्या है देखना, उनके स्वाभिमान को ठेंस न पहुँचे इस तरह से सेविकाओं के सहयोग से उसकी पूर्ति करना। मानों उनके

पैर को चक्र ही लगे थे। मानसिक तनाव भी बहुत था। उस काल में उनकी आँखें लाल लाल हो गयी थीं, मानों खून ही उसमें उतर गया था।

संबल बनी अनेकोंका वह

सांगली, सातारा की अपनी सेविकाओं को भी काफी कष्ट सहने पडें। मौसी जी के साथ भी ताई का पत्रव्यवहार चल रहा था। मौसी जी ने परिस्थिति का गांभीर्य ध्यान में लेते हुए कुछ दिन तक काम बाह्य रूप से स्थगित किया। अपने पुत्र पद्माकर के विवाह में सबको बुलाकर बैठक लेकर भविष्य की नीति तय की। संघ ने सत्याग्रह की योजना करके, सत्य परिस्थिति जनता तक पहुँचाने का निर्णय लिया। जत्थे जत्थे से स्वयंसेवकों ने स्थानस्थान पर सत्याग्रह किया। ताई जी सत्याग्रहियों के माँ-पिता पत्नी से मिलकर बतलाती 'आप अकेले नही। हम सब आपके साथ है' शिवरामपंत जोगळेकर, शंकरराव वैद्य जैसे युवा प्रचारकों के घर हर पंद्रह दिन में ताई जी एक बार जाकर आती थी। कुछ भी हुआ तो अपने साथ कोई है यह विश्वास उन्हें दिलाती थो। उसी समय विश्वनाथ रिसाल इस पूर्वभाग के कार्यकर्ता की येरवडा कारागृह में मृत्यु हुई। उसकी पत्नी को धैर्य देने हेतु ताई कई दिनों तक रोज उसके घर जाती रही। संकटकालीन स्थिति ही कौन अपने, कौन पराये यह उजागर करती है। कभी खून के रिश्ते भी दूर हो जाते हैं और कभी दूर के पास आते हैं, इसका अनुभव सभीने किया। इसीलिये ताई जब घरों में जाती तो उनको संबल मिलता। ताई ने स्वयंसेवकों की चिंता की। स्वयंसेवकों ने ताई की। 18 माह के पश्चात् 12.7.1949 को प्रतिबंध हटने के बाद संघ स्वयंसेवक कारागृह से मुक्त हुएं। दादा घर में आने के एक दो दिन पूर्व स्वयंसेवकों ने आकर आग के कारण काला हुआ भाग लिपाई पुताई करके सामान्य बनाने का प्रयास किया। परंतु इस आपात्काल ने अनेकोंके जीवन का रंग ही उडा दिया। कुछ लोगों को अपनी नोकरी से हाथ धोना पडा तो कुछ लोग निष्क्रिय हुएं, नाराज हुएं, इस दमनकारी परिस्थिति में कुछ ने अलग रास्ता अपनाया।

समिति में जाना अर्थात् सरकार का रोष मोल लेना है, ऐसा भाव कहीं कहीं निर्माण हुआ। ताई जी ने मौसी जी के साथ चर्चा की और खोया विश्वास पुनः निर्माण करने हेतु कठोर परिश्रम कियें। इस बीच अनेक तरुण सेविकाएँ

विवाहबद्ध हुईं। कार्य का सूत्र थोडा कमजोर हो गया था। वह पुनः जोर पकडने लगा। सभी सेविकाओं में उत्साह भरने हेतु 1953 में वं. मौसी जी ने 'भारतीय स्त्री जीवन विकास परिषद्' का आयोजन किया। समिति के शारीरिक कार्यक्रमों के पाठ्यक्रमों के पुनर्विचार का यह प्रयास था। शिक्षाविद्, आरोग्यचिकित्सक, विचारवंतों की राय से योगासन का नया आयाम सेविकाओं क लिये खुला किया।

1958 में 'स्वातंत्र्यलक्ष्मी रानी लक्ष्मीबाई स्मारक समिति' नाम से एक प्रतिष्ठान निर्माण किया गया। वं. मौसी जी की अतीव इच्छा थी इस वीरशिरोमणि महिला का स्मारक बने। ताई की शाखा की एक सेविका श्रीमती दाबके जी ने मौसी जी की इच्छानुसार अपने घर में रुई का पेड लगाया। पश्चात् उसका धागा निकालकर, सूत कातकर, कपडा बनाकर, गेरुआ रंग देकर, उसके ध्वज सिलें। उसमेंसे प्राप्त राशि रानी लक्ष्मीबाई स्मारक समिति को दी। माई का यह भाव, यह श्रम, कार्य के प्रति उनकी लगन देखकर ताई को अपना ही जीवन सार्थक हुआ ऐसा लगा।

सत्संग का प्रभाव

कभी कभी मौसी जी और ताई जी मिलकर प्रवास करती थी। मौसी जी का निकट सान्निध्य कार्य की प्रेरणा जगाता था। अनेक पाठ अपने आप ही प्राप्त होते थे। एक बार दोनों रत्नागिरी जाने के लिये निकलीं। बस में दोनोंको अलग अलग स्थान प्राप्त हुएं। फिर भी मौसी जी शांत थी। रास्ते में गाडी बिगड गयी। दोनों उस बसस्टँड पर बैठी रही। पुणे में इतनी फुरसद ताई को कहाँ मिलती थी? गाडी ठीक होते तक मौसी जी काम के बारें में चर्चा करती रही। वहाँ देर से पहुँचने के कारण विश्राम संभव ही नही था। परंतु मौसी जी ने उत्साह, आनंद से सभी कार्यक्रम संपन्न कियें। सेविका ने कैसे अविचल रहना है उसका यह वस्तुपाठ ही था।

कार्य के लिये शारीरिक कष्ट मौसी जी के लिये न के बराबर थे। हुबळी जाने के लिये मौसी जी पुणे आयी। पुणे स्टेशन आने से थोडे पहले सामान समेटते हुए दांत की डिब्बी का पानी फेंकते समय नीचेके दांत भी गिर गये। गलती तुरंत ध्यान में आयी। पर गाडी की गति तेज थी। घर आने के बाद यह बात मालूम हुई। दंतवैद्य के पास गये भी परंतु एक दो दिन में नये

दांत बनना असंभव ही था। हुबळी में 7 दिन की रामकथा थी। वहाँ दांत बनायेंगें ऐसा विचार किया। मौसी जी रोज डॉक्टर के पास जाती रही परंतु काम बना नही। नीचे के दांत न होने के कारण खाने पर असर हुआ। परंतु उनके मुँह से शिकायत का शब्द भी नही निकला। प्रवचन देते समय उच्चारण में कुछ दोष नही आये इसलिये वं. मौसी जी सतर्क थी। वं. मौसी जी के श्रद्धांजली कार्यक्रम में ताई ने यह बात स्मरणपूर्वक बतायी। अपनी प्रमुख संचालिका का यह कृतिशील मार्गदर्शन उन्हें स्तिमित कर गया। उसी कारण उनका मार्ग प्रशस्त बन गया।

पुणे प्रवास में वं. मौसी जी का निवास ताई जी के ही घर रहता था। एक बार घर में कुछ दुरुस्ती का काम चल रहा था। रसोई घर की दीवार गिरा दी थी। सब ओर धूल ही धूल थी। अतः उनकी निवास व्यवस्था अन्य स्थान पर करने की योजना बनी थी। वह उन्हें पसंद नही आयी। 'मैं कोई परायी नही हूँ' कहते हुए 'सरस्वती सदन' में ही उतरी। वं. मौसी जी जिस घर में उतरती थी वहाँ पूजा वे ही करती थी। वही उस घर की गृहिणी को सहायता हो जाती थी। वैसे ही ताई के घर में भी पूजा करती थी। उनके स्वयंके पास वर्धा की अष्टभुजा देवी की, श्रीराम प्रभु की - लक्ष्मण, हनुमंत, सीताजी सहित प्रतिमा, भगवा ध्वज (पूजा ध्वज) आदि रहते ही थे। उनका पूजा ध्वज चांदी का ध्वजदंड ऊपरी हिस्से में त्रिशूल बडा सुघड ऐसा था। वं. मौसी जी पूजा करती थी तब छोटा उमेश (ताई जी का पोता) उनके पास बैठकर ध्यान से देखता था। उसे वह ध्वज बहुत ही पसंद आया। उसने मौसी जी को अपनी पसंद बताते ही मौसी जी ने ध्वज उसे दे दिया।

सेवामय जीवन

1961 में पुणे में मुळामुठा जनजीवनदायिनी जनजीवनहारिणी बन गयी। पानशेत का बांध टूट गया। पुण्यनगरी जलमय हुई। हजारों घर ढह गये। हाहाकार मचा। ताई ने कमर कसी।

पानशेत बाढ के समय की सहायता

घरघर से सामग्री एकत्रित कर आपद्ग्रस्तों को उसका नियोजनपूर्वक वितरण करना ताई ने प्रारंभ किया। आजसे 48 वर्ष पूर्व यह एक आश्चर्य था। कीचड पार करते जाना सामान्य बात नही थी। फिर भी ताई जी गयी। सभी तो अपने ही थे। इसी समय पुणे की अनेक महिला संस्थाएं एकत्रित आकर संयुक्त स्त्री संस्था स्थापन हुई। उसमें ताई जी की अहम् भूमिका थी। अंतिम क्षण तक ताई का उसके साथ अटूट संबध रहा। विभिन्न राजनीतिक दलों की पार्श्वभूमिवाली महिलाओं में ताई जी का एक गरिमामय स्थान पहले दिन से उनके अंत तक बना रहा। संस्था की अध्यक्षा गंगूताई पटवर्धन जी एवं अन्य कार्यकर्ताओं के साथ उनके प्रेमपूर्ण संबध रहे। समिति के अनेकानेक कार्यक्रमों में वह आनंद से आती थी।

गोवामुक्तिसंग्राम

1947 में भारत अंग्रेजों से स्वतंत्र हुआ। पर भारत का एक हिस्सा गोमांतक विदेशिओं के चंगुल में होने के कारण पराधीनता की कालिमा झेलता रहा। सुंदर निसर्गरमणीय, सदाहरित गोवा ! समुद्र किनारे बसा हुआ गोवा! मंगेशी का, शांतादुर्गा का गोवा! पोर्तुगीजों के अनन्वित अत्याचार सहन कियें गोवा ने! वहाँ हजारो परिवार बलपूर्वक और ठगाकर भी ईसाई बनाये गएं। भारत को स्वाधीनता प्राप्त होकर 15 वर्ष हो गये थे फिर भी गोवा पुर्तगाल के कब्जे में था। उसे मुक्त करने के लिये गोवामुक्तिसंग्राम समिति बनायी गयी। आंदोलन की गति तीव्र बनी। दादा - ताई का आंदोलन में सक्रिय सहभाग था। गोवा यह महाराष्ट्र से सटा हुआ प्रदेश, महाराष्ट्र का ही एक हिस्सा। किसी एक समय वह छत्रपति शिवाजी के राज्य में था। उनका सिंधुदुर्ग इसी प्रदेश

में समुद्र किनारे बसा है। सागरिक दृष्टि से भी अतीव महत्त्वपूर्ण ऐसा यह भूभाग। स्वाभाविक उसे मुक्त करना यह गोवा के इतना ही महाराष्ट्र का दायित्व था। अतः योजनानुसार यहाँसे सत्याग्रहिओं की टुकडियाँ भेजी जा रही थी। श्री. ना. ग. गोरे, श्री. जयंतराव टिळक, दादा आपटे इस समिति के कार्यवाह थे। ताई जी ने निश्चय किया था कि दादा के साथ वह भी सत्याग्रह में जायेगी। परंतु दादा ने कहा, 'ताई, सत्याग्रहियों के परिवारों का मनोबल बनाये रखना आपके जैसा और किसी को संभव हो सकता है? ताई युद्ध की यशस्विता पीछे की कमान की मजबूती पर निर्भर होती है। आपका समिति का प्रवास भी है।'

ताई का नाम ही सरस्वती था। नाम के अनुसार ही वह स-रस रससहित अर्थात रसयुक्त थी। प्रेम, आत्मीयता और आश्वासकता के रस का वह लबालब भरा कुंभ पुणे में जलधारा का रूप लेकर बह रहा था। दूसरोंको जीवनरस दे रहा था। ताई ने दादा के कहने का प्रतिवाद नही किया। वह उनका स्वभाव ही नही था।

दादा के विचारों पर, कर्तृत्व पर उन्हें आत्यंतिक विश्वास था, श्रद्धा भी थी। ताई उत्तम अनुगामिनी थी। घरगृहस्थी में दादा की, समितिकार्य में वं. मौसी जी की। वह आत्मविलोपी थी। अपना मत, अपना आग्रह उन्होंने लादा नही। फिर भी अपने व्यक्तित्त्व की अमिट छाप दूसरों पर छोडती ही रही। केसरीवाडा को अब छावनी का रूप आया था। सत्याग्रहियों के लिये भोजन की व्यवस्था करना, उनकी टुकडियाँ तैयार करना, सत्याग्रहियों को स्टेशन पर विदा करना, निधिसंकलन करना आदि। सभी में ताई का सेविकाओं को साथ लेकर सक्रिय सहभाग रहा। वह लक्षणीय था। सत्याग्रही वापिस आ सकेंगे या नही? उनको वहाँ क्या सहना पडेगा? अनगिनत अत्याचार भी हो सकते थे उनपर। यह सब ज्ञात होते हुए भी रोज उनको बिदा करना यह सामान्य बात नही थी। परंतु अपने चेहरे पर गंभीरता, प्रसन्नता कायम रखते हुए व्यवहार करना यह ताई की विशेषता थी। अथक प्रयासों से सन् 1961 में गोवा मुक्त हुआ, भारतीय गणराज्य का एक अभिन्न अंग बन गया, पर अनेकों की आहुतियाँ लेकर। गोवामुक्तिसंग्राम में सहभागी लोगों के सत्कार का एक कार्यक्रम हुआ। उसमें प.पू. बालासाहब जी देवरस द्वारा वं. ताई जी का सत्कार किया गया। वह जितना विनायकराव जी का था उतना ही ताई जी के कार्य का भी। इस संग्राम में उन्होंने दिनरात एक करके कार्य किया था।

अतिथि को दान, अपने सौभाग्य का

1966 के करीब कर्करोग ने दादा के शरीर को ग्रस लिया। निदान होनेके पश्चात् मुंबई में जाकर केमोथेरपि प्रारंभ हुई। जीभ में ही कॅन्सर होने के कारण खाना, पीना, बोलना सभीपर अनेक मर्यादायें आयी। अपना जीवनसाथी अब थोडे ही दिन अपना साथ देनेवाला है यह एहसास ताई को हुआ। भविष्य अटल था और गृहस्थीरथ का सारथी भी अचल था। सेवा, परहेज, मिलने के लिये आनेवालों से बातचीत, समिति का कार्य अनेक आयाम वह अविचल मन से संभाल रही थी।

दादा ने अपनी अंतिम बिदाई की पूर्ण तैयारी कर ली थी। 11.12.1966 को उन्होंने एक पत्र लिखा "5-6 महिनों से जागतिक कीर्ति का एक अतिथि मेरे घर (शरीर) में रहने आया है। मैंने भूख-प्यास भूलकर उसकी सेवा की। वह चाहता है कि मैं उसके साथ जाऊँ। इतना अच्छा साथी मिलना कठिन है। मैंने उसके साथ जाने का निश्चय किया है।" - अत्यंत भावभीना, साहित्यिक और लिखनेवाले की उच्चतम दार्शनिकता का दर्शन करानेवाला यह छोटासा पत्र। आज भी वह पढते समय पढनेवाला व्याकुल हो उठता है, तो ताई जी की क्या अवस्था हुई होगी? ताई जी की आँखों से आंसू झरने लगे। नये साथी के लिये इतने दिनों से की हुई मेरी साथसंगत भूल गये? जीवनसंगिनी को भूल गये? परंतु दादा के एक शब्द ने उन्हें सचेत किया। 'अतिथि। अपना व्रत है हँसता अतिथि - हँसते हुए, प्रसन्न मन से इस घर से विदा हो। आज आये हुएं अतिथि को मेरा सौभाग्यदान देना है। दूंगी मैं और अपना व्रत निभाऊँगी।' उस दिन के पश्चात् दादा शांत होते तक किसी ने उनकी आँखों में आंसू नही देखे। ताई के इस धैर्य ने, सुधीरा वृत्ति ने घर को 'सुधीर' बना दिया। घर में आनेवाले किसीको परिस्थिति का गांभीर्य पता नही चला।

दादा की बहन को भी ताई ने घर में बुला लिया था। अपने भाई का गुणवर्णन करते वह थकती नही थी। और उनके आंसू थमते थम नही रहे थे। दादा को एक घूंट भी निगलना कठिन जा रहा था। ताई ने अपनी दूर अहमदाबाद में रहनेवाली लडकी - विजया को पत्र लिखकर छुट्टियों में नातियों के साथ बुला लिया। दूसरी कुमुद पास में ही थी। दादा के थोडे ही दिन बचे हैं वे उनके साथ सब मिलकर आनंद से बितायेंगें इस हेतु से। घर अब गोकुल बन गया था। कुमुद के पांच, विजया के तीन, वसंतराव जी के तीन लगभग 11

नातीपोतियाँ थी। तीनोंके परिवार भरेपूरे थे। सब अपने परिवार में सकुशल थे। सभीकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी थी। दामाद भी संघकार्य से जुडे हुए थे। कुछ दिन सब साथ रहे, दादा का मन भी थोडासा बहल गया।

बोलना होता नही था अतः कभी कभी पाटी पर लिखकर बताते थे। अभी उन्होंने अपनी आँखें, अपना मन, दूसरे तीर पर लगा लिये थे। ताई का मन भी उदास था, फिर भी शरीर निरंतर कार्यरत था। दादा के लिये नातिपोतियों के लिये, आनेवाले स्वयंसेवक, सेविकाओं के लिये वह अथक परिश्रम करती थी।

अंतिम दिनों में दादा ने गुरुचरित्र की पोथी पढवायी। दिनांक 11 जानेवारी 1967 को दादा ने अंतिम साँस ली। अंत्यदर्शन के लिये दर्शनार्थियों की भीड उमड पडी। सभी स्तर के, सभी जाति, पंथ के लोग उसमें सम्मिलित थे। मानों लोकगंगा ही वहाँ अवतीर्ण हुई थी। सबके मन का भाव एक था, दुःख एक था कि आज उनका आधार चला गया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पण करते हुएं संत सोनोपंत दांडेकर जी ने कहा वे शुभ्र वस्त्रधारी संन्यासी ही थे। प. पू. गुरूजी जैसे से अनेक श्रेष्ठ महानुभाव मिलने के लिये आये। वं. मौसी जी भी आयी। ताई जी पर तो यह बडा ही वज्राघात था। लगभग 42 वर्ष का साथ टूट गया। ताई जी को अपने प्राण ही मानों निकल गये हैं ऐसा प्रतीत होने लगा, पर नही, एक धागा उन्हें खींच रहा था, समिति कार्य का धागा। दादा ने भी कहा था तुम्हारा कार्य ही तुम्हारा जीवन बनने दो। कभी मौसी जी की याद आती थी, उनपर तो बहुत ही छोटी आयु में यह आघात हुआ था। फिर भी उन्होंने उससे ऊपर उठकर समिति कार्य की नींव रखी। घरगृहस्थी, सात बच्चों का बडा कुनबा संभालते संभालते कार्य किया। 1961 में वर्धा सम्मेलन के समय जेठानी का देहांत हुआ। रिश्ते से तो जेठानी थी पर जीवन में उनका स्थान बडा महत्त्वपूर्ण था। दोनों बहनें ही बनकर रही थी। काकू के जानेसे मौसी जी का हृदय विदीर्ण हो गया। फिर भी काकू के अंत्यसंस्कार के बाद मौसी जी दूसरे दिन ही सम्मेलन में उपस्थित रही। उनका बौद्धिक भी हुआ। भावनाओं से भी कर्तव्य श्रेष्ठ है यही तो वह पाठ है।

ध्येय पथ पर निरंतर

वं. मौसी जी का रामायण प्रवचन कार्यक्रम इस वर्ष पुणे में निश्चित हुआ था। उस समय मौसी जी उन्हें आग्रहपूर्वक वहाँ ले गयी और प्रवचन के बिंदू निकालने के लिये कहा। ताई जी को घर से बाहर निकालने का यह एक बहाना था। पतिनिधन के पश्चात् महिला को घर से बाहर निकलने का संकोच ही लगता है एक तो स्वयं का मन - मैं विधवा हो गयी -इससे उदास रहता है और उस समय तो वह एक अपराधबोध ही होता था। धीरे धीरे कुंठा होने लगती थी। और चार दिवारी के अंदर ही उसकी घुटन शुरू हो जाती थी। मौसी जी इस मानसिकता को भलीभाँति जानती थी और उससे बाहर निकालने के लिये उन्हें यह काम सौंपा था। आठ दिन प्रवचनों को जाते जाते रामकथा से मन स्वस्थ होने लगा। ताई जी ने लिखे हुएं तथा नाशिक के कार्यक्रम के बिंदुओं के आधार पर 'वं. मौसीजी के रामायण प्रवचन' पुस्तक तैयार हुई। पुणे में हिंदुस्थान मुद्रणालय में उसकी छपाई का का काम हुआ।

रामकथा अति पावन

वं. मौसी जी ने धीरे धीरे ताई जी को भी रामायण प्रवचन के लिये प्रेरित किया। 1969 में गीताधर्म मंडल के महिला विभाग में ताई जी ने रामायण कथा का शुभारंभ किया। उनके जीवन की जैसी ही उनकी कथनशैली भी सहज सरल थी। मन को छू जाती थी। 1983 में उन्होंने 8 दिन देवी अहल्या मंदिर में रामकथा की,सुनीताताई कोल्हटकर उनके साथ नागपुर आयी थी। रोज कथा के पूर्व एक दृश्य प्रस्तुत किया जाता था। कथाभाग के अनुसार गीत और सेटिंग्ज भी बनाये जाते थें। राज्याभिषेक के दिन तो मानों अयोध्या ही अवतीर्ण हुई थी। रामदरबार सजाया गया था। ताई जी का मन प्रसन्न हुआ।

वं. मौसी जी ने विनायकराव की मृत्यु के बाद ताई जी का रामायण प्रवचन के बहाने घर से बाहर जाने का प्रारंभ करवाया था यह ध्यान में रखकर 1982 में उषाताई चाटी के पति के निधन के बाद उषाताई और उनकी सास को देवी अहल्या मंदिर में ताई जी रामायण प्रवचन के समय रहने के लिये ले आयी।

पुणे सम्मेलन

पुणे में हुएं रामायण के प्रवचन के पश्चात् ही अगले वर्ष वहाँ संपन्न होनेवाले अ. भा. त्रैवार्षिक सम्मेलन की योजना बनने लगी। अब ताई जी को दुःख करने के लिये समय ही नही था। बैठकें आदि होने लगी। मार्गदर्शन के लिये निरंतर सेविकाएँ आती थी सम्मेलन में आनेवाली सेविकाओं की निवासव्यवस्था, भोजनव्यवस्था आदि के लिये। सब कुछ सुव्यवस्थित होना चाहिये ऐसा ताई जी का आग्रह था। इससे पूर्व संपन्न सम्मेलनों की एक अनोखी छाप थी जनमानस पर और यह सम्मेलन ताई जी के कार्यक्षेत्र में था। अपने व्यक्तिगत दुःख के कारण व्यवस्था में किसी प्रकार की कसर रह जाना ताई जी को मान्य नही था। विमलाबाई केळकर, विमलाबाई बर्वे, मालती बाई कुळकर्णी, लक्ष्मीबाई साठे, उज्ज्वलाताई दातार, आदि सब सम्मेलन की यशस्विता के लिये संपर्क, धन संकलन के लिये जुट गयीं। सुव्यवस्थिता के कारण यह सम्मेलन दीर्घकाल तक सेविकाओं के ध्यान में रहा। इसका एक विशेष कारण यह कि पुणे के काम में अपना एक अनोखा अनुशासन था। गृहिणी शाखाएं बडी मात्रा में थी। और वे सभी समिति के कार्य से आत्यंतिक प्रभावित, प्रेरित थी।समिति के प्रति उनकी अतीव निष्ठा थी। ताई का निरंतर उन शाखाओं में प्रवास होता रहता। ताई के आत्यंतिक परिश्रम करने का प्रभाव काम पर था ही। वर्ग आदि के लिये एक निश्चित पद्धति थी। पुणे में कभी वर्ग के लिये रसोईयाँ को बुलाया नही गया। शाखा शाखा से सेविका बहनें नरम, मुलायम रोटियाँ ले कर आती थी। सुबह जो सेविकायें रोटियाँ लेकर आती थी वहीं दिनभर की व्यवस्था देखती थी।। दाल, भात, सब्जी निर्मलाताई जोशी आदि सेविकाएं बना लेती थी। प्रारंभ में कई वर्षों तक नाश्ता उबले हुएं चने या नरम मेतकूट चावल ही दिया जाता था। उसमें परिवर्तन हुआ तो सेविकाएं ही नाश्ता लाती थी। बर्तन भी सेविकाएं साफ कर लेती थी। अभी अभी तक यह क्रम था। पुणे के इस सम्मेलन का यश ताई जी के व्यापक संपर्क में समाया हुआ था।

1989 में भी जो प्रांत सम्मेलन हुआ उसमें 5000 संख्या होने पर भी रोटियाँ भाग भाग से ही संकलित कर लायी गयी।

शोभायात्रा में घोष का प्रथम वादन

सघोष शोभायात्रा इस सम्मेलन की विशेषता रही। प्रथम बार घोषगण

तैयार हुआ था - 1966 नाशिक में हुएं एक महिने के अधिकारी प्रशिक्षण वर्ग में। यह वर्ग समिति के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण मोड है। ताई जी को यह घोष थोडा अटपटासा लग रहा था।

इस सम्मेलन में श्री. रामभाऊ म्हाळगी जी का कार्यकर्ता इस विषय पर बौद्धिक हुआ। परंतु उन्हें हिंदी बोलने का अभ्यास नही था। अतः उनके मराठी भाषण का तुरंत ही हिंदी अनुवाद मा. कुसुमताई जी साठे ने किया।

इस सम्मेलन में भोसले और शिंदे राजपरिवार एकत्रित आयें। वं. मौसी जी के रामायण प्रवचन के पुस्तक का लोकार्पण श्रीमंत सुमित्राराजे भोसले ने किया। श्रीमंत राजमाता विजयाराजे का समिति के इतने बडे प्रकट कार्यक्रम में आना प्रथम बार ही हुआ था। वे इंदौर शिक्षा वर्ग में प्रमुख अतिथि के रूप में आयी थी। समापन कार्यक्रम के प्रारंभ में ही अचानक बारिश आयी। परंतु सेविकाओं का अपने गीले कपडों की परवाह न करते हुए स्थिर मन से योजनानुसार कार्यक्रम करना आदि से वह बहुत प्रभावित हुई थी। आज का दृश्य वह प्रभाव अधिक दृढ कर गया। और वह समिति से जुड गयी। कुछ समय पश्चात् वह राजनीति में गयी। फिर भी समिति से उनका रिश्तानाता आखिरी तक परम स्नेह का ही रहा। वह हमेशा कहती थी मैं अपनी बॅटरी चार्ज करने के लिये समिति में आती हूँ। समिति कार्यालय में आने के पश्चात् वह अपने दरबारी रीतिरिवाज भी थोडे बाजू रख देती थी।

इस सम्मेलन में एक मनोज्ञ दृश्य देखने के लिये मिला - श्रीमंत सुमित्राराजे जी को मुजरा करते हुएं उन्हें पीठ न दिखाते विजयाराजे जी ने स्थान छोडा। भोसले हमारे स्वामी उनके साथ एक मंच पर बैठना धृष्टता होगी ऐसा कहकर वह मंच के सामने विशिष्ट निमंत्रितों के साथ बैठी।

आँवली भोजन नहीं इमली भोजन

सम्मेलन के समय व्यवस्था में जो बहनें थी उनके हाथ में थालीयाँ थी, पर उन्हें बैठने के लिये स्थान नही था। ताई जी कहीं से आयी बोली चलो अपनी थालीयाँ परोस लो हम उस वृक्ष के नीचे जाकर बैठेंगे क्योंकि हमें शीघ्र ही अन्य व्यवस्था के लिये जाना है। उन बहनों ने अपनी अपनी थाली परोसी और वृक्ष के तलें बैठकर भोजन करने लगी। किसी ने कहा 'चलो, ताई आज अपना आँवली भोजन हो रहा है न?' ताई ने ऊपर वृक्ष की ओर देखते हुए अपनी समयसूचकता दिखाकर कहा - 'जी नही, इमली भोजन।'

समिति का नमक

एक बार सेविकाएं कहीं वनभोज के लिये गयी थी। दोपहर की चाय की व्यवस्था के लिये घर से दो-दो चम्मच चीनी और चाय पत्ती लाने के लिये बताया था। भोजन के समय लगेगा ऐसा सोचकर किसी ने थोडा नमक भी लाया होगा। पता नही कब और कैसे वह गलती से चीनी में मिला दिया गया। चाय में जब थोडा नमकीन स्वाद आया तब क्या हुआ होगा समझ में आया। उसकी चर्चा शुरु होना स्वाभाविक ही था। परंतु वैसे रंग दिखते ही ताई जी ने कहा - 'देखिये आज हम सबने समिति का नमक खाया है। उसको जागना होगा।समिति का ऋण चुकाना होगा।' शायद ताई जी की इस बात का स्मरण रखते हुएं सेविकाएं कार्यरत है।

राष्ट्र सेवारत कार्यकर्ता सदैव 'सौभाग्यशाली'

ताई जी काम तो करती थी, परंतु कभी कभी मन उदास हो जाता था। श्री. विनायकरावजी के देहांत को कुछ वर्ष हुएं थे। वं. ताईजी को बहुत खाँसी हुई। ढेर सारी औषधियाँ लेने पर भी आराम नही था। वं. ताई जी खाँसी के लिये सबको लौंग और इलायची का चूर्ण शहद में घोलकर देती थी। हमेशा वह भी वहीं लेह्य लेती थी। परंतु विनायकरावजी के देहांत के बाद परंपरा के अनुसार उन्होंने लौंग, इलायची, पान, सुपारी खाना छोड दिया था। अतः उन्होंने स्वयं वह लेह्य इस बार नही ली। एक दिन जोरदार खाँसी आयी। जी घबडाने लगा। उसी समय उन्होंने विनायकरावजी की आवाज सुनी, 'समाजकार्य करनेवाले नित्य ही सौभाग्यशाली होते हैं। अतः रुढियों को त्याग कर स्वयं को सुहागन ही समझना और लौंग इलायची ले लेना! उनका त्याग नही करना।' यह शब्द सुनें, लेह्य लिया और खाँसी कम हो गयी! ताई के मन की दुविधा हमेशा के लिये दूर हो गयी। श्री रामकृष्ण परमहंस जी ने शारदा माता को भी ऐसाही तो बताया था!

ताई जी को विनायकराव जाने के बाद भी घर में उतना ही सम्मान था। वे जाने के बाद ताई जी की ननद के घर कुछ कार्यक्रम था। ताई जी पीछे पीछे थी। बहुबेटे की आरती उतारनी थी तो उन्होंने ताई जी को बुलाया और कहा, 'आप हमेशा आरती उतारती थी। आज भी आप ही आरती उतारेंगी।' उस समय विधवा महिलाओं ने धार्मिक कार्यक्रमों सामने नही आना है, आरती

आदि नही उतारना है ऐसे अनेक निर्बंध थे। परंतु वे सब दूर रखते हुएं ताई जी की ननद ने जो निर्णय लिया,यह ताई जी के प्रति उनकी श्रद्धा प्रकट करता है।

मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक गो. नी. दांडेकर जी (उनके पडघवली इस उपन्यास पर हिंदी में धारावाहिक भी बना था।) का विवाह ताई जी - दादा ने करवाया था। उनकी बेटी वीणा देव अपनी बेटी के विवाह का निमंत्रण देने ताई जी के घर गयी थी। चाय पानी सब होने के बाद वीणा जी घर से जाने के लिये निकली तो कुमकुम की डिब्बी और सुपारी उसके सामने रखकर ताई जी ने कहा, 'वीणा, अभी घर में उज्ज्वला या अन्य सुहागन नही है। आप स्वयं ही कुमकुम लगा लो।'

'ताई जी, मैं अपने हाथों से क्यों लगाऊं? आप हमारी दादी माँ हैं। आप ही लगाइये।' वीणा जी ने आग्रह किया। ताई जी ने कुमकुम लगाने के पश्चात् फिर से चरणस्पर्श कर वीणा ने विदाई ली।

मेरी काली शाल गुजर गयी

पुणे सम्मेलन के पश्चात् हई केंद्रीय बैठक में ताई जी को अखिल भारतीय प्रमुख कार्यवाहिका का दायित्व सौंपाया गया।वह वं. मौसी जी की अंतरंग कार्यकर्ता थी । धीरे धीरे अन्य प्रांतों में ताई जी का प्रवास होने लगा। प्रारंभ में थोडी भाषा की कठिनाई आती थी। एक तो पुणे संपूर्ण रूप से शुद्ध मराठी वातावरण का क्षेत्र और ताई जी रहती थी सदाशिव पेठ में वह तो और पूरा मराठीभाषी क्षेत्र था। फिर भी घर के राष्ट्रीयता के वातावरण के कारण पहले उन्होंने राष्ट्रभाषा की परीक्षाएं दी थी। ताई जी हिंदी सीखने के लिये वर्ग में जाती तो कोई बुलाने के लिये आ जाता "ताई मेहमान आये हैं" या "कोई बीमार हुआ है।" फिर भी ताई जी परीक्षा उत्तीर्ण हुई थी। परंतु भाषा अवगत होने के लिये आवश्यकता होती है नित्य संभाषण की। मनुष्य शालेय कक्षा के कमरे से अधिक, व्यवहार से बोलचाल से भाषा सीखता है। परंतु वह पुणे में असंभव ही था।

1971 में ग्वालियर में सम्मेलन हुआ। महाराष्ट्र के बाहर संपन्न हुआ यह प्रथम सम्मेलन। अभी तक सभी सम्मेलन महाराष्ट्र में ही मुंबई, मिरज, नाशिक, वर्धा, नागपुर, पुणे में संपन्न हुएं। इस सम्मेलन में ठंड थी। अतः शाल

ओढकर ही काम चल रहा था। ताई जी कहीं तो भी अपनी शाल भूल गयी। वह तुरंत ही प्राप्त हो इस लिये उन्होंने ध्वनिवर्धक से घोषणा की कि मेरी काली शाल गुजर गयी है - ग्वालियर हिंदी प्रांत होने के कारण ताई जी के इस वाक्य से हंसी के फंवारें छूटें। क्या गलती हुई यह पता चलने के बाद वह हंसने लगी। नित्य नये नये शब्द सीखती रही, प्रयास करती रही और आखरी में वह उत्तम हिंदी बोलने लगी। कार्य के लिये नया सिखने का उत्साह और अथक प्रयत्न ही उसके पीछे थे।

हमारा नाता भगवान से

काम बढने लगा वैसे कार्यालयों की आवश्यकता महानगरों में अधिकाधिक प्रतीत होने लगी थी। नागपुर में केंद्र कार्यालय के लिये भवन खरीदा गया था। मुंबई में भी यह प्रक्रिया प्रारंभ हुई। नाशिक में नेतृत्व का आदर्श राणी लक्ष्मीबाई के नाम, नागपुर में कर्तृत्व का आदर्श देवी अहल्याबाई के नाम और मुंबई में मातृत्व का आदर्श राजमाता जीजाबाई के नाम से प्रतिष्ठान का कार्य प्रारंभ किया गया।

30 एप्रिल 1972 को जिजामाता ट्रस्ट मुंबई का उद्घाटन समारोह था। वं. ताईजी को भी वहाँ पहुंचना था। मेल तथा एक्स्प्रेस गाडियाँ ठाणे में रुकती नही थी। अतः ताईजी ने दोपहर 11.20 की पॅसेंजर से जाने का निश्चय किया। 11.10 को टिकट निकालकर स्टेशन पहुंची तो गाडी खडी थी। ताईजी गाडी की ओर जा रही थी कि गाडी ने चलना प्रारंभ किया। ताईजी ने गति बढायी। सामने जाकर इंजिन ड्रायवर को गाडी रोकने के लिये हाथ से इशारा किया। गाडी रुकी। सामने आये हुए डिब्बे में ताईजी और साथ की सेविकाएं चढ गयी और गाडी चलने लगी।

आश्चर्य से लोग कहने लगे - "आपकी गाडी चूकनेवाली ही थी। आज से गाडी का समय 11.15 हुआ है। आपको देखकर ड्रायवर ने गाडी रोकी। आपका और उनका परिचय, रिश्ता-नाता है क्या?"

'जी, हमारा नाता, हमारा रिश्ता नाता है भगवान् से। हम उनका याने भला काम करते हैं, अतः भगवान् किसी भी रूप में हमें सहायता करते हैं।" अपना काम ईश्वरीय है ऐसी अपनी निष्ठा होनी चाहिये ऐसा उनका कहना था।

प. पू. गुरुजी व्याधिग्रस्त

विनायकराव जी की मृत्यु के दुःख को ताई जी भूल ही रही थी कि प.पू.गुरुजी को कॅन्सर हुआ है यह दुष्ट समाचार प्राप्त हुआ। ताई का हृदय विदीर्ण हुआ। उनके हृदय के घाव फिर से हरे हुएं। दादा की व्यथाएँ, उनकी तडपन सब आँखों के सामने आया। " भगवान् वहीं वेदनाएं भारत माँ की सेवा में सर्वस्वार्पण करनेवाले इस पुण्यात्मा को क्यों दे रहे है इस विचार से ताई जी का मन कराह उठा।

गुरुजी का इस घर से बहुत निकट लगाव था और दादा जाने के पश्चात् भी उसमें कुछ अंतर नही आया था। गुरुजी और ताई जी के आंतरिक संबंध बहुत गहरे थे। प. पू. गुरुजी की माँ को भी सब ताई ही कहते थे। ताई के संबंध केवल गुरुजी से ही नही अपितु उनके पूरे घर से ही थे। जब भी ताई, भाऊजी - गुरुजी के माँ पिता जी - पुणे जाते थे ताई के घर में ही उनका निवास रहता था। गुरुजी के भाई वासुदेवराव जी के विवाह में ताई ने पूरी व्यवस्था संभाली थी। मंडप में जरी की साडी और नथनी पहने ताई को काम करते हुएं देखकर सबको लगता था कि यह गोळवळलकर घराने की ही बहू है।

सर्वार्थ से संघ का घर

प. पू. गुरुजी खुले मन से ताई जी के घर में रहते थे। ताई जी और विनायकराव प्रतिदिन प्रातः घूमने जाते थे। एक बार ताई जी और दादा घर वापस आने से पहले गुरुजी उनके घर पहुंचे और रसोईघर में चाय बनाने लगे! ताई जी को देखकर उन्होंने कहा, 'मैं देख रहा था कि अपने घर में चाय बना सकता हूं या नही!' उस दिन सभीने उन्होंने बनायी हुई चाय ली।

ताई जी चाय बनाती तब गुरुजी रसोईघर में बैठकर बातचीत करते थे। एक बार उन्होंने कहा था 'ताई जी, आप जैसे ही घर स्थान स्थान पर बनने चाहिये। नही तो कप प्लेटों की आवाज बैठक में पहुंचती है।' आगे चलकर अनेक वर्षों के पश्चात् उन्होंने बताया था कि अभी कल समिति का कार्य बढ रहा है क्योंकि कपप्लेटों की आवाज न करते हुएं चाय मिल रही है!

विनायकराव की मृत्यु के पश्चात प. पू. बालासाहब देवरस जी ने कहा था 'मा. विनायकराव जी का घर सर्वार्थ से संघ का घर कहा जा सकता है।' इस एक वाक्य में ताई जी के कर्तृत्व का परिचय मिलता है।

ताई जी की बरफी नहीं है

गुरुजी आये कि ताई हमेशा उन्हें प्रवास हेतु लौंग, इलायची, अद्रक की बरफी आदि चीजें बाळुकाका वझे (संघ के प्रचारक जिनका निवास हमेशा ताई जी के यहाँ ही रहता था) के माध्यम से देती थी। अतः वे दूर से दिखे कि गुरुजी बोलते थे 'अद्रक की बरफी आयी रे!' एक बार गुरुजी प्रवास में पुणे गये। ताई जी नही थी। अतः बाळूकाका वझे जी ने और किसी से बनवाकर अद्रक की बरफी गुरुजी को दी। वह देखते ही उन्होंने बताया यह ताई जी ने बनायी हुई बरफी नही है।

प. पू. गुरुजी का चिर वियोग

गुरुजी के पिताजी भाऊजी का अचानक निधन हुआ तब अपनी माँ को सात्वंना देनेवाला उसकी इस नाजुक मानसिकता में संभालने वाला कोई होगा तो वह पुणे की ताई जी ही ऐसा गुरुजी के मन में आया। संदेश मिलते ही ताई जी नागपुर आयी पूरे दिन वहाँ रही। श्राद्ध आदि सब कार्यों में हाथ बटाये। इस आत्मीयता के कारण ही जब विनायक राव जी बीमार हुएं तो प.पू. गुरुजी ने स्वयं मुंबई में पत्र लिखकर उनके औषधोपचार की पूरी व्यवस्था संघस्वयंसेवकों द्वारा करवायी थी।

कॅन्सर का निदान होने के पश्चात् मुंबई में प. पू. गुरुजी की शल्यक्रिया हुई। कुछ दिन विश्राम ले कर फिर से प्रवास प्रारंभ हुआ। परंतु शरीर विकल होता जा रहा था। ज्येष्ठ शुद्ध 5 शके 5075 तदनुसार 5 जून 1973 यह एक काला दिन था। इसी दिन यह महान् आत्मा बंधनातीत हो गयी। पूरे देश में हाहाकार मचा। घर-घर दुःखव्याप्त हुआ। ताई की स्थिति इससे अलग क्या होगी? उनका मन अपने ज्येष्ठ भ्राता को खोने से व्याकुल था।

प.पू. गुरुजी ने अपने इच्छापत्र में अपना कार्यभार पुराने स्वयंसेवक श्री. बाळासाहब देवरस जी को सौपा था। ताई जी ने अपने जीवन में तीन सरसंघचालक देखे। तीनों के साथ उनके अच्छे स्नेहबंध रहे।

जीजामाता त्रिशताब्दि

1973-74 में राजमाता जीजामाता की त्रिशताब्दि निमित्त समिति की ओर से विविध कार्यक्रम लिये गये। सिंदखेडराजा के कार्यक्रम में ताई जी अनेक बाधाओं को पार करते हुएं पहुंची थी।

1974 में त्रैवार्षिक सम्मेलन दिल्ली में था। शिवाजी महाराज ने यहाँ आकर औरंगजेब को कुर्निसात करने को नकार कर उसके अहंकार को गहरी ठेस पहुँचायी थी। सिंधुताई जी फाटक का केंद्र दिल्ली था। वहाँसे वह राजस्थान, पंजाब, हरियाणा,हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर आदि प्रांतों में प्रवास करती थी। सम्मेलन की तैयारी करते समय उन्हें लगा की किसीको सहकार्य के लिये बुलाने की आवश्यकता है। उन्होंने शीघ्र वं. मौसी जी की अनुमति लेकर ताई जी को दिल्ली बुला लिया। ताई जी भी सम्मेलन की पूर्वतैयारी हेतु दिल्ली में जाकर रही। दिल्ली सम्मेलन यशस्वी बनाने हेतु परिश्रम किये।

राऊत वाडी

कालचक्र की गति में उथलपुथल होती रहती है। कल का राव रंक बनता है। लक्ष्मीपति भी अचानक अनाज के लिये तरसने लगता है। 1973-74 में ऐसा ही हुआ। पुणे जिले में भयानक अकाल आया। लोग पानी के लिये दरदर भटकने लगें, खाने के लाले पडने लगें। जानवर भी चारापानी के अभाव में तडपकर प्राण छोडने लगे। ताई का मातृहृदय यह देखकर तडप उठा और पुणे शाखा ने राऊतवाडी ग्राम की देखभाल करने का प्रण किया। ताई जी और सेविकाएं उनके साथ निरंतर मिलती रही। उनकी बातचीत से ही ग्रामवासियों के दुखी जीव शांत हुएं। 'ये दिन हमेशा के लिये थोडे ही रहनेवाले है।धीरज से काम लो, फिर से सबकुछ ठीक हो जायेगा, खुशियाली ही छा जायेगी' - ऐसा कहकर ताई जी उनका मनोबल बनाये रखती। उन्होंने वहाँ बालकों के लिये संस्कार वर्ग प्रारंभ किया।राऊतवाडी के परिवारों को समयसमय पर अनाज, कपडे, औषधियाँ दी जाति थी। उनके जानवरों को हडपसर ले जाकर वहाँ चारापानी की व्यवस्था करवायी। रास्ते अच्छे बनवाये। तीन वर्ष पश्चात् जब वर्षा हुई तो ताई जी ने वहाँ स्वयं ग्रामभोजन दिया। इस गाँव में गोपालराव देशपांडे जी ने बबूताई केवटे से ताई जी का परिचय कर के दिया था। ताई भी निरंतर उनके साथ संपर्क बनायें हुई थी।

हम भी तो कुछ देना सीखें

अकाल समाप्त हुआ पर ताई के प्रेम का, वात्सल्य का उस गाँव में सुकाल हुआ। मंदिर में भजन हेतु हार्मोनियम, ध्वनिक्षेपक आदि की व्यवस्था

ताई जी ने करवायी। मंदिर का कलश इत्यादि सुविधाएं होती रही। ताई सब की पूछताछ करती थी घरघर के बच्चों के उनके नाम लेकर बुलाती थी जिससे उन्हें लगता था कि यह अपने घर की बुजुर्ग महिला है।उनके ममतामय आंचल का स्पर्श पाकर वे पुलकित हो उठते थे। फिर जहाँ पुलक है वहाँ अवसाद कहाँ, निराशा कहाँ?

कुछ दिन पश्चात् आये आपात्काल में ताई जी निरंतर येरवडा कारागृह में जाती थी। राऊतवाडी के लोगों को ताई जी ने सब परिस्थिति बतायी और कुछ सहायता करने के लिये कहा। तब राऊतवाडी ने एक दिन की सब्जी येरवाडा में पहुंचायी। केवल लेना ही नही तो देना भी सिखाया।

1989 में महाराष्ट्र प्रांत सम्मेलन में उन्हों ने तुंवर दाल एकत्रित की थी और कुछ बहनें सम्मेलन में भी उपस्थित रही थी। ताई जी ने बबुताई से छोटा सा अनुभव कथन भी करवाया था। ताई को पोता हुआ तो बबुताई विक्रांत के लिये काजल बना कर ले आयी थी। 'ददाति प्रतिगृण्हाति ...' यह मित्रता के छः लक्षण माने जाते है। ताई जी ने राऊतवाडी में वे चरितार्थ कर दिखायें।

कसौटी के क्षण

1975 में कालपुरुष ने करवट ली और सत्ताधिकारियों के सत्तामद ने संपूर्ण देश को कालकोठरी में बंद कर दिया। संघ और अनेक संस्थाओं पर प्रतिबंध लगायें गये। संविधान ने दिये हुएं सभी मौलिक अधिकार जनता को नकारे गये। संघ के हजारों स्वयंसेवक, अन्यान्य संस्थाओं के कार्यकर्ता बंदी बनाये गये। संगठन के साथ जुडना यहीं उनका अपराध था। न दाद थी न फरियाद। बंदी कितने दिन के लिये बनाया है यह भी पता नही था। पहले प्रतिबंध का कारण भयप्रद था। इस समय प्रतिबंध का पूरा काल ही भयावह था। ताई जी ने अपने जीवनकाल में देखा हुआ दूसरा प्रतिबंध। और संबधित -प्रभावित लोगों के घरघर जाकर मिलने का उनका यह कार्य तीसरी बार था। 1948 का आपात्काल, गोवा मुक्तिसंग्राम और अभी तीसरा यह आपात्काल।

प. पू. बालासाहब जी तथा अनेक मान्यवरों को और महिला कार्यकर्ताओं को भी येरवडा के कारागृह में रखा गया। ताई जी नियमित रूप से उन्हें मिलने जाती थी। वहाँ किसी की क· ·ावश्यकता है यह पूछ लेती थी। सेविकाओं को एकत्रित कर उसकी आपूर्ति की योजना बनायी जाती थी उसके अनुसार सामग्री एकत्रित कर कारागृह में भेजी जाती थी। दीनदयाल शोधसंस्थान की

संरक्षिका सुमतीबाई कहती थी कि "उनके कारण ही हमारा जेल में रहना सुसह्य हुआ।" ताई जी का दिनक्रम निश्चित था। कारागृह में जाना, घरों में धीरज बंधाने हेतु जाना और बंदियों में से कोई बीमार होकर चिकित्सालय में है तो वहाँ जाना। घर से सैंकडो मैल दूर, हाथ में पैसे नही, ऐसी स्थिति में रुग्ण को निराश मानसिकता से बाहर निकालना ताई को ही संभव था। सुमतीबाई कहती है -"मुझे हृदयविकार का तीव्र झटका आया था। मैं मृत्यु की प्रतीक्षा में लेटी थी तभी एक स्नेहपूर्ण स्पर्श हुआ। मैंने आँखें खोलकर देखा तो सामने मूर्तिमंत ममता ताई जी थी। वह स्पर्श मेरे लिये संजीवनी बुटी सिद्ध हुआ। मेरी पीडा धीरेधीरे शमने लगी। उनकी आत्मीयता ने, ममता ने जादू जैसा काम किया। समयसमय पर वे मिलने आती, प्रेम से कुछ ना कुछ खिलाती।"

देशभर में मुद्रणालयों की नित्य जाँच होती थी। क्यों कि इतने सब सरकारी प्रतिबंधों के पश्चात् भी कहीं ना कहीं से सरकार विरोधी पत्रक निकलते थें और वे सार्वजनिक स्थानों पर लगाये जाते थें। शासन इसके प्रति अतीव सतर्क था। किसके मुद्रणालय में वे छपाये गये यह पता चलने पर उसे शीघ्र ही सलाखों के अंदर किया जाता था। ताई जी के घर में तो चरितार्थ का साधन मुद्रणालय ही था। ताई जी के एक दामाद भी जेल में मिसाबंदी थे। तो दूसरे कुछ समय कारावास में जाकर आये थे। कितना तनाव होगा उनके मन पर। परंतु वे स्वयं से भी अधिक चिंता लोगों की कर रही थी।

भूमिगत लोगों के आनेजाने का भी ताई जी का घर एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। ताई जी को मिलने के लिये अनेक ज्येष्ठ कार्यकर्ता आते हैं, यह पता होने के कारण उनके घर पर पुलिस की निगरानी तो थी ही। ताई जी उन के सब प्रश्नों को शांत मन से उत्तर देती थी। एक बार डॉ. आबा जी थत्ते सीढियाँ उतरकर गये और उन्हीं सीढियों से गुप्तचर विभाग के लोग आये और आबाजी की पूछताछ करने लगे। शायद उन्होंने आबा जी को देखा भी होगा पर पहचाना नही। ताई जी निश्चिंत थी। एक बार तीन भूमिगत कार्यकर्ता बैठक लेने के लिये आयें। तीन दिशाओं से तीन लोग आनेवाले थे। ताई जी ने भोजन बनाकर सामनेवाली अपनी दूसरी सदनिका में रखा। वे तीनों आने के पश्चात् बाहर से ताला लगाकर वसंतराव जी को प्रहरी का काम सौंपा। वे देढ - दो घंटे अतीव बेचैनी के तनवा के थे। परंतु ताई जी शांत मन से अपने दैनंदिन निजी कामों में लग गयी। उन्हें पूरा विश्वास था कि यह घर कभी अपयश नही देगा।

ताई जी का घर यानि येरवडा बंदीगृह में मिलने आये परिवारजनों का विश्रामालय था। निवास भोजन आदि की व्यवस्था तो होती ही थी। परंतु किसीका अति शिशु बालक होनेपर उसे नहलाना, सुलाना, खिलाना और मिलने लिये आनेवालों को कुछ पाथेय देना यह व्यवस्था ताई जी करती थी।

संक्रांति, होली जैसे विविध पर्वों पर कारागृह में मिठाई संग्रहित करके भेजना यह भी एक काम ही रहता था। कारागृह में तो वह बालासाहब जी की बहन के रूप में ही परिचित हुई थी। और यहीं उनका वास्तविक नाता था। अतः ताई जी की निधन के पश्चात् बालासाहब जी ने लिखा कि "ताई जी के मृत्यु के कारण मैं अपनी बडी बहन के प्रेम से वंचित हुआ हूँ। केवल मैं ही नही तो संघ परिवार के अनेक स्वयंसेवक उनकी ताई अर्थात् बडी बहन की ममता खो बैठे हैं।"

उन दिनों गुप्तचर विभाग के कुछ लोग नित्य ही पूछताछ हेतु आने के कारण उनका दृढ परिचय हुआ। एक बार उनका एक अधिकारी बीमार है ऐसा पता चलने से ताई जी उन्हें मिलने चिकित्सालय गयी। जाते समय फल एवं कॉफी लेकर गयी। वं. ताई जी का यह अकृत्रिम मातृस्नेह देखकर वह गद्गद् हो उठें।

उस समय कारागृह में रखे गये लोगों को मिसा कानून में बंदी बनाये जाने के कारण मिसाबंदी कहा जाता था। उनके खानेपीने की थोडी ठीक व्यवस्था थी। परंतु कहीं आपात्काल विरोधी पोस्टर्स लगाते समय पकडे गये लोगों को बहुत ही यातनाएं सहन करनी पडी। कुछ महिने प्रतीक्षा करने के पश्चात् संपूर्ण भारतवर्ष में स्थानस्थान पर लोक संघर्ष समिति के तत्त्वावधान में सत्याग्रह किये गयें। सत्याग्रहियों पर मुकदमे चलते थें। उनमें छात्रछात्राओं की संख्या अधिक थी। सभीका भविष्य अनिश्चित था। कब मुक्त होंगें कुछ पता ही नही था। मुक्ति के लिये किये गये अनेक प्रयासों में से एक प्रयास था आचार्य विनोबा जी से वर्धा में मिलना। आशा थी कि वे शायद प्रधानमंत्री इंदिरा जी को समझा पायेंगे तो परिस्थिति में परिवर्तन हो सकता है। उस प्रतिनिधि मंडल में वं.मौसी जी, ताई जी भी थी। परंतु यह सब प्रयास व्यर्थ रहा क्यों कि विनोबा जी ने उस समय मौन धारण कर लिया और कुछ समय पश्चात् वे चादर ओढकर सो गये।

अनेकों ने अनेक स्थानों पर अनेक प्रकार के अनुष्ठान रखें थे वे भी एकत्रित आने के बहाने थे। शाखा कार्य भी अलग अलग रूप में चल ही रहा

था। ग्रीष्मकाल में व्यक्तित्व विकास आदि विभिन्न नामों से शिक्षा वर्ग आयोजित किये गये।

सरसंघचालक जी का ६० वा जन्मदिन

आपात्काल में ही प. पू. बाळासाहेब जी का 60 वाँ जन्मदिन आया। कारागृह में अनेक पत्र पहुँचें ऐसी एक योजना थी। येरवडा कारागृह में भी ताई जी बताकर आयी थी की मेरे भाई का कल जन्मदिन मनाना है। उस दिन ताई जी कुछ सुहागन महिलाओं को एवं आशीर्वाद मंत्र बोलनेवाले वैदिक पंडित शास्त्री जी को लेकर गयी थी। सुहागनों ने बालासाहब जी की आरती उतारी, सबको मिठाई बाँटी। आपात्काल समाप्त होकर सब मुक्त हुएं तब सबको स्वागत में फूल देकर उनका अभिनंदन किया गया। बाकी सब लोग आनंदोत्सव में मग्न थे। परंतु ताई जी कहाँ थी? वह बालासाहब जी के अभिनंदनहेतु आयोजित सार्वजनिक सभा में न जाते हुएं कारागृह के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को फूल देकर 'हमारे भाईयों की आपने अच्छी व्यवस्था रखी' यह कहते आभार व्यक्त करने में व्यस्त थी।

आपात्काल ने विभिन्न विचारधाराओं के नेताओं को एक साथ कारागृह में रखा था उन सबकी आपस में मित्रता बनी। सबने एक होकर चुनाव लडने का निश्चय किया और सत्तारूढ कांग्रेस को पराजित कर विरोधी पक्ष सत्ताधारी बना। स्वाधीनता के 29 वर्ष पश्चात् यह एक तरह से संगठित जनशक्ति की विजय थी। मार्च 1977 में श्री. मुरार जी देसाई प्रधानमंत्री बने। 22 मार्च 1977 मुक्त हुएँ संघ अधिकारियों का बडे उत्साह से स्वागत हुआ।

इस आपात्काल के पश्चात् परिस्थिति एकदम बदल गयी। 1948 में लोग संगठन से जुडने से कतराते थे। आज तो जुडने की होड लगी थी। यह भी घातक था। धीरे धीरे सब सामान्य होता गया। ताई जी एवं समिति की बहनें जैसे बीच में कुछ हुआ ही नही इस तरह से फिर से अपने कार्य में जुट गयी।

वं. मौसी जी का निर्वाण

जानेवारी 1978 में भाग्यनगर में सम्मेलन हुआ। उसके पूर्व भारत के पूर्व के समुद्र किनारे पर भयंकर तूफान आया था। फिर भी सम्मेलन हुआ। वं. मौसी जी का उद्‌बोधन बहुत ही प्रभावी रहा। परंतु यह उनका अंतिम अखिल भारतीय संबोधन होगा यह किसको ज्ञात था? वं.मौसी जी का

स्वास्थ्य दिनप्रतिदिन गिरता जा रहा था। फिर भी प्रवास, प्रवचन के क्रम में कोई अंतर नही था। जुलै में अखिल भारतीय बैठक हुई। उसके पश्चात् उनकी इच्छानुसार श्रद्धेय संत अच्युत महाराज के भागवत सप्ताह का आयोजन किया था। वं.मौसी जी आग्रहपूर्वक वह सुनने के लिये बैठी। वे परिश्रम उनको सहन नही हुएं।उन्हें विश्रांति की आवश्यकता थी। अतः वह अपनी बेटी वत्सलाताई के घर गयी। उन दोनोंके संबध अत्यंत मधुर थे। माँ बेटी से भी अधिक वे एकदूसरों की सहेलियाँ थी। वं. मौसी जी का मन की बात बोलने का वह एक स्थान था। वहाँसे ही वे भरतनगर में रामायण प्रवचन हेतु वे जाती थी।प्रवचन समाप्ति के पश्चात् देवी नवरात्रि के दिन वे नवरात्रोत्सव के लिये वर्धा जानेवाली थी।परंतु सर्वपितृमोक्ष अमावस्या के दिन रात को अचानक ही मौसी जी अस्वस्थ हुई। यह सूचना मिलते ही मा. प्रमिलताई जी मुंजे वहाँ पहुँची। वं. मौसी जी को 'मेडिकल कॉलेज' अस्पताल में भरती किया गया। स्थिति बहुत नाजूक थी। सभी को सूचनाएं दी गयी। ताई जी भी वहाँ पहुँची, मा. प्रमिलताई मेढे भाग्यनगर (हैदराबाद) से आयी। वं. मौसी जी ने पूछा "आप अपने कार्यक्रम छोडकर कैसी आयी?" अपनी बीमारी से भी अधिक चिंता मौसी जी को कार्य की थी।

थोडे दिन मौसी जी के साथ रह कर ताई जी वापिस गयी। वं. मौसी जी का स्वास्थ्य बिगडने पर फिर एक बार आना हुआ। उनके स्वास्थ्य का आलेख ऊपर नीचे हो रहा था। ताई जी के पोती का विवाह कल्याण में 27 नोव्हेंबर को था। उसके पश्चात् वह कुछ दिन मौसी जी के पास रहने के लिये आनेवाली थी। परंतु काल किसकी राह देखता है? ताई जी विवाह की तैयारी में जुट गयी थी। मंगल कार्यालय में 'शुभमंगल सावधान' हुआ और मा.मोरोपंत जी ने ताई जी को बताया - "ताई जी, वं. मौसी जी नही रही।' उन्होंने ही तिकीट की व्यवस्था करके रखी थी अतः शीघ्र ही वे नागपूर के लिये चल पडी। कोल्हापूर आदि स्थानों से सेविकाएं आ पहुँचे इसलिये अंत्यसंस्कार दूसरे दिन अर्थात् 28 नोव्हेंबर को सायं 4 बजे निश्चित हुआ। देवी अहल्या मंदिर से पार्थिव उठाया गया। उसके पूर्व वं. मौसी जी की इच्छानुसार ताई जी को वंदनीय प्रमुख संचालिका घोषित किया गया। ताई जी अब वं. ताई जी बनी।

फूलों से सजाये गये ट्रक पर मौसी जी का पार्थिव रखा गया। सैंकडों महिलाएं उनकी अंत्ययात्रा संम्मिलित हुई। अपने देश में किसी महिला की यह

प्रथम ही अंत्ययात्रा होगी की जिसमें महिलाएँ बडी मात्रा में सम्मिलित हुईं। अंत्ययात्रा शक्तिपीठ पहुँची। वहाँ ध्वजारोहण के पश्चात् प्रार्थना हुई। वं. मौसी जी को अंतिम प्रणाम दिया गया। ध्वजावतरण के पश्चात् अंबाझरी स्मशानभूमि में पार्थिव तेजतत्त्व में समा गया। अब रही केवल उनकी स्मृतियाँ।

वं. ताई जी के मन में मौसी जी की सैंकडों स्मृतियाँ मंडरा रही थी। उनके साथ किया हुआ पाली का प्रवास, कोंकण का प्रवास। वर्ग सम्मेलन में सान्निध्य। कितनी स्मृतियाँ थी। वं. ताई जी के मन में आया की यह गुरूतर दायित्व वह कैसे निभा पायेगी? उनका समाधान करनेवाली तो मौन हुई थी। अब वं. ताई जी को हमेशा वह रामकथा का प्रारंभ जिस श्लोक से करती थी वह श्लोक -

क्व सूर्यप्रभावो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः
तितिर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।

स्मरण आया और प्रामाणिक प्रयत्नों के कारण यश प्राप्त होता ही है यह सोचकर अपनी पूरी शक्ति के साथ यह पक्षिणी राष्ट्रकार्याकाश में विहार करने सिद्ध हुई।

ताई जी - वंदनीय प्रमुख संचालिका

वं.ताईजी ने प्रमुख संचालिका का कार्यभार संभाला और मा. प्रमिलताई जी मेढे ने प्रमुख कार्यवाहिका का। पिछले कुछ वर्षों से वे निरंतर मौसी जी के साथ प्रवास कर रही थी। जैसे ही प्रधान कार्यालय हेतु देवी अहल्या मंदिर खरीदा गया वैसे ही उसकी व्यवस्था की दृष्टि से प्रमिलताई जी वहाँ रहनेके लिये आयी थी। वं. मौसी जी के साथ वह प्रवास में भी जाती थी। मौसी जी जाने के थोडे पूर्व ही उन्होंने कार्य हेतु समयपूर्व सेवानिवृत्ति ली थी। वं. ताई जी की आयु इस समय लगभग 68 वर्ष की थी। नागपुर का वायुमंडल उनके स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नही था। इस आयु में उसका स्वीकार कठिन था। अतः वह पुणे से प्रवास करेगी और दो तीन माह में कुछ दिन आकर नागपुर में रहेगी यह निश्चित हुंआ।

प्रथम उद्‌बोधन

दिनांक 9 डिसेंबर को वं. मौसी जी के तेरहवे दिन श्राद्ध हुआ और पश्चात् वं. मौसी जी के प्रति श्रद्धाजंलि का प्रकट कार्यक्रम दीनानाथ विद्यालय के प्रांगण में हुआ। प्रमुख संचालिका के रूप में वं.ताई जी प्रथम ही सार्वजनिक मंच पर आयी। उसके पश्चात् उनका एक बौद्धिक भी हुआ। पुणे के 'कौशिक' की रौनक अभी और भी बढ गयी क्यों कि अभी वं. प्रमुख संचालिका ताई जी वहाँ रहती थी। '1360 कौशिक चिमणा गणपति के पास' इस पते पर अनेक पत्र आने लगे।

वं. मौसी जी के तेरहवे दिन के श्राद्ध के समय सभी प्रमुख बहनें आयी थी। अभी तक सभी उस दुःख से बाहर नही आये थे। फिर भी कार्य की योजना आवश्यक ही थी। सभी अधिकारियों के साथ बैठक हुई। वं. ताई की ही शाखा की बकुळ नातु अब बकुळ देवकुळे, प्रमिलताई जी मुंजे इन दोनों को सहकार्यवाहिका, मा.कुसुमताई जी को बौद्धिक प्रमुख, मा. सौ. प्रभाताई देशपांडे को शारीरिक शिक्षण प्रमुख और मा. ताई अंबर्डेकर को निधि प्रमुख, मा. वहिनी गोखले को सह निधि प्रमुख, मा. सुशीलताई महाजन सहबौद्धिकप्रमुख का दायित्व दिया गया। प्रत्येक प्रांत के एक एक पालक अधिकारी थे।

कार्य अपनी गति से आगे बढ रहा था। आपात्काल के पश्चात् उत्साह भी अधिक था। स्थानस्थान से समिति कार्य की आवश्यकता प्रतीत हो रहीं थी। इस आपात्काल में सेविकाओं द्वारा निभायी गयी महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण समाज का महिलाओं के प्रति देखनेका दृष्टिकोण ही बदल गया।

समिति का कार्य अभी उत्तर में जम्मूकश्मीर तक दक्षिण के सभी प्रांतो में चल रहा था। असम (पूर्वांचल) के साथ संपर्क हो गया था। परंतु स्वतंत्र शिक्षा वर्ग होते तक वहाँकी बहनें वर्ग हेतु दिल्ली आती रहीं। नागपूर से बहनें मणिपुर में शिबिर हेतु गयी थी।

संगठन के नये दायित्व के साथ घर में भी एक नया दायित्व वं. ताई जी को प्राप्त हुआ, परदादी का। वसंतराव जी के बेटे उमेश को बेटा हुआ, उन्हें परपोता हुआ। यह समाचार आया उस समय पुणे समाचार पत्र के पत्रकार श्री. वि. ना. देवधर जी ताई जी प्रमुख संचालिका बनी इसलिये साक्षात्कार लेने आये थे।

शाखा यह मेरी संजीवनी

वं. ताईजी पुणे में जब भी रहती थी, प्रति दिन किसी न किसी शाखा में जाने का क्रम था। छोटी छोटी शाखाओं पर भी वह जाती थी तब वहाँकी सेविकाओं को आनंद भी होता था और संकोच भी! परंतु ताई जी कहती थी, 'शाखा यह मेरी संजीवनी है। मन के तनाव, बेचैनी, उदासी, शाखा में आने से कम होते हैं। मन पुनः स्वस्थ, स्थिर होता है। अधिक सक्रिय होता है। मैं प्रथम सेविका हूं, बाद में प्रमुख संचालिका! सेविका के नाते शाखा में नित्य आना यही अपना प्रमुख कर्तव्य है।'

प्रचार अभियान

संगठनकार्य ताई जी के लिये नया नही था। फिर भी इस जिम्मेदारी के कारण हर दिन कहीं की न कहीं की समस्या सामने आती थी। समिति के ही विभिन्न प्रतिष्ठानों को भी मार्गदर्शन करना था। इस नये दायित्व के साथसाथ ही ताई जी देवी अहल्याबाई स्मारक समिति, नागपुर एवं देवी अष्टभुजा मंदिर - वर्धा की विश्वस्त, रानी लक्ष्मीबाई स्मारक समिति, नाशिक की अध्यक्षा बनी। श्रीशक्तिपीठ का स्थान 1965 के लगभग खरीदा था। वं. मौसी जी के देहावसान के पूर्व वहाँ तीन कमरे बनाये गये थे। उद्योग मंदिर प्रारंभ हुआ था।

अब उसी स्थान पर वं. मौसी जी का स्मारक निर्माण करने की योजना बनी। वं.मौसी जी के वर्षश्राद्ध के समय समिति कार्य की जानकारी सभीको हो इसलिये वं.ताई जी के मार्गदर्शन में एक 'प्रचार अभियान' निश्चित किया गया। उसके पत्रक वितरित किये गये। सेविकाओं ने घर घर संपर्क किया।

वं. मौसी जी के वर्षश्राद्ध के दिन अनेक कार्यकर्ता बहनें आयी थी। वं. मौसी जी के पुत्रों ने देवी अहल्या मंदिर में ही श्राद्ध करने का या प्रसाद भोजन देने का सोचा था। थेयारी पूर्ण हुई और अचानक केळकर परिवार में किसीका देहांत होने के कारण श्राद्ध नही हो पाया, पर स्मृतिदिन का कार्यक्रम यथावत् हुआ। इंदौर के आयुर्वेदाचार्य रामनारायण शास्त्री प्रमुख वक्ता थे। श्राद्ध के समय प. पू. बालासाहब जी प्रवास में थे अतः वर्षश्राद्ध के समय वे अगत्यपूर्वक उपस्थित रहे। वं. ताई जी का उद्बोधन हुआ।

संकल्प दिन -संपर्क दिन

वं. ताई जी की उपस्थिति में संपन्न हुई अखिल भारतीय बैठक में प्रचार अभियान का वृत्त आने के पश्चात् वं.मौसी जी का स्मृतिदिन 'संपर्क दिन' के रूप में मनाने का निर्णय हुआ। कुछ वर्षों पश्चात् यह दिन अधिकतम उपस्थिति दिन के रूप में लेनेका तय हुआ। वैसे ही वं. मौसी जी का जन्मदिन संकल्प दिन के रूप में संपन्न करने का भी निर्णय हुआ। उस दिन शाखा में प्रमुख संचालिका प्रणाम के पूर्व वं. मौसी जी को "आद्य प्रमुख संचालिका प्रणाम" देना भी तय हुआ।

राखी एक सूत्र

वं. ताई जी प्रमुख संचालिका बनने के बाद 1979 में समिति की जुलै में प्रथम अखिल भारतीय अर्धवार्षिक बैठक हुई तब ताई जी ने उपस्थित सभी बहनों को राखी बांधी। राखी हिंदुत्व का एक सूत्र। मानव मानव को प्रेमधागों में बाँधने का यह सूत्र उन्हें सुंदर प्रकार से अवगत था। उनकी ऋजुता के कारण मनुष्य अपने आप उनकी ओर खींचा जाता था। वे प्रतिवर्ष हजारों राखियाँ बनाती। प्रवास में भी उनके पास रेशीम - लाल बाना, केसरिया धागा और छोटी कैंची अवश्य रहती। इस बैठक में समापन के पश्चात् उन्होंने प्रत्येक सेविका को राखी बांधी। तबसे प्रतिवर्ष बैठक समापन के दिन राखी बांधना प्रारंभ हुआ। ताई जी द्वारा बांधी गयी राखी कभी कभी दूसरे वर्ष की बैठक

तक हाथ में बंधी रहती थी। बैठक में कोई सेविका नही आयी तो ताई जी उसका स्मरण कर उस क्षेत्र की किसी बहन के पास राखी दे देती। फिर सेविकाएं 'ताई जी उसके लिये भी' ऐसा कहते कहते 25 राखियों का गुच्छ ही ताई जी से लेकर जाती। कभी बैठक में पहुँचना संभव नही हुआ ऐसी बहन किसी को संदेशा देती ताई जी से मेरे लिये राखी ले आना। मोतीबाग संघ कार्यालय में हमेशा हजारों हजारों राखियाँ ताई जी बना कर देती थी। कुछ बहनें उनके घर आकर रेशम आदि लेकर जाती और राखियाँ बना कर लाती। ताई जी जाने के पश्चात् भी यह क्रम चालू था। अपने अडोसपडोस में रहनेवाले व्यक्ति से लेकर रिक्षावालों तक सभीको वह राखी बांधा करती। कामायनी जैसी अपाहिज व्यक्तियों के लिये काम करनेवाली संस्थाओं में भी वह राखी बांधकर आती। वह धागा तो केवल प्रतीक था। वास्तव में उसके पीछे उनका स्नेहमय हृदय था। वह सेविकाओं का रक्षा कवच था। उनकी सारी तपस्या उनका पुण्य उस धागे में समाकर सेविका की रक्षा करता।

श्री शक्तिपीठ

श्री शक्तिपीठ भवननिर्माण का दायित्व मा. प्रमिलताई जी मुंजे को दिया गया। वहाँ वं.मौसी जी का पुतला बनाने का निर्णया लिया गया। श्रीशक्तिपीठ की अपनी स्वतंत्र कार्यकारिणी थी। वं.ताई जी जब भी नागपुर आती, समिति के कार्यक्रमों के साथ देवी अहल्याबाई स्मारक समिति एवं श्री शक्तिपीठ दोनों प्रतिष्ठानों की बैठकें अवश्य होती। जिससे ताई जी की अनुपस्थिति में क्या हुआ यह उन्हें पता चलता।

वं. मौसी जी की रामायण पर आत्यंतिक श्रद्धा थी अतः विशेष रूप से रामायणकक्ष निर्माण कर, रामायण विषयक विविध पुस्तकों का संग्रह करना, कोई विशेष अध्ययन कर रहा हो तो उसे शिष्यवृत्ति देना आदि निर्णय ताई जी की उपस्थिति में हुएं। समर्थ रामदास स्वामी जी कहते है "रामकथा ब्रह्मांड भेदून पैलाड न्यावी" वं. मौसी जी का भी यही आग्रह था। उसी कारण वर्षप्रतिपदा के समय शाखाशाखाओ में श्रीरामजन्मोत्सव होता है। बहनें रामायण पर प्रवचन करती है। वं. मौसी जी स्वयं तो रामायण प्रवचन करती थी पर उन्होंने वं. ताई जी से लेकर अनेक बहनों को रामायण प्रवचन हेतु प्रेरित किया। बहनों के प्रवचन का स्तर अच्छा हो, उसमें एकरूपता आये, इस दृष्टि से 1988 में एक रामायण अभ्यासवर्ग श्रीशक्तिपीठ में हुआ। वं.ताई जी एवं

पुणे के श्री. ग. द साठे इस वर्ग में मार्गदर्शक थे। कौन सी पुस्तकें पढना है? कौन से प्रसंग का कालानुरूप विवरण करना है आदि बाते तय करना था। डॉ.नीलाताई जोशीराव इस वर्ग की संयोजिका थी। तबसे आज भी वं. मौसी जी के स्मृतिदिन के उपलक्ष्य में वहाँ रामायण अभ्यासवर्ग होता है।

रानी लक्ष्मीबाई भजन मंडळ

वं. मौसी जी कभी प्रवास में पुणे गयी थी तब उन्होंने सबनीस मास्तर जी का भजन सुना वह उन्हें पसंद आया। इस माध्यम से भी अनेक बहनें हमसे जुड सकेगी ऐसा उन्हें प्रतीत हुआ। श्री. सबनीस मास्तर वं. मौसी जी के निमंत्रण का स्वीकार कर नागपुर आये और भजनवर्ग लिया। 1957 में रानी लक्ष्मीबाई भजन मंडळ प्रारंभ हुआ । 15 दिन सिखाकर वे वापिस गये। उसके पश्चात् बहनें वर्षभर अभ्यास करती थी। हर वर्ष नागपुर आकर 15 दिन वे भजन सिखाने आते थे और बाद में वहिनी गोखले, माई मराठे आदि कुछ बहनें वर्ष भर अभ्यास लेती थी। निश्चित समय पर भजन प्रारंभ करना, निश्चित समय पर समाप्त करना, वहाँका प्रसन्न वातावरण, चपले आदि क्रम से रखना इत्यादि कारणों से बहनें आकृष्ट हुई। उनके गीत की सांघिकता के कारण लोग उन्हें कार्यक्रम हेतु आमंत्रित करने लगें। स्वेच्छा से समर्पित मानधन से धनसंग्रह होने लगा। शिक्षिकाएं समिति से प्रेरित थी। अतः उन्होंने विचार किया कि यह धन समिति कार्य हेतु वं. मौसी जी को समर्पित करना ठीक रहेगा। आज भी वही क्रम है। नागपुर में भजन मंडल की 32 शाखायें है। केवल नागपुर में नही तो चंद्रपुर, जळगाव, चेंबुर, पालघर, पनवेल आदि स्थानों पर भी इसकी शाखाएँ है। भजन मंडल की सब बहनें भी ताई जी से मिलने आतुर रहती। जब भी ताई जी नागपुर आती उनके साथ बैठक का दिन निश्चित किया जाता था। ताई जी उनके निरपेक्ष भाव से प्रभावित थी। हमेशा उनकी प्रशंसा करती थी। 1982 में भजन मंडल के रौप्यमहोत्सव कार्यक्रम का देवी अहल्या मंदिर में आयोजित किया था। ताई जी पूर्ण समय उपस्थित थी। समापन में गीतामंदिर के पूज्य स्वामी जी दर्शनानंद जी एवं वं. ताई जी का मार्गदर्शन हुआ। उसके पश्चात् त्रितपःपूर्ति हेतु अखंड हरिनाम सप्ताह हुआ। लगभग 100 वारकरी अहल्या मंदिर में पूरा समय रहे थे। उस कार्यक्रम के लिये भी ताई जी पुणे से आयी थी। उनके आनेसे सभी बहनों को अपनी माँ ही इस कार्यक्रम में उपस्थित है, अब अपना कार्यक्रम निर्विघ्न होगा ऐसा संबल मिलता था।

जशपुरनगर में

पहले कुछ वर्षों तक कुछ स्थानों पर प्रमिलताई जी उनके साथ जाती थी। कभी प्रांत बैठक, कभी कुछ अभ्यासवर्ग, कभी किसी जिले का प्रवास, मे-जून में वर्गों के प्रवास के कारण समय पर लगा कर उडता रहता। 1980 में छत्तीसगढ का वर्ग कल्याणाश्रम का स्थापनास्थली जशपुरनगर में हुआ।मा. लीलाताई वाकणकर वर्ग की व्यवस्था हेतु वहीं थी और धार शाखा की लीलाताई पराडकर ने अपना जीवन ही कल्याणाश्रम के कार्य को समर्पित किया। वे बाग में रहती थी। ताई जी और प्रमिलताई जी साथ गये थे। प्रवास थोडा कठिन था। प्रमुख संचालिका के आगमन से वहाँकी बहनें खुश थी। ताई जी को भी भारत के एक अलग क्षेत्र का लुभावना दर्शन हुआ। ताई जी के सामने उन्होंने अपने नृत्य प्रस्तुत किये।

जीजामाता स्मारक समिति, पुणे

नाशिक, नागपुर, मुंबई, वर्धा, आदि स्थानों पर समिति की प्रेरणा से प्रतिष्ठानों का निर्माण हुआ था। पुणे में भी एक प्रतिष्ठान हो ऐसी ताई जी की स्वाभाविक इच्छा थी। अतः जिजामाता स्मारक समिति का गठन हुआ। सुमतीबाई चितळे (जिजी) को उन्होंने उसका अध्यक्ष बनाया। जिजी के मन में ताई जी के प्रति नितांत श्रद्धा थी। अपनी छोटी बहन के कारण वह उनके संपर्क में आयी थी। वं. ताई जी ने गोकुळाष्टमी के दिन उनका कृष्णचरित्र पर प्रवचन सुना। 'आप विषय अच्छा रखती हो अब अध्ययन बढाईये' ऐसा कहकर उन्हें बाळशास्त्री हरदास जी का लिखा श्रीकृष्ण चरित्र और भी कुछ पुस्तकें दी। तब से वह ताई की शुभेच्छुक बन गयी थी। अतः यह अध्यक्षपद जिजी ने सहर्ष स्वीकार किया। विजयादशमी 1979 में जीजामाता स्मारक समिति का शुभारंभ हुआ। पुणे यह जिजामाता की कर्मभूमि। शिवाजी महाराज के अचानक हमले से स्वयंको बचाने के प्रयास में जहाँ अपनी चार उंगलियाँ शाहिस्तेखान को गवानी पडी थी वह लाल महल पुणे का ही। अतः यहाँ के प्रतिष्ठान को जिजामाता स्मारक समिति यह नाम उचित ही था। हिंदुस्थान जागरण ने शुक्रवारपेठ में नातुबाडा ही खरीद लिया था। ताई जी के घर में ही बैठक हुई और ताई जी ने इच्छा प्रकट करते ही उन्होंने समिति हेतु स्थान देने का निर्णय किया और जीजामाता भवन का निर्माण हुआ। पुणे की शाखाशाखाओं ने निधिसंकलन किया। पांचाली शाखा की सेविकायें परिचित घरों में विवाह,

उपनयन, ऐसे घरेलु कार्यक्रमों में मिठाइयाँ एवं नमकीन बनाकर देती थी। रसोई घर की व्यवस्था देखती थी और उससे प्राप्त राशि जीजामाता स्मारक समिति को समर्पित करती। उसीसे पंखे, कुर्सियाँ आदि की व्यवस्था की गयी। आज जीजामाता में शिशु मंदिर, उद्योग मंदिर और वाचनालय चलता है। आज इस वाचनालय ने 'ब' वर्ग प्राप्त किया है। प्रतिवर्ष उद्योजिकाओं को प्रोत्साहन देने हेतु 'उद्योजिका ' इस नाम से नाममात्र शुल्क लेकर एक मेला भी लगाया जाता है।

अन्यान्य प्रांतों में भी श्री शक्ति प्रतिष्ठान - कर्णावती (गुजरात), मंगेर मंगलम् - चेन्नई - (तमिलनाडु), सुकृपा - बंगलोर - (कर्नाटक), रुद्रम्मा स्मारक समिति - भाग्यनगर - (आंध्रप्रदेश), निवेदिता निलयम् - मथुरा (उत्तरप्रदेश), जीजामाता स्मारक समिति - दिल्ली, कित्तुर चेन्नम्मा स्मारक समिति-सोलापुर,महिला कला निकेतन - नागपुर- आदि प्रतिष्ठानों के माध्यम से विविध समाजोपयोगी प्रकल्प वं. ताईजी के कार्यकाल में शुरु हुएं।

निष्ठा यह तारक शक्ति

26 से 28 डिसेंबर 1980 में बंगलोर में समिति का अखिल भारतीय एकादश सम्मेलन हुआ। कोंकण के रत्नागिरी की सेविका सौ. निर्मलाताई (लिमये) गोखले विवाह हो कर धारवाड में गयी और उन्होंने कर्नाटक में समिति कार्य का बीज बोया। बंगलोर में बहनों की अच्छी टोली थी अतः सम्मेलन स्थान बंगलोर तय हुआ। वं. ताई जी प्रमुख संचालिका बनने के पश्चात् का यही विशाल अखिल भारतीय कार्यक्रम था। उनके शांत, स्निग्ध चमकदमकविरहित व्यक्तित्व की यह एक तरह की कसौटी थी। नेतृत्वविषयक अपेक्षाएँ और कुतुहल सभीके मन में था। सम्मेलन के दो दिन पूर्व वं. ताई जी वहाँ पहुंची थी। सम्मेलन शंकरपुरम् में था। उस क्षेत्र में पास-पास के 7 मंगल कार्यालय निवासहेतु लिये थे। उस समय निवास व्यवस्था मा. शांताक्का (वर्तमान प्रमुख कार्यवाहिका) के पास थी। वं. ताई जी ने उनसे बातचीत की और प्रत्येक निवासस्थान की रहने की, की पानी की, ओढनेबिछाने की पर्याप्त व्यवस्था है या नही यह सब देखा। ठंड है अतः स्नान के लिये गरम पानी की व्यवस्था है या नही यह भी पूछा। प्रबंधिकाओं के साथ बातचीत कर उनकी भी सुविधाओं के बारे में पूछताछ की और सम्मेलन के पश्चात् उनका अभिनंदन किया।

सम्मेलन के विविध कार्यक्रमों में पथसंचलन तथा शोभायात्रा यह एक प्रभावी कार्यक्रम रहता है। उसके अनुशासन का, घोष के साथ सेविकाओं के शान से चलने का, गणवेशधारी सेविकाओं की संख्या का समाज पर और संमेलनार्थियों के मन पर भी प्रभाव होता है। हम भी ऐसे शानदार कार्यक्रम में सहभागी है इसका एक गर्व मन में रहता है। सम्मेलन के दूसरे दिन इस कार्यक्रम की योजना थी। परंतु उसके लिये दिया हुआ प्रशासकीय अनुमति का प्रार्थना पत्र अस्वीकृत होकर वापिस आया था। अब क्या होगा? पुलिस आयुक्त के पास सब चक्कर काट रहे थे। परंतु 'न' 'हाँ' में परिवर्तित नही हो रहा था। आयुक्त महोदय ने रात को 10 बजे पुनः मिलने हेतु बुलाया था। मा.रूक्मिणी अक्का, रूक्मिणी अक्का के भाई नरहरि जी और वहाँ की कुछ बहनें साथ में गये। जाने से पूर्व वे ताई जी से आशिर्वाद लेने आयें। सभीने पैर छुएँ। ताई जी ने कहा- 'निश्चिंत मन से जाइये। काम हो जायेगा। अपना कार्य ईश्वरीय है। बाधाओं के बादल आते जाते रहेंगे ही। जाइये, यशस्वी हो कर आईये। आने पर मुझे बताइये। दरवाजा खुला ही है।' घडी दौड रही थी। ताई जी निश्चल मन से बैठी थी। रात को 11 बजे स्वीकृति पत्र लेकर सब लौटें। उन्होंने श्रद्धाभाव से ताई जी को, उनके दृढ आत्मविश्वास को प्रणाम किया। यह दृढ आत्मविश्वास कैसे आया था-कार्य के प्रति अतीव निष्ठा से। वे हमेशा कहती थी *"संगठन पर निष्ठा रखिये । संगठन से एकनिष्ठ रहने की आयु बढाते रहिये।संगठन के प्रति निष्ठा यह तारक शक्ति है। उसी के आधारपर संगठन का गौरवमय मार्गक्रमण होगा।"* उनके इस वचन की प्रत्यक्ष अनुभूति आज सबको हुई थी। संगठन का नेतृत्व आत्मविश्वास की तेजस्विता से समिति सेविकाओं के मन में प्रस्फुरित हुआ,स्थापित हुआ। यह सम्मेलन बहुत ही सुव्यवस्थित हुआ। शोभायात्रा में सुशोभित हाथी था, घोडे थे, स्कूटर का एक गण, उत्तम घोष गण और इस सम्मेलन में विशेष रूप से रंगीन फोटो निकाले गयें।

इस सम्मेलन में प.पू. बालासाहब जी, मा. भाऊराव जी का मार्गदर्शन हुआ। गीताबेन शहा प्रमुख अतिथि थी। ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी का ' मतांतरण एक राष्ट्रीय समस्या' इस विषय पर अत्यंत ओजस्वी भाषण हुआ। दक्षिण में लगातार हुएं भाग्यनगर और बंगलोर सम्मेलन से मा.सीतालक्ष्मी जी, मा.रूक्मिणीअक्का, मा.शांताक्का आदि सक्षम कार्यकर्ता उभरकर आयें। ।

धर्मांतरण एक राष्ट्रीय आपत्ति

1981 में मीनाक्षीपुरम् में पूरे ग्राम का सामूहिक धर्मांतरण हुआ। संपूर्ण देश उद्वेलित हुआ। इस वर्ष की बैठक में समिति ने धर्मांतरण की समस्या पर जनजागरण करने का निश्चय किया। इस हेतु धर्मांतरण की समस्या का विवरण करनेवाला पत्रक छापकर बडी संख्या में वितरित किया गया। नवरात्रि की प्रतिपदा को दोपहर 3 से शाम 7 बजे के बीच एकत्रित आकर प्रारंभ में 'सर्वमंगलमांगल्ये ...' श्लोक बोलकर उसके पश्चात् -

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।

इस श्लोक का 108 बार पठन करना और अंत में पत्रक समझाना ऐसी योजना थी। दुर्गोत्सव, शारदोत्सव में यह विषय रखने का आग्रह किया गया। वक्ताओं की टोली थेयार की गयी। विविध कार्यालयों में, भिन्नभिन्न सार्वजनिक स्थानों में पत्रक का वितरण किया गया। अनेक वर्षों से समिति के शिक्षा वर्गों में धर्मांतरण एक राष्ट्रीय आपत्ति यह विषय रखा ही जाता था। आज भी रखा जाता है। (1986 के सम्मेलन में इस विषय पर एक प्रदर्शनी भी तयार की गयी थी।)

खड्गधारिणी तुम्हें देत मानवंदना

1982 में रानी लक्ष्मीबाई का 125 वाँ स्मृतिवर्ष कार्यक्रम। झाँसी उनकी कर्मस्थली अतः एक कार्यक्रम वहाँ 19-21 नोव्हेंबर 1982 को लेनेका निश्चय हुआ। रानी लक्ष्मीबाई की जीवनी पर एक प्रदर्शनी थेयार की गयी उसमें पद्मश्री हरिभाऊ वाकणकर जी की अहं भूमिका थी। रानी की प्रतिमा की शोभायात्रा निकाली गयी। सुलभाताई ने 'गीतलक्ष्मी' यह गीत और निवेदनयुक्त कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कवियत्री सम्मेलन, परिसंवाद आदि कार्यक्रम हुएं। मा. उषाताई चाटी उस प्रांत की पालक अधिकारी थी। अतः उनका वहाँ नित्य प्रवास होता था। मा. ताई अंबर्डेकर, लीलाताई वाकणकर, रेखाताई राजे पूर्वतयारी हेतु वहाँ रहे। महिलाएं इतना बडा राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम ले पायेगी ऐसा वहाँ के लोगों को विश्वास ही नही था। काफी परेशानियाँ हुई। उस समय भी ताई जी के धैर्य और संयम की कसौटी थी। अन्य लोग बेचैन थे परंतु वं. ताई जी शांत थी। उन्होंने कहा ईश्वरी कृपा से सब कुछ हो जायेगा, वैसेही हुआ। रानी की कर्मभूमि का दर्शन वं. ताई जी को रोमांचित

कर गया। अनेक जेष्ठ श्रेष्ठ महानुभव इस कार्यक्रम में आये थे। केवल महिलाओं ने आयोजित किया हुआ और अत्यंत यशस्वी ऐसा यह झाँसी का प्रथम कार्यक्रम है ऐसी प्रतिक्रिया रही। इस वर्ष का 'राष्ट्र सेविका' हिंदी का अंक झाँसी की रानी पर ही प्रकाशित हुआ।संपादन किया डॉ. शरदरेणु शर्मा, मथुरा ने।

रानी भवन, नाशिक का रौप्यमहोत्सव

'रानी भवन, नाशिक' यह समिति निर्मित प्रथम प्रतिष्ठान इसका रौप्यमहोत्सव इसी वर्ष हुआ। वहाँकी अपनी बहनों ने श्री. शंकरराव अभ्यंकर जी की सहायता से रानी की जीवनी पर स्लाईड शो बनाया। निशा और शीला गायधनी इन दोनों ने संकल्प कर 100 स्थानों पर निवेदनसहित दिखाया। विद्यालयों में तीन तीन दिनों के स्वसरंक्षण के शिविर लिये गये। स्मारिका प्रकाशित हुई, प्लास्टर ऑफ परिस में रानी के छोटे पुतले बनाये गयें। स्टीकर्स छपें। तीन दिन का कार्यक्रम हुआ। उद्योग मंदिर का काम करनेवाली तांबे, पाटणकर आजी, ताई जी की राह देखती रहती थी। रानी भवन में कामकाजी महिलाओं का वसतिगृह, झूला घर, शिशु मंदिर, उद्योग मंदिर आदि विविध उपक्रम प्रारंभ हुएं है। दिल्ली से मा.सिंधुताई फाटक, मा. पौर्णिमा जी सेठी आयी थी। यह संपूर्ण कार्यक्रम वं. ताई जी की अध्यक्षता में हुआ।

अखिल भारतीय द्वादश संमेलन

1983 में कर्णावती में अखिल भारतीय द्वादश सम्मेलन हुआ। गुजरात का काम काफी पुराना है।वहाँसे सुमनताई रावल आदि सेविकाएं 1946-47 में वर्ग के लिये पुणे आयी थी। जिजी काणे और उनकी कन्याओं ने ही काम प्रारंभ किया। निरंतर बैठकें हुईं। स्थान आदि सब निश्चित हुएं। तयारियाँ जोरशोर से शुरू थी। शांताताई गजेंद्रगडकर रातदिन एक कर रही थी। सम्मेलन को केवल 7 दिन बाकी थे तब अचानक फोन आया कि आपके कार्यक्रम में प.पू. बालासाहब जी देवरस आ रहे हैं अतः हम आपको स्थान नही दे सकेंगें।निमंत्रण पत्र छप चुकें थें। कई स्थानों पर पहुँच भी गये थे, स्थान परिवर्तन के कारण फिर दुबारा छपवाने पडें। पहले जो निवासव्यवस्था आदि तय की थी वह बदलनी पडी। सम्मेलन में प्रदर्शनी लगायी थी मातृशक्ति की झलकियाँ। गुजरात के प्रसिद्ध संत एवं रामकथाकार पू. मुरारीबापू समापन

में प्रमुख अतिथि थे। उद्घाटन में मा.इंदिरा बेटी जी का आना तय था वह नही आ पायी तो राजमाता विजयाराजे सिंदिया जी ने ही (वह किसी अन्य कारणों से वहाँ आयी थी उनको आमंत्रित किया और वे भी आयी।) संमेलन का उद्घाटन किया। सुशोभन आदि दृष्टि से सम्मेलन अच्छा हुआ।मा. लक्ष्मणराव जी इनामदार सम्मेलन की काफी चिंता करते थे और उसकी यशस्विता के लिये प्रयासरत थे उस समय के विभागप्रचारक नरेंद्र मोदी जी आज के गुजरात के मुख्यमंत्री।

वनवासी कन्या छात्रावास का शुभारंभ

इसी सम्मेलन में उपस्थित थी सुदूर क्षेत्र की छोटा नागपुर गुमला के पास के वनवासी क्षेत्र की बहन जतरी कुजुर। समिति की एक कर्मठ कार्यकर्ता मा. सिंधुताई आठवले बिहार प्रांत की कार्यवाहिका के प्रयास से वह आयी थी। जतरी लगभग एक वर्ष तक नागपुर में देवी अहल्या मंदिर में रही। वहाँ योगासन आदि सिखकर थेयार हुई। वह जिसे क्षेत्र से आयी थी वहाँ रोज मतांतरण होता था और बडा गहरा ईसाईयत का प्रभाव था। वैसे तो 25 डिसेंबर को वह नागपुर में बहुत बेचैन हुई की यहाँ कुछ थेयारी कैसे नही खिसमस की यह बडा दिन हम धूमधाम से मनाते है। क्यों कि वह उसी ईसाईयत के वातावरण में पली बढी थी। घर एकदम दूर होने के कारण रोज आठ दस किमी.पैदल चलकर गुमला आकर बी.ए. तक पढी थी। धीरे धीरे सब बाथे वह समझ गयी और सम्मेलन के मंच पर उसने अपना मनोगत व्यक्त किया। अतीव बीहड क्षेत्र से आयी इस बहन ने 3000 लोगों के सामने बोलना यही अपने आप में एक अद्भुत बात थी।उसने बताया कि यहाँ आनेसे हमें अपना देश, संस्कृति, धर्म के बारे में पता चला। मैं बताती हूँ कि न मैं मेरा धर्म बदलूंगी, न मेरे गाँव में मैं मतातंरण होने दूंगी। वापिस जाकर वह कुछ वर्षों तक वनवासी कल्याणाश्रम के 'शबरी कन्या छात्रावास' में अधीक्षिका थी। आज वह एक जिला कार्यवाहिका के रूप में कार्यरत है। उसी समय बस्तर से भी दो तीन बहनें अहल्या मंदिर में आकर दो चार माह रहकर संस्कारवर्ग चलाना, रामायण की कहानियाँ बताना, कुछ कढाई काम आदि सीखकर वापिस जा रही थी। बस्तर में वापिस गयीं बहनों के कढाईकाम की सफाई देखकर कोसा व्यापारियों ने साडियों में कढाई काम की ऑर्डर दी थी। उस समय आयी हुई बुधरी, रायमती आदि बहनें आज भी बस्तर क्षेत्र में कल्याणाश्रम में कार्यरत है। बुधरी को तो 2007 में शासन की ओर से मिनी माता पुरस्कार

भी मिला है। बहनों की इस शिक्षा से सबके सामने एक विचार आया कि छात्रावास क्यों न चलाया जाय? सुमतीताई जवळेकर जी ने जशपुरनगर में मा.प्रमिलताई जी का प्रवास रखा कल्याणाश्रम के संस्थापक अध्यक्ष मा. बाळासाहेब देशपांडे जी से चर्चा हुई। वनवासी क्षेत्र में महिलाओं में काम की आवश्यकता प्रतीत हुई और जुलै 1984 को नागपुर वनवासी कन्या छात्रावास का शुभारंभ हुआ। जशपुरनगर से शेवंती और चंद्रपुर क्षेत्र की अन्य बहनें ऐसी 12 छात्रायें थी। आज यहाँ पूर्वांचल की 41 बहनें पढ रही है। अनेक बहनें पढकर वापस जाने के पश्चात् अपने अपने क्षेत्र में कार्यरत है। वं.ताई जी का सेविकाओं को सेवाकार्य का आग्रह था उसी कारण यह एक सेवा कार्य प्रारंभ हुआ। वं. ताई जी सेवा वस्ती में जाकर कार्य करने का नित्य आग्रह करती थी। वहाँ जाते समय किस प्रकार की वेषभूषा, व्यवहार हो उसके बारे में वे बारीकी से सूचना देती थी। उस वस्ती के लोगों के सुखदुख से समरस होने की आवश्यकता पर बल देती थी। अपने ही समाजपुरुष का कोई भी अंग दुर्बल, विकल रहना अपने लिये शोभादायक नही है ऐसा उनका स्पष्ट मत था। प्रत्येक शाखा ने कम से कम एक वस्ती से संपर्क करना चाहिये ऐसा उनका आग्रह था ।

मातृशक्ति के विविध रूप

सन् 1983 में वनवासी कल्याणाश्रम ने एक अभूतपूर्व कार्यक्रम लिया वनवासी बहनों का अखिल भारतीय सम्मेलन। मा. रामभाऊ गोडबोले कल्याणाश्रम कें संगठन मंत्री थे। वं, ताई जी के साथ उनका पुराना परिचय था। ताई जी के पुणे के पूर्वभाग के काम से वे भलीभाँति परिचित थे। उनका वं. ताई जी को आग्रहपूर्वक निमंत्रण रहा। इस सम्मेलन में आयी अनेक बहनों ने जीवन में पहली बार रेल देखी थी और उससे प्रवास किया था। कितनी बहनों के हाथों में बीडियाँ थी, हुक्का था, सबके वेश अलग थे, भाषा अलग थी पर स्वर एक था। गीत की धुन पर सबके पैर थिरकते थें।यह समाज उसके दारिद्रय और अज्ञान के कारण और हमारे हिंदू समाज की उदासीनता के कारण उपेक्षित रहा। मलेरिया की दवाई के लिये उन्हें अपना धर्म बेचना पडता था।उन बहनों के साथ बैठकर बाथे करने से ताई जी का मन उद्वेलित हो जाता था। इस सम्मेलन में तीन श्रेष्ठ शक्तियाँ एक मंच पर आयी थी। एक अनोखी शिक्षाविद् अनुताई वाघ - जिन्होंने कोसबाड के चराहगाह क्षेत्र में विद्यालय चलायें। चरवाहों को भेड, गाय, भैस, बकरी चराते समय वहीं

जमीन की पाटी बनाकर मूलाक्षर सिखाये थे। दूसरी थी रानी माँ गाईडिनिल्यू जिन्होंने गुरिला युद्ध से अंग्रेजों के दांत खट्टे किये थे, जिनको बंदी बनाने के बाद कई वर्षोंतक रस्सी से बांधकर रखा था, जिनका शौर्य, साहस देखकर पं. नेहरू जी ने रानी की उपाधि दी ऐसी श्रेष्ठ क्रांतिकारी महिला और तीसरी वं. ताई जी। तीनोंका भी मार्गदर्शन वनवासी बहनों को प्राप्त हुआ। तीन अलग अलग क्षेत्रों में शीर्ष बिंदुओं पर अधिष्ठित तीन महीयसी महिलाओं का यह मिलन चिरस्मरणीय रहा।

वं. उषाताई जी सहप्रमुख संचालिका

सन् 1984 -वं. ताई जी की आयु अभी 75 वर्ष की हुई थी। वैसे उनका स्वास्थ्य अच्छा था। कोई बीमारी नही थी। न रक्तदाब की शिकायत, न मधुमेह की बीमारी । अभी भी प्रवास में ऊपर के बर्थ पर चढने की उनकी तयारी रहती थी।साथ के व्यक्ति को ही उन्हें रोकना पडता था। उनके मन में अवश्य एक बात थी कि 'वे केंद्र कार्यालय में नित्य नही रह सकती है। मा.प्रमिलताई जी निरंतर प्रवास में। अपना देश ही इतना बडा है कि वर्ष में 365 दिन प्रवास करने के बाद भी अनेक क्षेत्र अछूते ही रह जाते है। उस समय भ्रमणध्वनि भी नही थें। यह सब विचार करते हुएं उन्होंने इस वर्ष एक नया पद निर्माण किया 'सह प्रमुख संचालिका' और यह पदभार वं. उषाताई जी चाटी को सौंपा।वह 'हिंदू मुलींची शाळा' में शिक्षिका थी।समिति की अखिल भारतीय गीत प्रमुख थी।मधुर और पहाडी आवाज की ईश्वरी देन उन्हें थी। वं. मौसी जी ने उत्तर प्रदेश के पालक अधिकारी का दायित्व दिया था अतः दीपावली और गर्मी की छुट्टियों में मे-जून वह उत्तरप्रदेश में ही बिताती थी। उनकी सासू जी भी समिति की सेविका थी। उषाताई यानि साक्षात् ऋजुता की मूर्ति। मिलनसार एवं सबको संभालनेवाली। देवी अहल्या मंदिर में इस वर्ष छात्रावास भी शुरू किया गया था। 12 लडकियों की जिम्मेदारी थी। मा. प्रभाताई, मा. प्रमिलताई मुंजे, मा. कुसुमताई साठे सभी कार्यालय में समयसमय पर आती ही थी फिर भी वहाँ एक निवासी और सतत यहीं चिंतन करनेवाले अधिकारी व्यक्ति की नितांत आवश्यकता थी। ताई जी ने उनकी सास अर्थात् ताई जी चाटी से निवेदन किया कि कार्य हेतु उषाताई को देवी अहल्या मंदिर में रहने की अनुमति दे। वह उन्होंने मान लिया और उषाताई का निवास देवी अहल्या मंदिर बना।

भारतीय श्री विद्यानिकेतन

वं. ताई जी के कार्यकाल में समितिने शिक्षा क्षेत्र में एक कदम आगे बढाया - भारतीय श्री विद्यानिकेतन इस शिक्षा प्रकल्प का निर्माण। तेजस्वी हिंदू राष्ट्र निर्माण करने में शिक्षा संस्थानों का अनन्य महत्त्व है। वं. मौसी जी की प्रेरणा से मुंबई में गृहिणी विद्यालय का प्रारंभ हुआ। कुछ उपक्रम भी अपनाये गये। परंतु उसको और व्यापक बनाने की दृष्टि से "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि" यह बोधवाक्य लेकर 1983 में भारतीय श्री विद्यानिकेतन का गठन हुआ। उसके उद्घाटन में मा.भाऊराव देवरस, मा. लज्जाराम जी तोमर के साथ वं. ताई जी भी उपस्थित थी। वं. मौसी जी का सिद्धान्त राष्ट्रनिर्माण में शिक्षक, लेखक, वक्ता, नेता, की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। यह वं. ताई जी भी मानती थी। और उनका नाम भी सरस्वती होने के कारण उनका मौलिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आज वह प्रतिष्ठान प्रगतिपथपर है जबलपुर की सिंधुताई रिसबूड की अध्यक्षता में सेवावस्तिओं में विद्यालय चल रहा है।

समिति का काम संगठन का है, उसका ध्येय है तेजस्वी हिंदू राष्ट्र का निर्माण।तेजस्विता निर्माण होती है संस्कारों से, शिक्षा से। वं. मौसी जी नित्य कहती थी कि नेता, वक्ता, शिक्षक और लेखक ये चार समाज के आधारस्तंभ हैं और वे चाहेंगें तो योग्य दिशा में समाज को मोड सकते हैं। स्त्री पर संस्कारों का दायित्व रहता है उसने नोकरी की, व्यवसाय किया, करियर किया तो भी घर और संतान ये उसके निसर्गदत्त दायित्व हैं अतः वह कार्य भी सुचारू रूप से कर पायें इस तरह की शिक्षा एवं संस्कारों की आवश्यकता है । उस दृष्टि से शिक्षा देनेवाले विद्यालय हो, पाठ्यक्रम हो यह भूमिका थी। इसी विचार से मुंबई में 1953 में गृहिणी विद्यालय भी प्रारंभ किया था। उसके माध्यम से अनेक पाठ्यक्रम, उपक्रम भी लिये गये थें। परंतु अभी प्रांत प्रांत में काम करने के विचार से 1984 में भारतीय श्री विद्या निकेतन का शुभारंभ हुआ। माँ को, मातृभूमि को सम्मानित करनेवाला ही यश, वैभव प्राप्त करता है। जो मातृभूमि को जानता है वहीं माँ की महिमा जानता है। दोनोंके प्रति बच्चों में आस्था निर्माण करनेवाली शिक्षा हो इस विचार से उसका ध्येयवाक्य निश्चित किया है "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि" । इस संदर्भ में मा. भाऊराव देवरस, मा. लज्जाराम जी तोमर, मा. प्रभाकरराव तेलंग आदि लोगों का बहुमूल्य मार्गदर्शन हुआ। प्रतिभाताई भावे (संस्कृत शास्त्री) को इसका

अध्यक्ष बनाया गया। आप 'लोकांची शाळा' में अध्यापिका थी। कुछ ही दिनों में बिलासपुर की मा. सुमतीताई जोशी ने सेवा से अवकाश लेकर इसी विषय को समय समर्पित किया था। इस विषय में उनका गहरा चिंतन था। परंतु संस्था का दुर्भाग्य की 1988 में ब्रेन कॅन्सर से उनका करुण अंत हुआ। नागपुर में एक विद्यालय प्रारंभ हुआ।

मा. प्रभाताई देशपांडे 'यशोदाबाई खरे अध्यापिका विद्यालय' में प्राचार्या थी। आप प्रयोगशील थी उस समय आपने बालमंदिर शिक्षिकाओं के एकत्रीकरण, शिशु सम्मेलन लिये। भारतीय श्री विद्यावर्धिनी इस नाम से विदर्भ में एक अलग संस्था प्रारंभ की गयी। उसमें मा. कुसुमताई गोखले, मृणालताई शेंदुर्णीकर,यवतमाळ, शैलाताई भागवत,अमरावती कार्यरत है। अनेक विद्यालय इससे संलग्न है।भारतीय श्री विद्या निकेतन इस नाम से जबलपुर में भी प्रतिष्ठान है वहाँ विद्यालय का अपना भवन है सेवावस्ती के बालकों के लिये विद्यालय चल रहा है। मा. सिंधुताई रिसबुड अनेक प्रयोगों के माध्यमों से उनमें सुधार ला रही है। मुंबई, महाड में भी कार्य चल रहा है। नागपुर में नंदनवन में शिशु ज्ञान मंदिर इस नाम से विद्यालय है। 2008 में 10 वी की प्रथम (टोली)बॅच उत्तीर्ण हुई। एक छात्रा गुणवत्ता सूचि में आयी और अन्य दो गुणवत्ता सूचि के निकट है। विद्यालय का परीक्षा फल शतप्रतिशत है अपना यह विद्यालय विना अनुदान तत्त्वपर चल रहा है।

भारतीय श्री विद्यानिकेतन सन् 1988 में संस्कृत वर्णमाला का सचित्र तक्ता तयार किया। विश्व में ऐसी सचित्र वर्णमाला प्रथम ही प्रकाशित हुई है।

तळजाई शिविर

संघ का महाराष्ट्र प्रांत का 35,000 लोगों का तळजाई में 14 से 16 जानेवारी 1983 में महाशिविर हुआ। उसके पश्चात् उसकी एक स्मारिका प्रकाशित हुई। उसमें वं. ताई जी एवं श्री. माजगावकर अतिथि थे। उस समय वं. ताई जी का भाषण सुनकर श्री. शिवराय तेलंग जी ने लिखा "ताई जी का भाषण अत्यंत तर्कसंगत था। कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन एवं उत्साह देनेवाला था। सन् 1936 से परिचय होते हुए भी वं.ताई जी की महानता आज समझ में आयी।"

अहं राष्ट्र हित में बाधक न बनें

वं. ताई जी इ.स.1979 में प्रवास में जबलपुर गयी थी। प्रमुख

संचालिका के रूप में उनका जबलपुर में प्रथम ही प्रवास था। अतः संघ परिवार के सभी संगठनों के साथ एक अनौपचारिक परिचयात्मक बैठक भी रखी थी। वं. ताई जी उस समय उतनी अच्छी हिंदी नही बोल पाती थी। सभी बंधु अपने मन की बात ताई जी को बता रहे थे। बैठक का वातावरण पारिवारिक अपनत्व से भरा था। सभी अनुभव कर रहे थे कि हम अपनी स्नेहमयी माता के साथ बैठे है। कोई औपचारिकता का भाव था ही नही। सभीकी बाते सुनकर वं. ताई जी ने अंत में अपनी बात रखी कि "मैं अच्छी तरह से हिंदी नही बोल सकती, पर आप मेरे अपने है। मेरे मन की बात सहज रूप से समझ पायेंगे। *हम सब एक विचार से अपने राष्ट्र गौरव के लिये कार्य कर रहे है। कभी हमारा एक दूसरे के साथ मन मुटाव हो सकता है। दूसरों की बात से हम सहमत नही हो सकते है। परंतु क्या एक परिवार के भाई बहनों में कभी मनमुटाव नहीं होता? फिर भी वह भूलते हुए सभी मिलकर परिवार के हित की ही बात सोचते है, करते है। इसी बात को हमेशा ध्यान में रखे। अपने अहं को राष्ट्र हित में बाधक न बनने दे।*" वं. ताई जी की सहज स्वानुभव की बातचीत का प्रभाव सभी चेहरों पर स्पष्ट दिख रहा था। सभी प्रसन्न थे। जबलपुर के श्री. चिंतामणी जी साहू ने मा. कुंदाताई सहस्रबुद्धे (कार्यवाहिका) को कहा कि बैठक का यह आयोजन बहुत ही अच्छा रहा। परिवार के सभी सदस्य अपनी माँ से अपने मन की बात कहने और उनका उचित मार्गदर्शन लेने के लिये आएं हो ऐसा लग रहा था।

सदिच्छाओं का बल

मूलतः कोंकण की सेविका सुमित्रा साठे विवाह हो कर सुमित्रा महाजन बनकर इंदौर गयी। वहाँ भी कार्यरत रही। उसकी क्षमता और रुचि देखकर वं. ताई जी ने उनको राजनैतिक क्षेत्र में जानेकी अनुमति दी। उन्होंने सुमित्रा जी को कहा, 'जा बेटा, जितनी ऊंची उडान भरनी है भर ले। तेरे पंखों को सभीकी सदिच्छाओं से बल मिलेगा।'

सक्ता का दीप जननी

हिंदु महिलाओं की मानसिकता स्त्री मुक्ति की दिशा में जाना धोखे का था। अतः भारतीय जीवनादर्शानुसार महिलायें विचार करें, इस दृष्टि से 1984 में मा. शेषाद्रि जी की उपस्थिति में 'भारतीय स्त्रीशक्ति जागरण' के

नाम से योजना का अनौपचारिक शुभारंभ हुआ। उस समय वं.ताई जी और मा. प्रमिलताई मेढे, मा. नाना ढोबळे, श्री. दादा बेंद्रे आदि उपस्थित थे। मा. लीलाताई सोहोनी को इसका दायित्व सौंपाया गया। 15 में 1988 को बी.एम.सी.सी. ठाणे में संपन्न परिवार बैठक में 'भारतीय स्त्री शक्ति' इस नाम से कार्य करने का निर्णय हुआ। उस बैठक में तथा भारतीय स्त्री शक्ति के 21 मे 1989 को हुजूरपागा में संपन्न प्रथम अधिवेशन में भी वं. ताई जी उपस्थित थी। समयसमय पर भारतीय स्त्री शक्ति की बहनें उन्हें मिलती थी।

राष्ट्र भावना से प्रेरित होकर काम करनेवाली महिला संस्थाओं की प्रतिनिधियों को समिति की एक केंद्रीय बैठक में आमंत्रित करने की योजना बनी। नागपुर की बैठक में उपस्थित श्रीमती मृदुला जी सिन्हा ने - भाजपा की वरिष्ठ पदाधिकारी - उस बैठक की स्मृति संजोते हुए वं. ताई जी के बारे में कहा की ताई जी के हृदय में ममता कूटकूटकर भरी थी। इसलिये सेविकाओं से मिलते समय दो हृदयों का मिलन होता था मस्तिष्क का नही। हृदय का जुडाव जोड को स्थायित्व प्रदान करता है। मस्तिष्क का जुडाव विवेक का जुडाव विशेष स्थिति की खोज में रहता है। वं. ताई जी की ममता ही हमारी एकता का आधार बन गयी। उनके परम स्नेह ने हम जोड रखा है।

उसी बैठक में उपस्थित श्रीमती स्वाती ताई शहाणे ग्राहक पंचायत की तत्कालीन अ. भा. सचिव कहती है उस बैठक में उपस्थित सभी को कुछ न् कुछ कहना था। विषय सभी की रुचि का था। वातावरण महिलाओं पर होनेवाले अत्याचार की घटनाओं से बडा गरम हुआ था। परंतु बैठक का नेतृत्व करनेवाली वं. ताई जी ने कुशलतापूर्वक सबको शांत किया।

वं. ताई जी अपने प्रवास में विविध क्षेत्र की कार्यकर्ता बहनों को नित्य मिलती थी। दिल्ली में परिवार संगठनाओं के महिला प्रतिनिधियों की एक बैठक में सभी महिलाओं ने समन्वय से काम करना चाहिये यह विचार रखा गया। इसी बैठक में नागपुर बैठक में सूत्रपात किये गये 'मातृकुल' की कल्पना पुनः प्रस्तुत की। दीर्घकाल तक दिल्ली में मातृकुल की बैठक होती थी।

भोपाल गॅस कांड

1984 डिसेंबर में भोपाल में एक बहुत बडा हादसा हुआ। युनियन कार्बाइड कंपनी के सयंत्र से गॅस रिसने के कारण वातावरण प्रदूषित हुआ था। अनेक लोगों की मृत्यु हुई। सैंकडो लोग अपाहिज हुएं। अपनी भी अनेक बहनें वहाँ रहती थी। मा. प्रमिलाताई काळे म. प्र. की कार्यवाहिका थी। संघ

के लोगों ने वहाँ भोपाल गॅसपीडित सहायता समिति स्थापन की थी। वं. ताई जी भी वहाँ गयी थी। उनकी उपस्थिति में गॅसपीडित बहनों को सिलाई मशीनें वितरित की गयी। उनके बच्चों के लिये वहाँ संस्कार वर्ग भी चलाया जा रहा था।

अमृत उत्सव यह मंगलमय

1985 में वं. ताई जी 75 वर्ष की हुई फिर भी उनकी चपलता, काम का उत्साह 18 वर्ष की तरुणी जैसा ही था। उनका प्रेमभाव ही संबल बनकर प्रत्येक को काम की प्रेरणा देता था। अतः ताई जी के अमृतमहोत्सव कार्यक्रम की योजना बनी। बैठक हेतु ताई जी नागपुर आयी थी - रामदासपेठ सायं शाखा ने कार्यक्रम लिया 26 जुलै को। कार्यक्रम का संचालन बाल सेविकाओं ने किया। 75 गुलाबों से बना हुआ मोर, 75 बोधवचन, 75 श्लोकों का संग्रह आदि वस्तुएं भेट दी गयी। 4 ऑगस्ट को विधिवत् होमहवन और शाम को प्रकट कार्यक्रम। निधिप्रमुख मा. माई नागले ताई जी को आशीर्वचन देने मंचपर उपस्थित थी। प.पू बालासाहब जी प्रमुख अतिथि थे। पार्श्वपरदे पर था चोच में अमृतकुंभ लिये हुअे गरुड। दीपस्तंभ पर 75 दीप जगमगा रहे थें। अखिल भारतीय बैठक के लिये उपस्थित सभी प्रांतप्रमुख या अनेक संस्थाओं ने ताई जी का अभीष्टचिंतन किया। वातावरण अतीव भावपूर्ण था। कुंदाताई सहस्रबुद्धे का निवेदन प्रभावी रहा। यह गौरव किसी एक व्यक्ति का नही था। 48 वर्ष (4 तप) निरंतर कार्यरत ऐसे सातत्य का, निष्ठा, कार्य की प्रगाढ श्रद्धा का श्रद्धावंतों द्वारा किया हुआ एक अनोखा उत्सव था। उस समय का गीत श्री. बाळसाहेब कोठे जी ने बनाया था -

स्पर्श चंदनाचा ताई आज अम्हां द्यावा
वैष्णवी व्रताचा अम्हां वसा आज द्यावा

एक व्रती व्यक्ति से दूसरा व्रती व्यक्ति आशिर्वाद माँग रहा था। ताई जी के शांत शीतल आश्वासक स्पर्श के सब प्यासे थें।एवं उनके वैष्णवीव्रत के सभी लालायित थें। आपका व्रत हम प्रणपूर्वक निभायेंगें इस आश्वासन का वह एक परमपवित्र मंगल क्षण था। माई नागले ने कहा नदी का प्रवाह कभी रुकता नही है, पत्थर, पर्वत कहीं भी वह रुकती नही। वह अपना मार्ग निकालकर ध्येय तक पहुँचती है। सेविका भी अपने ध्येय तक पहुँचते तक मार्गक्रमण करती ही रहती है। इसी बैठक में प्रांतप्रांत ने अमृतमहोत्सव कार्यक्रम लेने का निश्चय किया। ताई जी को वह जँच नही रहा था। आजतक मानसन्मान,

माला, पुष्पगुच्छ भेटवस्तु इन सबसे वे कोसों दूर थी। कभी भी जरी की बहुत महंगी साडी भी पहने हुएं उनको किसीने देखा नही था। परंतु इसी कारण सभी प्रांतों में प्रवास होगा और कुछ राशि एकत्रित होगी तो शक्तिपीठ के भवननिर्माण को गति मिलेगी इस आग्रह को उनको स्वीकार करना पडा। पुणे में 1980 में भी ज्ञानप्रबोधिनी की पद्धति से एक धार्मिक कार्यक्रम किया गया उसमें डॉ. स्वर्णलता भिशीकर जी ने पौरोहित्य किया।

अक्टोबर में समिति कार्य की गंगोत्री वर्धा में ज्येष्ठ कार्यकर्ता प्रमिलाताई दाणी उपस्थित रही। सोलापुर में वयोवृद्ध बहनों का ताई जी द्वारा गौरव किया, जैन श्राविका सुमतीबेन अध्यक्षा थी। नागरिकों के साथ वार्तालाप यह भी सोलापुर की विशेषता रही।

मातृशक्ति जागरण यज्ञ

इंदौर ने इस निमित्त से 15 आक्टोबर को मातृशक्तिजागरण यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में आचार्य पद पर एक बहन थी और अन्य महिलाएं पुरोहित के नाते उनके साथ मंत्रोच्चारण के साथ-साथ हवन कर रही थी। यह दृश्य इंदौरवासियों के लिये अभूतपूर्व था। पहले दिन देवता स्थापना तथा आवाहन बाद में चार दिन प्रत्यक्ष हवन, भागवत पुराण के दशमस्कंध के पूर्वार्ध के श्लोकों के पठन के साथ हुआ। इसकी सफलता का श्रेय साकोरी की पूज्य माता गोदावरी जी और इंदौर के महान संत पूज्य नाना महाराज तराणेकर जी को है।

भोपाल में भी कार्यक्रम हुआ। 5 फेब्रुवारी को कर्णावती (अहमदाबाद), 8 फेब्रुवारी भाग्यनगर(हैद्राबाद) में कार्यक्रम हुएं। उत्तरप्रदेश में वर्ग के समापन के समय ही यह कार्यक्रम हुआ - "हे मनस्विन् शुचि सुशीला" यह डॉ. शरददीदी रचित गीत गाया गया।

मैं आप सबकी माँ हूँ

इस कार्यक्रम में 76 दीप जलाने हेतु सफेद काँच की छोटी-बडी शिशियाँ एवं प्लेटों को फेविकॉल से चिपकाकर सुंदर दीपस्तंभ की रचना की थी। दीपों में पर्याप्त स्नेह था इसलिये वे कार्यक्रम पूरा होते तक अच्छे जल भी रहे थे। अचानक शरददीदी के मन को अंतःप्रेरणा मिली। उष्णता के कारण प्लेटें चटक कर टूट सकती हैं। वह मंच के पास ही खडी रही। पास में पानी की

बाल्टी रखवा ली। (हुआ भी वैसा ही) वंदे मातरम् के समय प्लेटें चटकने लगी। शरददीदी ने काँच के गरम टुकडे उठाउठाकर पानी में डालना शुरू किया। वंदे मातरम् पूर्ण होते होते साईडविंग एवं मेज की चादर ने आग पकड ली। दीदी ने हाथ से चादर मसलकर आग बुझायी। दो तीन संघ बंधु भी आये उनके सहयोग से अनहोनी टल गयी। थोडे ही समय में ताई जी क्रीम की शीशी लेकर शरद दीदी को ढूंढते मंच तक पहुंची - तुम्हारे हाथ जल गये होंगे दिखाओ। दोनों हाथ खोलकर उन्होंने दवाई लगायी। उन दो स्वयंसेवकों के हाथों पर भी दवाई लगाते हुएं कहा "मैं आप सब की माँ हूँ। व्यवस्था के अनुसार कार्यक्रम के पश्चात् मुझे अतिथि के साथ जाना पडा, परंतु मेरा मन आप सबके लिये व्याकुल था।" *कार्यकर्ता के प्रति उनके हृदय में परम आत्मीयता एवं मातृभाव था। कार्यकर्ता की सतत चिंता यह नेतृत्व का विशेष गुण है। ताई जी में दोनों का सुंदर संयोग था।*

कर्नाटक में गुलबर्गा विभाग के सेडम में, उडुपी, बंगलोर धारवाड में युवती संमेलनों का आयोजन हुआ। महाविद्यालयीन युवतियों को एकत्रित कर समिति कार्य, हिंदुत्व विचार का परिचय हो यह उद्देश था। इस एक दिवसीय सम्मेलन में स्त्री का सेवाक्षेत्र, औद्योगिक, साहित्यक्षेत्र में योगदान इस विषय पर परिसंवाद हुआ। विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। बुलढाणा में गौरबाई करमरकर इस वृद्ध सेविका ने ताई जी को आशिर्वाद दिये। ताई जी के लिये मा. सुशीलताई महाजन रचित 'गीत जिजाऊ' प्रस्तुत किया गया। उसका "शिवशक्तीला करू आवाहन" यह गीत उन्हें बहुत प्रिय था। सेविका के पौराहित्य में सत्यनारायण की पूजा हुई। खामगाव में चांदी के कारखाने हैं। अतः उन्होंने कल्पकता से ताई जी को चांदी का ध्वज और चांदी के कलाकारी युक्त आवरण में मानपत्र दिया। किसीने पीतल का गरुड दिया। प्राप्त साडियाँ और भेट वस्तुएं भी ताई जी ने 'यह केवल मेरा नही संगठन का है' इस विचार से विविध सेविकाओं में वितरित की। जिन्हें ताई जी की साडी प्राप्त हुई, वे ताई जी का आशिष पा कर धन्य हुई। पुणे के कार्यक्रम में भी उन्हें जो कुछ मिला वह दूसरे दिन कहीं भोजन था वहाँ सबके संमुख रखकर कहा 'जिसको जो चाहिये वह ले ले।'

पौरोहित्य वर्ग

वं. ताई जी के कार्यकाल में कार्य के नये नये आयाम विकसित हुए। अब समिति का कार्य केवल शाखा स्थान तक सीमित न रहते हुएं अन्यान्य

कार्य भी प्रारंभ किये गये। वं. मौसी जी के मन में बीजरुप में अस्तित्वमान बालिका शिक्षा केंद्र, छात्रावास, आदि कार्य अंकुरित होने लगे इतनाही नही तो फल-फूल रहे है। वं. मौसी जी की और एक इच्छा ताई जी के कार्यकाल में पूर्ण हुई वह पौरोहित्य वर्ग का प्रारंभ। 1983 से यह कार्य प्रारंभ हुआ। भजन मंडल की बहनों के जैसी यह भी टोली तैयार हुई। आज श्रीसूक्त, रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र, सत्यनारायण आदि तथा विविध यज्ञों का पौरोहित्य बहनें कुशलता से करती है। प. पू. डॉक्टर जी के घर का गृहप्रवेश हुआ तब पौरोहित्य की बहनें वेदशास्त्रसंपन्न मा. कृष्णराव जी बापट की सहायक के रूप में गयी थी। मातृधाम, गुवाहाटी, तेजस्विनी कन्या छात्रावास बिलासुपर तथा सोलापुर की कित्तुर चेन्नम्मा स्मारक समिति के भवन का गृहप्रवेश विधि इन बहनों ने ही संपन्न किया। ठाणे, पुणे, नाशिक, नागपुर, नंदुरबार में पौराहित्य वर्ग चल रहे हैं। यह व्यवसाय के रूप में नही अपितु संस्कृति रक्षा के लिये ही है। नागपुर की बहनें इस माध्यम से प्राप्त दक्षिणा समिति प्रेरित सेवाकार्य को समर्पित करती है।

प्रत्येक अधिकारी की एक शाखा हो

वं. ताईजी के प्रवास में उनके स्नेह से सभी आनंदित होते थे। उनकी सहज कही हुई बात भी सेविकाओं के लिये प्रेरणादायी बन जाती थी। जबलपुर में महानगर के विविध दायित्व वहन करनेवाली बहनों की बैठक थी। समिति का कार्य कैसे बढाएं इस पर विचार विमर्श हो रहा था।

वं. ताईजी ने एक बहन से पूछा 'क्यों, तुम्हारी शाखा कौनसी है?'

उत्तर मिला, 'मैं इस भाग की शाखा में जाती हूं।'

वं. ताईजी ने कहा, 'देखो, प्रत्येक अधिकारी की एक शाखा हो। उस शाखा को आदर्श बनाने का प्रयत्न करना है। यहां जितनी अधिकारी बहनें बैठी हैं वे सब एक एक शाखा की जिम्मेदारी लेकर वह उत्कृष्ट तरह से चलायेगी तो व्यवस्थित शाखाओं की संख्या बढेगी। किसी एक शाखा में जाना, बैठक लेना, कार्यक्रम में उपस्थित रहना आवश्यक है। कारण शाखा ही अपनी साधनास्थली है। वास्तव में वं. ताई जी ने शाखाएं बढाने का जो मार्ग सुझाया वह कितना व्यावहारिक है।

कार्य व्यापक हो हमारा

भारत कहलाता तो हिंदुस्थान है परंतु यहाँ मुस्लिम एवं ईसाई भी बडी मात्रा में रहते है। बडे दुर्दैव की बात है की देश को स्वतंत्रता मिली परंतु स्वाधीनता नही मिली। तुष्टीकरण नीति ज्यों की त्यों ही बनी रही। लॉर्ड मिंटो ने कहा था कि मुस्लिम मेरी लाडली बीवी है वही मानसिकता भारत के राज्यकर्ताओं की है।इसीलिये हमारे देश में उनके लिये अलग से वक्फ बोर्ड है। कुटुंब नियोजन आदि नियम हिंदुओं के लिये है वे मुस्लिमों के लिये नही।

समान नागरी कानून

1985 में 'शहाबानो' इस महिला प्रकरण के कारण यह बात स्पष्ट रूप से उजागर हुई। अतः दिल्ली में हुई बैठक में उस संदर्भ में एक पेपर पढा गया। भारत की किसी भी महिला पर अन्याय न हो यह विषय लेकर एक प्रारूप बनाकर सभी प्रांतों में भेजा गया। इस वर्ष वर्षप्रतिपदा उत्सव में यहीं विषय रखकर 'समान नागरी कानून' की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया। इस वर्ष से वर्षप्रतिपदा के दिन देश भर की शाखाओं में बौद्धिक का एक ही विशिष्ट विषय रखने की परिपाठी बन गयी।

अ. मा. बैठक अन्यान्य प्रांतों में

प्रतिवर्ष समिति की दो बैठकें होती है। प्रथम बैठक आषाढ माह में सुविधा के अनुसार संपूर्ण वर्ष के कार्य का मूल्यांकन तथा अगले वर्ष की योजना इस दृष्टि से होती है। और दूसरी बैठक समिति शिक्षा वर्ग की योजना और प्रवास की दृष्टि से माघ मास में होती है। अनेक वर्षों तक ये दोनों बैठकें नागपुर में ही होती थी। परंतु 1984 के पश्चात् एक बैठक नागपुर और दूसरी नागपुर के बाहर अलग अलग प्रांतों में आयोजित की जाने लगी। 1985 की बैठक भाग्यनगर में अपने कार्यालय में अर्थात् रुद्रम्मा स्मारक समिति के भवन में हुई। इसी समय उसका गृहप्रवेश एवं कार्यालय का उद्घाटन हुआ। भाग्यनगर के एक क्षेत्र - मल्लिकार्जुनगिरी में मा. रमादेवी जी ने भूखंड दिया था उस पर प्रांत कार्यालय हेतु भवन एवं देवी अष्टभुजा मंदिर का निर्माण किया गया। आज छात्रावास, विद्यालय, सिलाई वर्ग आदि विविध प्रकल्प यहाँ चल रहे है।

1987 की बैठक बस्तर जिले में अ.भा. वनवासी कल्याणाश्रम के प्रकल्प पर हुई। प्रवास के साधन कम। रायपुर से बस का प्रवास था। भानपुरी यह बीहड क्षेत्र था। वहाँ बिजली भी नही के बराबर थी। ताई जी के सामने ये सब विषय रखने के बाद उन्होंने कहा ऐसे क्षेत्र में हमारा कुछ कार्यक्रम अवश्य होना चाहिये। अपनी बैठक वहीं लेंगे।ताई जी ने बस का प्रवास भी किया। अपनी चेंबूर की सेविका माणिकताई टिळक उस प्रकल्प पर थी। उन्होंने वहाँके स्थानिक लोगों के सहयोग से व्यवस्था भी अच्छी की। उस निसर्गरम्य वातावरण में खींचे गये फोटो आज भी मन को प्रसन्नता देते हैं। बैठक के पश्चात् ताई जी, मा.सिंधुताई आदि एक कार्यकर्ता की गाडी से और बाकी सब लोग टेम्पों से चित्रकूट, जगदलपुर देखने गये। टेम्पो से गये लोग वापिस आ पहुँचे पर गाडी आयी नही।सब लोग बेचैन हुएं। मा. प्रमिलताई जी और एक दो लोग फिर से टेम्पो से जगदलपुर गयी । ताई जी, सिंधुताई जी उसी समय वहाँ आकर बैठी थी। बडी दुर्घटना होते हुएं बच गये। ताई जी जिस गाडी में थी उस गाडी का पहिया निकलकर खाई में गिर गया था। और गाडी लुढक गयी थी। परंतु भगवान की कृपा से किसी को कुछ हुआ नही।

अखिल भारतीय त्रयोदश त्रैवार्षिक संमेलन

कालचक्र निरंतर घूमता ही रहता है। उसके घूमते घूमते संगठन ने अपने 50 वर्ष पूर्ण कियें। 100 पुरुष एकत्रित रह सकते हैं परंतु चार महिलाओं का एकत्रित रहना कठिन। कैसे हो सकता है इनका संगठन - ऐसी ही समिति के प्रति समाज की धारणा थी। आज वहीं संगठन उबडखाबड रास्ते पार करते हुए अपना आधा शतक पूर्ण कर रहा था। राष्ट्र के जीवन में 50 वर्ष बहुत बडा कार्यकाल नही है। परंतु संगठन की दृष्टि से यह क्षण बडा महत्त्वपूर्ण था। अतः 5, 6, 7, नोव्हेंबर 1986 को नागपुर में सम्मेलन निश्चित हुआ। उसके 15 दिन पूर्व अर्थात् कराष्टमी के दिन ही श्रीशक्तिपीठ में अष्टभुजा देवी की प्रतिमा की प्रतिष्ठापना की गयी। जहाँ 1978 में वं. मौसी जी का पार्थिव रखा था वहाँ ग्रेनाईट का तुलसीवृंदावन बनाया है।

रॅली से देवी अहल्या मंदिर तक

सेविकाओं में उत्साह अमाप था। अतः वं. ताई जी जिस दिन नागपुर आयी उस दिन उन्हें रॅलीसे लेकर आने की योजना बनायी गयी। ताई जी को

इसकी कोई पूर्व कल्पना थी ही नही। समय पर सूचना देने के लिये भ्रमणध्वनि थे ही नही। हमेशा जैसी ताई जी अजनी स्टेशन आते ही सामान लेकर उतरने को थेयार थी। भारतीताई जी ने उन्हें कहा 'ताई जी आज नागपुर स्टेशन पर उतरने की योजना है।' अजनी से नागपुर आते तक उनका नाश्ता और चाय किया गया। बडा जोरशोर से स्वागत हुआ 'भारतमाता की जय' से स्टेशन गूंज उठा। स्टेशन के बाहर खुली जीप सुशोभित की हुई थी। स्टेशन से रैली से सब टेकडी के गणेश मंदिर गयें। वहाँ दर्शन लेकर नारियल तोडकर रॅली घोषणाओं के साथ, देशभक्ति की मस्ती के साथ,सम्मेलन के उत्साह से ओतप्रोत सभी देवी अहल्या मंदिर पहुँची। यह ताम्झाम, यह रॅली से आना यह सब ताई जी के स्वभाव के विपरीत था। परंतु ताई जी ने सेविकाओं को निरुत्साह नही किया। इसमें एक घंटा अवश्य गया होगा। महाराष्ट्र एक्स्प्रेस का प्रवास वैसे भी बहुत थकान का होता है उसमें निकाली हुई यह रॅली। परंतु उन्होंने सेविकाओं का मन रखने के लिये ये सब कष्ट सहन कियें।

धुवांधार यदि वर्षा बरसे

'धरमपेठ कन्या शाळा', मुलांची शाळा, सरस्वती विद्यालय आदि विविध स्थानों में निवासव्यवस्था थी। सम्मेलन के एक रात पूर्व धुवांधार वर्षा हुई उद्घाटन मैदान पानी से लबालब भरा। रातभर बारिश हुई। प.पू. सरसंघचालक जी बहुत ही बेचैन हुएं थे। बारबार मा. आबा जी थत्ते को बोल रहे थे अरे एक बार जाकर तो देखो, क्या करेगी यह बहनें? रसोई के चुल्हें भी पानी से भर गये थे। सुबह मा. आबा जी आये वहाँ देखा पानी ही पानी चारों ओर। मा. विनायकराव जी फाटक, राजू जोशी सब आये। उद्घाटन का कार्यक्रम वहाँ होना असंभव था। पानी निकालना, कीचड उठाना, पत्थर का चुरा फैलाना, मंडप खडा करना, पर्वतप्राय काम थे।बडे लोगों के साथ बाल सेविकायें भी दिनभर काम करती रही। वं. ताई जी ने सभीको शाबाशी दी। भोजन प्रमुख मंदाताई ने उसी व्यवस्था में भोजन बनाने की व्यवस्था की। सभीको भोजन खिलाया। पासका ही एक सभागृह कुसुमताई वानखेडे हॉल में कार्यक्रम हुआ। पास के सेवावस्ती के भी स्वयंसेवक आये और अन्य सभीने मिलकर वहाँ मुरुम आदि डालकर दूसरे दिनतक मैदान चलने,बैठने योग्य बनाया। उपस्थित सेविकाओं की संख्या लगभग 5000 थी।

योग के विशेष सत्र

इस वर्ष नित्य के कार्यक्रमों में थोडासा परिवर्तन था। दो सत्र योग के लिये रखें थे। 1953 में हमने भारतीय स्त्रीजीवन विकास परिषद आयोजित की थी तब तज्ञों के अनुसार योगासनों का अंतर्भाव समिति के वर्गों में, शारीरिक शिक्षाक्रम में हुआ। अनेक सेविकाओं के दैनिक जीवनी में उसे अग्रक्रम मिला। इस सम्मेलन में दो सत्र रखे थे - 'दैनंदिन जीवन में योग का महत्त्व,' 'योग और मातृत्व'। विवेकानंद केंद्र-कन्याकुमारी, नाशिक का योग विद्याधाम, पुणे के अय्यंगार जी का और लोणावळे का कैवल्यधाम आदि विविध योग संस्थान एक मंच पर आये। दूसरे सत्र का डॉ. चरणजित घुई का भाषण अत्यधिक प्रभावी रहा।

पुणे की सेविकाओं के साथ

इस सम्मेलन में मा. सुशीलताई महाजन लिखित वं.मौसी जी की जीवनी 'दीपज्योति नमोऽस्तु ते' का लोकार्पण हुआ। पुस्तक लोकार्पण हेतु मंचासीन सुप्रसिद्ध लेखिका मृणालिनी देसाई थी। वह पूर्वाश्रम की मृणालिनी धनेश्वर थी। पुणे की प्रथम शाखा की सेविका थी। 1942 में स्वाधीनता आंदोलन के आकर्षण से आंदोलन में सहभागी हुई। 'दीपस्तंभ' स्मारिका का लोकार्पण सुप्रसिद्ध कथा, उपन्यासकार श्रीमती योगिनी जोगळेकर जी ने किया। वह भी पुणे शाखा की सेविकायें थी। प.पू बालासाहब का भी उद्‌बोधन हुआ।इसी समय श्री शक्तिपीठ का भी औपचारिक उद्‌घाटन कार्यक्रम था। वहाँ छात्राओं के लिये वसतिगृह 'छात्राकुटि' इस नाम से चल रहा था। 'धनोद्योगवर्धिनी' नाम से उद्योग मंदिर तथा चिकित्सालय प्रारंभ हुआ था।जैसे जैसे भवननिर्माण हो रहा था वैसे प्रकल्प शुरु हो रहे थे। परंतु विधिवत् उद्‌घाटन नही हुआ था अतः सम्मेलन के साथ ही यह भी कार्यक्रम हुआ।

तेजतर्रार गति

आयी हुईं सेविकाओं को दो समूहों में बांटा गया। एक शोभायात्रा और दूसरा पथसंचलन। दोनोंके मार्ग अलग थे परंतु श्री शक्तिपीठ के पास दोनों एकत्रित आये। वं. ताई जी ने शोभायात्रा में सम्मीलित हुएं वाहन में बैठना नकारा और वे पैदल चलीं। शोभायात्रा के ध्वज की पूजा करने हेतु नागपुरकर

भोसले घराने की रानीसाहिबा श्रीमंत शालिनी राजे को आमंत्रित किया था। वे आयी थी। ताई जी पैदल चलने लगी। अतः वे और राजमाता श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया, दिल्ली की उद्योजिका श्रीमती अरुणा जी डालमिया ताई जी के साथ पैदल चली। शायद वे जीवन में पहली बार ही ऐसी रास्ते पर चली होंगी। 77 वर्ष की आयु में ताई जी की तेजतर्रार गति और उत्साह देखकर, सब आश्चर्यचकित हुएं। प. पू. बालासाहब जी पथसंचलन देखने हेतु लक्ष्मीभुवन चौराहे पर आ कर बैठे थे। समिति के प्रति उनके सद्भाव का ही यह प्रतीक था।

प्राच्यविद्याकक्ष का उद्घाटन

शोभायात्रा श्री शक्तिपीठ पहुँचने के बाद शक्तिपीठ की पोर्च के छत पर बनाये मंच पर कार्यक्रम संपन्न हुआ। वहाँ सुप्रसिद्ध इतिहास तज्ञ, सरस्वती नदी के उद्गम के खोजकर्ता पद्मश्री हरिभाऊ वाकणकर जी ने प्राच्यविद्याकक्ष - वाचनालय का उद्घाटन किया। मंच पर वं. ताई जी , हरिभाऊ वाकणकर जी राजमाता आदि उपस्थित थे। यहाँ वं. मौसी जी को आद्य प्रमुख संचालिका प्रणाम दिया गया। संपूर्ण श्री शक्तिपीठ सुशोभित किया गया था। तल मंजिल के बडे सभागृह में वं. मौसी जी के छायाचित्रों की कलात्मक प्रदर्शनी लगायी थी। उससे उनका पारिवारिक एवं संगठनात्मक जीवन स्पष्ट हो रहा था। उद्घाटन के पश्चात् सभी संमेलनस्थान पर गयें। तीसरे दिन समापन हुआ। सभी दृष्टि से सम्मेलन यशस्वी रहा। परंतु उद्घाटन समारोहप्रारंभ होते ही अपनी एक बहन सौ. लीलाताई देशपांडे को हृदय विकार का तीव्र झटका आया। उनको अतिदक्षता विभाग में रखा गया। उद्घाटन कार्यक्रम पूरा होने पर वं. ताई जी को यह बताया। तब उन्होंने तुरंत संबधित डॉक्टर से बात की थी। वे बेचैन थी।

अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख मा. कुसुमताई साठे जी ने "भारत की सीमाएँ कल आज और कल" यह विषय रखा। तब अनेंकों की आँखें आसुओं से भर आयी। 15 दिन पूर्व ही उनके पति श्री अनंतराव जी साठे का अचानक ही स्वर्गवास हुआ था। परंतु भावनाओं से कर्तव्य श्रेष्ठ मानकर दिखाया विलक्षण संतुलन बंधुवर्ग भी प्रभावित हुआ। इस सम्मेलन में मा. सीतालक्ष्मी जी का बौद्धिक हुआ। वह स्वयं कवयित्री, गायिका और प्रभावी वक्ता थी। शारीरिक विषयों में वह कुशल थी। उनके इन गुणों का परिचय सभी सेविकाओं

को हुआ। समापन के प्रकट कार्यक्रम में वं.ताई जी के शांत गंभीर उद्‌बोधन से सभी प्रभावित हुएं।

मा. नाना जी देशमुख आदि सभी लोग भी सम्मेलन देखने हेतु आये थे। वं. ताई जी के कार्यकाल का यह अंतिम सम्मेलन होगा ऐसी कल्पना का स्पर्श भी किसी के मन हुआ नही। इस सम्मेलन में इंग्लंड से भारती सुरती और मॉरिशस से कमला उपस्थित थी। भारती जी ने वहाँ चल रहे कार्य का वृत्त बताया। पहली बार ही विश्व विभाग की सेविकाएं सम्मेलन में उपस्थित थी।

मुझे मेरा आत्मविश्वास गंवाना नहीं है

इस सम्मेलन के पश्चात् सम्मेलन त्रैवार्षिक के स्थान पर दशवार्षिक करने का निर्णय हुआ। परंतु इस बीच प्रांत अपने अपने प्रांत में प्रांतिक सम्मेलन आयोजित करेंगे यह भी तय हुआ। उसमें कार्यक्रम भी स्थानिक भाषा में होंगे। आनेजाने का व्यय भी कम लगेगा। स्थानिक बहनों को आयोजन एवं व्यवस्थात्मक अनुभव आयेगा।

1989 से प्रांतप्रांत के सम्मेलन प्रारंभ हुएं। इस निमित्त से वं. ताई जी का प्रांतप्रांत में प्रवास हुआ। इस क्रम में ताई जी ने दिल्ली से चेन्नई प्रवास किया वह भी डिसेंबर के अंत में। भले ही वह विमान से चेन्नई गयी परंतु दोनों स्थानों के वायुमंडल में महदतंर था। दिल्ली में जानलेवा ठंड थी तो चेन्नई में उतरते ही गरमी शुरु हो गयी। ताई जी प्रवास में भी अपनी घरेलू औषधियाँ साथ रखती थी। धनिया, जीरा, तुलसी का बीज आदि। कभी कोई कहता 'ताई, आप 80 के करीब आयी हो हाथ में सहारे के लिये डंडा लेते जाईये।' ताई जी का उत्तर रहता 'मुझे मेरा आत्मविश्वास गंवाना नही है।' दक्षिण से लेकर उत्तर तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक ऐसा उनका प्रवास हुआ। कुछ स्थानों पर उषाताई जी साथ थी।

गोंदवलेकर महाराज की छांव में

प्रवास और हवापानी का परिवर्तन शायद उनका शरीर सहन नही कर पाया। ताई जी अपनी बेटी सौ. विजया तांबे के घर विश्राम हेतु गयी थी। वहीं उनके ध्यान में आया ताई जी के स्वास्थ्य में कुछ गडबड है। वैद्य जी ने पीलिया बताया। दिनप्रतिदिन ताई जी क्षीण होने लगी। ताई जी फिर पुणे लौट

आयी। उन्हीं दिनों में मा.रुक्मिणी अक्का का 61 वाँ जन्मदिन था। उन्होंने तय किया था कि यह जन्मदिन उनके घर के परमाराध्य ब्रह्मचैतन्य श्री. गोंदवलेकर महाराज जी के गोंदवले आश्रम में ताई जी के सान्निध्य में मनाऊंगी। ताई जी से पहले ही बातचीत हुई थी। परंतु ताई जी की बीमारी की सूचना उन्हें नही थी। अतः पूर्वनियोजित कार्यक्रम के अनुसार वे पुणे पहुँची ताई जी के अस्वास्थ्य का पता चलते ही घबरायी। परंतु ताई जी ने कहा 'हम गोंदवले जायेंगे।'

मा. रुक्मिणीअक्का ने कहा 'डॉक्टर को पूछना होगा।'

"जी, नही, मेरे हाँ कहने के बाद डॉक्टर ना नही कहेंगें।" - ताई जी हुआ भी वैसा ही।

डॉक्टर जी ने कहा 'अपनी इच्छाशक्ति के आधारपर वह जाकर आयेगी। जाने दीजिये।'

दोनों विशेष गाडी की व्यवस्था कर गोंदवले गयी। भारती और कुसुमताई जी भिशीकर भी साथ थी। श्रीरामभक्त बेलसरे जी का ही कक्ष उन्हें निवास हेतु दिया गया। ताई जी के परहेज की भी व्यवस्था व्यवस्थापक जी ने ध्यानपूर्वक की। ताई जी ने जागरण गीत (काकड आरती) से लेकर सभी कार्यक्रमों में सहभाग लिया। अभिषेक आदि हुआ। रुक्मिणी अक्का को 61 पुस्तकें दी। वहाँसे आने के बाद ताई जी प्रसन्न थी।

बीमार पडने के लिये समय कहाँ?

परंतु डॉक्टर साठे जी ने बताया 'ताई जी, एक माह की विश्राति अत्यावश्यक है आप मेरे घर चलिये या गंगूताई जी के घर जाइये।' ताई जी गंगू ताई के घर गयी। ताई जी के अस्वास्थ्य का पता चलते ही अपना राम नवरात्रि का व्रत छोडकर मा. उषाताई जी एवं मा. प्रमिलताई जी पुणे गये। दो तीन दिन रहकर वापिस आये। इस वर्ष उनका वर्गपर प्रवास नही रखा। ताई जी गंगूताई के घर गयी तो उन्हें मिलने हेतु सब वहाँ जाने लगे। राजा जहाँ जाता है वहीं राजधानी बन जाती है। रिश्तेदारों से लेकर सेविकायें, राजमाता जी, प. पू. बाळासाहेब जी सब मिलने आये। ताई जी को आज तक कभी किसीने सोया हुआ देखा ही नही था। ताई अर्थात् निरंतर काम और काम। और अभी थकान इतनी अधिक थी कि आँखें खुलते खुलती नही थी। अतः उन्हें सोते हुए देख सब की आँखे सजल हो जाती। प. पू. बालासाहब जी ने

ताई जी से कहा 'ताई जल्दी ठीक हो जाइये। हमें बीमार पडने के लिये समय ही कहाँ है?'

सबकी सदिच्छायें, डॉक्टरों की औषध योजना प्रभावी रही। जून के अंत में बीमारी से बाहर, स्वस्थ हो कर ताई जी अपने 'सरस्वती सदन' में वापिस आयी। और फिरसे चालू हुआ वही कार्य का चक्र पत्र लिखना है, मिलने जाना है, विस्तारिकाओं की बैठक लेना है आदि आदि। प्रांत सम्मेलन पुणे में ही होनेवाला था अतः काम भी अधिक था।

महाराष्ट्र प्रांत संमेलन

महाराष्ट्र का सम्मेलन पुणे में हुआ। 25 डिसेंबर से 27 डिसेंबर 1989 तक। स्थान था रमणबाग न्यू इंग्लिश स्कूल तथा नूतन मराठी विद्यालय। इस 5000 संख्या होने पर भी रोटियाँ भाग भाग से ही संकलित कर लायी गयी।संचलन एवं शोभायात्रा का समापन शनिवारवाडा के सामने हुआ। ताई जी की अनेक वर्षों से इच्छा थी कि जहाँसे हमारा भगवा नीचे उतारा गया है उसी प्रागंण में गर्व के साथ फिर से वह फहरे।इच्छा आज पूर्ण हुई।समापन रमणबाग में हुआ। लगभग पाच हजार सेविकाओं के आकर्षक प्रात्यक्षिक वहाँ हुएं। इस सम्मेलन में एक सत्र में विविध क्षेत्र में पूर्ण समय दे कर काम करनेवाली बहनों का सम्मान किया गया। ज्ञानप्रबोधिनी की डॉ. स्वर्णलता भिशीकर, मातृछाया की अलकाताई परुळेकर, अभाविप की गीताताई गुंडे, समिति की प्रांत प्रचारिका सुनीता हळदेकर एवं आंध्र प्रदेश की माधुरी मराठे आदि। इन बहनों ने अपना मनोगत व्यक्त किया। उसका आशय था - आज देहदान,रक्तदान, नेत्रदान, आदि संकल्पनाएं जनमान्य हो रही हैं। वैसेही समाज के लिये 'समयदान' और 'जीवनदान' की संकल्पना भी रूढ करनी होगी!

प्रचारिका संकल्पना

यह विषय रखना यह भी प्रगति का एक चरण ही था। समिति की स्थापना काल में घरगृहस्थी संभलकर काम करना यह कल्पना थी। वं. मौसी जी कहती थी कि विवाह होकर जानेवाली या स्थानांतरण के कारण अन्यान्य गावों में जानेवाली सेविकाएं ही हमारी विस्तारिकाएं है। समाज में लडकियों ने अविवाहित रहकर काम करें यह विचार स्वीकार होना कठिन था। वैसे देखा

जाय तो काकू रानडे ने भी काम किया वह पूर्णकालीन जैसा ही परंतु वे प्रौढ थी। मा. सिंधुताई जी भी दिल्ली में कार्यरत थी परंतु बडी आयु में ही उन्हों ने यह निर्णय लिया था। इस तरह से किसीका समय देकर निकलना समाजमान्य होने के लिये प्रयत्न करना है। अपनी परंपरा में किसी कार्यहेतु अविवाहित रहनेवाली ब्रह्मवादिनी समाजमान्य रही है। वहीं परंपरा पुनरुज्जीवित करने की नितांत आवश्यकता है यह विचार हुआ।

1984 में भारतीताई बंबावाले जी ने पुणे में रह कर काम किया। मूलतः वह कोल्हापुर की सेविका। विवाह होकर वह नागपुर आयी। 1971 में विवाह हुआ। 1978 में बंबावाले जी स्वर्गवासी हुएं। उसके बाद पुनः समिति कार्य में समिति कार्य में सक्रिय होने का उन्होंने विचार किया। उनके मन में पुणे के अनुशासनयुक्त काम के प्रति कुतुहल था। वह कैसे चलता है इसका अनुभव लेने की तथा वं.ताई जी के सान्निध्य में रहने की इच्छा थी। अतः वह पुणे आयी। बाल शाखाओं का काम उन्हें सौपा गया। और ताई जी के साथ पुणे एवं अन्यान्य प्रांतों में भी प्रवास किया। परंतु उस समय समिति की विस्तारिकाओं की रहनेकी व्यवस्था नही थी। अतः वह सेवासदन के वसतिगृह में रही और वहाँ से कार्य करती थी। एखाद वर्ष के पश्चात् जिजामाता स्मारक समिति इस प्रतिष्ठान ने भवन खरीदा तब वहाँ वह रहने आयी। उसी समय माधुरी मराठे भी पूर्ण समय देकर बाहर निकली उनके साथ रहने लगी। आज मा. भारतीताई अ. भा. निधि प्रमुख है। भारतीताई के पास जम्मू का भी विशेष दायित्व रहा। मा. माधुरीताई अ. भा. शारीरिक शिक्षण प्रमुख है।

विस्तारिकाओं का पाथेय

परंतु अभी कार्य का विस्तार काफी हो गया था। केवल गृहिणी सेविकाओं से काम को गति मिलना असंभव हो रहा था। अतः तरुण सेविकायें समय देकर काम करें ऐसा विषय समिति के अधिकारियों ने रखना शुरु किया। महाराष्ट्र की पालक अधिकारी मा. बकुळताई जी के षष्ठ्यब्दी के निमित्त से महाराष्ट्र में 61 विस्तारिकाएँ निकालने का संकल्प किया था और 1989 में लगभग 20 सेविकायें बाहर निकली थी। मंजिरी ठकार, मृदुला धायगुडे, वर्षा भट (पुणे), अपर्णा कोतकुंडे, माधुरी पाथ्रुडकर (सोलापुर), माया गावकर, प्रतिभा सोमण, सुजाता अष्टकर, राजश्री क्षीरसागर इत्यादि। उसके पूर्व

संभाजीनगर की सुनीता हळदेकर, पुणे की स्वाती (साठ्ये) देशपांडे पूर्ण समय दे कर प्रांत में प्रवास कर रही थी। मा. वीणाताई बोडस, सौ. शीलाताई लेले इस दृष्टि से विशेष प्रयत्नशील रही। अन्य प्रांतों में यह प्रेरणा भरने का काम मा. प्रमिलताई जी ने किया। उत्तरप्रदेश से डॉ. शरद रेणु शर्मा, रेखाताई राजे, दक्षिण भारत से पंकज वल्ली, कन्याकुमारी, अन्नदानम् सीता, जयंतीअक्का, गुजरात से संध्या आदि सेविकायें निकली थी। प्रमिलताई जी उनका संबल बनी। महाराष्ट्र से निकली हुई विस्तारिकाओं को ताई जी ने पाथेय दिया था

* कभी भी किसी से नाराज नही होना।
* नाराजगी हुई तो भी बाहर प्रकट न हो इसका प्रयास करे।
* गुस्सा करें ओठों से प्रेम करें हृदय से ।
* अपने व्यवहार से, प्रेम से दूसरों को जीते।
* जहाँ जायें वहाँ हसमुख रहे।
* अपने काम पर दृढ विश्वास रखे।
* अपने स्वास्थ्य की चिंता करे।
* हडबडी में कोई निर्णय नही लें।
* अहंकारी ना बने।
* आपस में प्रेम, विश्वास निरंतर रखे।

कुछ आवश्यकता लगी तो मुझे पत्र लिखना और वे स्वयं भी सभी को बारीबारी से पत्र लिखती।

एक वर्ष दे कर काम करने में ताई जी को कोई आपत्ति नही लगती थी। परंतु युवा सेविकाएं जीवनभर अविवाहित रहे यह इतना जच नही रहा था। उनकी आयु का विचार करनेपर यह उचित भी था क्योंकि उनके समय यहीं धारणा थी कि हाथी पालना सरल है पर युवा लडकी को घर रखना कठिन। अभिभावक भी उन्हें मिलने सहजता से जाते थे, मन की व्यथा रखते थे, तो उन्हें लगता था इन लडकियों ने माँ पिता का मन रखना चाहिये। युवतियों के प्रचारिका जीवन में आनेवाली समस्याएँ, बीमारियाँ, लोभ, मोह के क्षण ये कैसे पार करेंगी, अनेक विचार थें। परंतु धीरे धीरे प्रचारिका इस संकल्पना ने जड पकड ली। इसी व्यवस्था के लिये योजनापूर्वक संघमित्रा सेवा प्रतिष्ठान का निर्माण 1992 में वं. ताई जी की उपस्थिति में किया गया।

इग्लैंड के हिंदुसंमेलन में

वं. ताई जी के कार्यकाल में समिति का कार्य अपने देश की सीमा पार कर समुद्रपार फैलना शुरु हुआ। दिनांक 25 ऑगस्ट 1989 को इग्लैंड में हिंदु

सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये योजनानुसार मा. प्रमिलताई जी और इस प्रथम सम्मेलन में सहभागी होने की आकांक्षा रखकर मा. कुसुमताई जी साठे वहाँ गयी थी। सम्मेलन में ध्वजारोहण के समय एक ही समय युनियन जॅक और भगवा ध्वज फहराये गये। जिस ब्रिटन ने भारत को 150 वर्ष गुलाम बनाया था, उसी ब्रिटन की भूमि पर हमने हमारा ध्वज शानदार रीति से फहराना, हजारों हिंदुओं ने एक साथ "हिंदु जगे विश्व जगे, हिंदू हिंदू एक रहे" ऐसी घोषणायें देना यह एक अभूतपूर्व, अलौकिक घटना थी। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' यह अपना ब्रीदवाक्य आत्मविश्वास से ब्रिटन की भूमि पर उद्घोषित करना यह इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण क्षण था और उसका अनुभव हमारी दो पदाधिकारी बहनें ले सकी यह आनंद का विषय है। वहाँ संपन्न मातृसम्मेलन में बहनों ने भारत के विविध प्रांतों की वेषभूषा कर भारत की एकात्मता का दर्शन कराया। आरती के सुंदर सुंदर थाल कलात्मक रीति से सजायें हुएं थे। मातृसम्मेलन के लिये समय कम था। परंतु सम्मेलन प्रभावी रहा। वहाँ शैक्षिक क्षेत्रों में ईसाई प्रार्थना लागू करने के आदेश शिक्षा विभाग ने दिये थे - उसके संबंध में एक प्रस्ताव पारित हुआ। स्वभाषा सिखने की व्यवस्था भी विद्यालयों में हो यह विषय रखा गया। कैसी नियति है? भारत में बच्चे कॉन्हवेंट में जाते है। वहाँ वे कौनसी प्रार्थना सिखते है, इससे भारत के अभिभावक अनभिज्ञ रहते हैं और समुद्रपार उनके राज्य में रहते हुएं वहाँ का हिंदु उनकी प्रार्थना नकारने का मनोबल रखता है। उस समय इग्लंड में 10 साप्ताहिक शाखाएं चलती थी। मा. प्रमिलताई जी का प्रवास सभी 10 शाखाओं में हुआ। वहाँकी कार्यवाहिका सरस्वतीबेन दवे 1988 में भारत आयी थी। बहुत घुलमिलकर, सहजता से कार्यालय में रही। मा. कुसमताई जी साठे 19 जुलै को लंडन पहुँची उसी दिन लिस्टर शाखा के रक्षाबंधन उत्सव में उपस्थित रही। विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित एक मातृसम्मेलन की अध्यक्षता भी आपने की। लंडन की विशेषता यह थी कि समिति की आचारपद्धति के अनुसार ही शाखा चलती थी।

समुद्र पार समिति कार्य

1 सप्टेंबर 1990 को मा. बकुळताई जी ने इग्लंड का 12 दिन का प्रवास किया। उसके पश्चात् उन्होंने नैरोबी का प्रवास किया। 12-13 आक्टोबर को सेविकाओं का एक शिविर भी हुआ। 1987 में केनिया की मा. वसुधाताई

धर्माधिकारी वहाँकी 11 युवतियों को लेकर भारत आयी थी। आनेवालों में गुजराती बहनें अधिक थी। मा. प्रमिलताई जी ने उन्हें भारत दर्शन प्रवास की योजना बनाकर दी। नागपुर से प्रवास प्रारंभ हुआ। उनका एक शिविर रुणुजा में आयोजित किया गया। प्रवास क्रम में ये बहनें वं.ताईजी से मिलने पुणे गयी थी। वहाँ रेणुका स्वरूप विद्यालय में कार्यक्रम हुआ।एक बार इंग्लंड की कार्यवाहिका रक्षाबेन वं. ताई जी को मिलने पुणे गयी थी। उन्होंने वहाँ वं. ताई जी की आयु पूछी उत्तर में कहा गया- She is 82 years old.

No, No, she is 82 years young ताई जी की स्फूर्ति देखकर रक्षाबेन ने उत्तर दिया। धीरेधीरे समिति का कार्य भारत की सीमाओं के पार जड पकड रहा था।इस के लिये आधार थे विश्व विभाग के प्रचारक मा. लक्ष्मणराव जी भिडे एवं मा. चमनलाल जी। मा. लक्ष्मणराव भिडे जी ने कहा कि विश्व विभाग के लिये समिति की एक प्रार्थना और स्तोत्र अलग से होना ठीक रहेगा। अतः मा. कुसुमताई जी साठे ने विश्व मांगल्य स्तोत्र की रचना की और प्रार्थना विश्व विभाग के अनुकूल बनायी परंतु वह प्रचलन में नही है।

डॉ. हेडगेवार जन्मशती के उपलक्ष्य में विश्व विभाग का एक शिविर 25 से 31 डिसेंबर 1990 में बंगलोर में संपन्न हुआ। अनेक महिलाएं भी इस शिविर में सम्मिलित थीं । उनकी सारी व्यवस्था शारीरिक और बौद्धिक का दायित्व समिति के पास था।वं. ताई जी भी इस शिविर में पूरा समय रही। उनके मार्गदर्शन से सभी महिलाएं अभिभूत हुई और कहने लगी - भारत के एक बडे संगठन की प्रमुख कितनी सरल है - थोडी भी दिखावट नही, यह बात हमें बाहर के देशों में देखने के लिये नही मिलती।

आपद्ग्रस्तों की सहायता

पुणे, बीड, रायगड में अस्मानी आपत्ति के समय सेविकाओं ने सहायता की। तळेगाव, लोणावळा के निकट काम करते समय पुणे के कमिश्नर श्रीनिवास पाटील जी ने सेविकाओं की भुरीभूरी प्रशंसा की। अन्य लोगों ने मदद में दियें हुएं स्टील के बरतन बाढग्रस्तों के लिये उपयुक्त नही थे। क्योंकि उनका भोजन चुल्हें पर बनता है। अतः आवश्यकतानुसार पीतल और ॲल्युमिनियम के बर्तनों का वितरण सेविकाओं ने किया। रायगड जिले में कर्जत, आपटेगुळसुद, पाली, नागोठणे, जांभुळपाडा, पेण आदि स्थानों पर मदद की। उनका मनोधैर्य कायम रखने के लिये सेविकाएं प्रयासरत रही।

पंचनद भी जल रहा

राष्ट्र की सेवा के लिये समिति एकेक कदम आगे बढ रही है। स्वाधीनता प्राप्त होकर 40 वर्ष हो गये थें पर देश की परिस्थिति बडी भयानक बन रही थी। अंग्रेज भारत छोडकर गये तो अवश्य। परंतु उन्होंने जो बीज बोया था वह दिनप्रतिदिन अंकुरित होकर फलफूल रहा था। 1983 से स्वतंत्र खलिस्तान की माँग उठ रही थी। खुशहाल पंजाब अपना अमन खो चुका था। परंतु वह वापस लाने हेतु लालायित भी था। अतः घर घर की माँ अपने बेटे को 'अमन' करके ही पुकारती थी। कब बम फूटेंगें, बाहर गया हुआ व्यक्ति जीवित आयेगा या नही कुछ भी बता नही सकते थे। 25 जून 1989 एक बडा हादसा हुआ। मोगा की संघ शाखा पर आतंकवादियों ने धावा बोलकर 5 स्वयंसेवकों को ढेर कर दिया। मा. आशा जी शर्मा, डॉ. शरद रेणु, मा. रेखा राजे उन घरों में जाकर मिलकर आयी। मा. भाऊराव देवरस जी से बातचीत कर वं. ताई जी की अनुमति से मेधा बागलकोटे, नीता देशपांडे, कविता पाठक और शेवंती भगत इन चारों बहनों को नोव्हेंबर 1989 में वहाँ भेजा गया। पहले कुछ दिन वे दिल्ली में रही। थोडासा हिंदी का अभ्यास, वहाँ के रीतिरिवाजों से परिचय हुआ। वहाँ उनकी अलग अलग परिवारों में व्यवस्था की थी। वहाँसे वे संपर्क के लिये जाती थी। दो बहनें अमृतसर में और दो चंदीगढ में रही। इन बहनों ने वहाँकी बहनों को मनोबल ऊँचा किया। पश्चात् कविता पाठक एक वर्ष के लिये विस्तारिका के नाते फिर से पंजाब गयी। अमृतसर उसका कार्यक्षेत्र रहा। उनको वहाँ भेजना यह एक साहस ही था। सतत हादसे देखते देखते वहाँकी बहनें नकारात्मक ही सोचने लगी थी। नागपुर से बहनें जाने के बाद एक दिन शाखा हेतु वे मैदान में सम्मिलित हुई थीं। मैदान के कोने में कुछ बच्चे खेल रहे थे। मेधा ने खेल लेना शुरु किया और उधर बच्चों का पटाखे छोडना शुरु हुआ। "देखिये हमने आपको कहा था न कि यहाँ खेलना बहुत मुश्किल है। बच्चे कैसे तंग कर रहे है।" - पंजाब की सेविकाएं बडे शांत मन से मेधा ने कहा - "देखिए, आप मैदान में आयी और अपनी बहनें आज एकत्रित होकर खेल भी खेल रही हैं, यह खुशी प्रकट करने के लिये वे पटाखे छोड रहे है।" "ओः दीदी हमने तो ऐसा कभी सोचा ही नही था।" बस् ऐसी छोटी छोटी बातों में ही सकारात्मक दृष्टि देने का प्रयास हमारी बहनों ने किया। आज भी उन सबके भावबंध पंजाब से जुडे हुएं है। पिछले वर्ष ही मेधा, नीता, कविता कुछ दिन जाकर वहाँ रहकर आयी।

कश्मीर की तप्त घाटियाँ करती है सबको आव्हान

अपने देश का सिरमौर कश्मीर रक्त की होली खेल रहा था। कश्मीर में जिनके अनेकों सेवों के आखरोटों के बगीचे थें, केशर की क्यारियाँ थी। घर में बडे बडे कालीन रहते थे। उन पंडितों को मुस्लिमों के कारनामों के कारण केवल पहने हुए वस्त्रों से पलायन करना पडा। एक दो नही डेढ लाख के करीब हिंदू अपने देश में विस्थापित हुए। 1947 से भी अधिक भयंकर स्थिति हो गयी थी। दस बाय दस के टेंट में रहना उनके लिये बडा कठिन था। हमेशा बर्फीले क्षेत्र में रहने की आदत अतः जम्मू की धूप से उनके फोडें निकल आये। वहाँ मददकार्य की योजना बनी। पहले मा.सिंधु ताई जी वहाँ नित्य प्रवास करती थी। पिछले कुछ दिनों से मुस्लिमों के चंगुल से मुक्त करायी गयी बहनों के पुनर्वसन के प्रयास चालू थे। उनका शुद्धीकरण करके उन बहनों के लिये हिंदू वर ढूंढना, युवक के लिये वधु ढूंढना उनके विवाह करना, रस्में निभाना आदि कार्य दिल्ली शाखा ने बडे हंसतेखेलते निभाया। वहाँ से आयी हुई सावित्री जी की कॅन्सर की बीमारी में उनकी शुश्रुषा वेद जी तुली के परिवार ने आत्मीयता से की। इन सबके कारण वहाँके लोगों का गहरा विश्वास समिति ने प्राप्त किया। यह कार्य मा. इंद्रेश जी (जम्मूकश्मीर प्रांत प्रचारक) के सहयोग से संपन्न हो रहा था। मा. इंद्रेश जी सब बहनों के भाई थे, और बच्चों के मामा।

वं. ताई जी इस सब परिस्थिति से बेचैन थी। ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं ने ताई जी के साथ चर्चा की बाद में विस्थापितों के लिये एक आधारकेंद्र प्रारंभ किया गया। रिहाडी के शिवमंदिर के एक कमरे में कार्यालय भी प्रारंभ किया था। ओषधियाँ, साडियाँ, सलवारसूट, चादरें, शर्टपीस आदि का वितरण किया गया। जम्मू के निकट नगरौटा कॅम्प में एक सिलाई केंद्र प्रारंभ किया। मा. भारतीताई को उसका विशेष दायित्व सौपा गया। राज्यपाल जी को तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री. व्ही.पी.सिंग जी को मा. प्रमिलताई जी, आशा जी शर्मा आदि बहनों ने प्रत्यक्ष मिलकर एक निवेदन दिया। कश्मीर प्रश्न को केंद्रीभूत कर के 17- 9-1990 को 'राष्ट्रीय एकता अखंडता अभियान' के अंतर्गत प्रांतप्रांत में कमिश्नर को ज्ञापन दिया गया। मोर्चा, रॅली आदि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

अपने हमेशा के दैनंदिन संस्कारों के काम के अतिरिक्त समिति ने पहली बार ऐसी आंदोलनात्मक भूमिका का स्वीकार किया था, देश की एकता

एवं अखंडता के लिये। यह समस्या सेविकाओं को ठीक तरह से ज्ञात हो, वहाँ की परिस्थिति वे प्रत्यक्ष देखें इसलिये एक अभ्यासवर्ग जम्मू में लिया गया। उसमें प्रांतप्रांत की 80 बहनें उपस्थित थी। पश्चात् उन्हें विभिन्न विस्थापित शिविरों में भेजा गया। साध्वी ऋतंभरा जी की अध्यक्षता में प्रकट कार्यक्रम हुआ। वहाँ से कुछ बहनों को योजना से आतंकग्रस्त पंजाब के भिन्न भिन्न स्थानों पर भेजा। बहनों की एक गाडी पर गोलियाँ भी चली थी। वहाँसे वे सब बहनें बोटक्लब पर हुई विश्व हिंदू परिषद की विशेष रैली में सम्मिलित हुई थी।

पुणे सेविका प्रकाशन ने कश्मीर से संबधित बहुत सुंदर प्रदर्शनी तयार की थी। 29 मार्च 1992 को नागपुर में जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यापाल मा. श्री जगमोहन जी को नागपुर में आमंत्रित किया गया। वं. ताई जी की अध्यक्षता में वसंतराव देशपांडे सभागृह में कार्यक्रम हुआ। इसके कारण अनेकों को इस समस्या के वास्तव का पता चला। 1993 में वं. ताई जी जम्मू गयी थी। उनको लगा कि डोडा जिले में आत्मरक्षा हेतु उपाय करने के साथसाथ रोजगार हेतु भी प्रकल्प होने चाहिये। संवेदनशील क्षेत्र की बहनें या युवक अपने अपने इलाकों में रुकें, वें वहाँ से न हटें और अपना कश्मीर अपना ही बना रहे ऐसा आग्रह वहाँके कार्यकर्ताओं को करते हुएं हम अपनी ओरसे सभी तरह का सहयोग करेंगे ऐसा बताया।

मंदिर वहीं बनायेंगें

यह वर्ष श्रीराम वर्ष था। संपूर्ण देश 'मंदिर वहीं बनायेंगे' इस उद्घोष से गूंज उठा था। हर प्रखंड में श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन समिति ने यज्ञ का आयोजन किया। स्थानस्थान पर मातृसम्मेलन हुएं। सांगली के कार्यक्रम में ताई जी सम्मिलित थी। उन्होंने वहाँ अपने विचार रखें। प्रांतप्रांत में शिलापूजन आदि कार्यक्रम हो रहे थे। सेविकाओं ने प्रचुर मात्रा में सहभाग लिया क्यों कि राम हमारा परम आराध्य है। राष्ट्र पुरुष है। सभी कारसेवक अयोध्या पहुँचे ऐसी श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन समिति की योजना थी। और शासन ने कडे प्रतिबंध लगाये थे। दक्षिण से जानेवाले सभी कारसेवकों को प्रयाग और विभिन्न स्थानों में रोक लिया था। योजना से प्रयाग कारसेवक अयोध्या की ओर चल पडे। फाफामाऊ के पूल पर सहभागी बहनों पर लाठियां बरसी, उसमें अनेक बहनें घायल हुई। कर्नाटक की शकुंतला जी पै, चंद्रपुर की सुगंधा जगदळे, मालिनी कावडकर आदि घायल हुई। सुगंधा और मालिनी को

चिकित्सालय में रखा गया। "आप हमारी दुर्गा हो" इन शब्दों में वं. ताई जी ने उनकी सराहना की।

इसी वर्ष ताई जी की जीवन के 80 वर्ष पूर्ण हो रहे थें। 81 वे जन्मदिन पर सहस्रचंद्रदर्शन मनाने की पद्धति है। पर ताई जी ने बडे सख्त शब्दों में इसका विरोध किया। समिति व्यक्तिपूजक नही है। पांच वर्ष पूर्व अमृनमहोत्सव कार्यक्रम लियें अभी सहस्रचंद्रदर्शन, क्या बारबार जन्मदिन ही मनाते रहेंगे? परंतु सोलापुर शाखा ने लिया हुआ कार्यक्रम उन्हें बहुत पसंद आया। उन्होंने 1761 बालिकाओं का सम्मेलन लिया उन्हें शास्त्रशुद्ध सूर्यनमस्कार सिखायें और ताई जी के आगमन पर उन्हें एकत्रित कर सामूहिक सूर्यनमस्कार का कार्यक्रम किया। दिनांक 25 मार्च को श्रीमती मृणालिनी जोशी लिखित 'कृतार्थ मी कृतज्ञ मी' ताई जी के इस चरित्र का लोकार्पण मा. मोरापंत जी तथा मा. सुशीलाबाई आठवले की उपस्थिति में हुआ।

देवी अहल्या मंदिर का रौप्यमहोत्सव

1991 में देवी अहल्या मंदिर का रौप्य महोत्सव कार्यक्रम हुआ। भवन नवनिर्माण का कार्य भी चल रहा था। दि. 2 से 4 फेब्रुवारी वीरमाता गौरव कार्यक्रम विशेष रहा। पहले दिन माहेर सम्मेलन और शाहिर योगेश जी के पोवाडे का कार्यक्रम हुआ। रात के 9 बजे होंगे। ताई जी अपने बिस्तर पर लेटी थी। उनकी बाजू में ही मा. कुसुमताई जी साठे जी का बिस्तर था। सोने के लिये वे अपनी चद्दर ही ठीक कर रही थी। आज वह काफी आनंदित थी। माहेर सम्मेलन में सब पुरानी सेविकाएं आयी थी बहुत सारी स्मृतियाँ ताजी हुई थी। वहीं सब ताई जी के साथ वह बाँट रही थी कि अचानक कुसुमताई जोरजोर से कराहने लगी। उनकी छाती में तीव्र वेदना होने लगी। सामने ही डॉ. सुनील देशपांडे - हृदयरोग तज्ञ - रहते थें। उन्हें बुलाया गया। कुसुमताई जी के घर में विक्रम को (कुसुमताई जी के बेटे को) फोन किया। वं. ताई जी ने परिस्थिति का गांभीर्य भांप लिया।

धैर्य की परीक्षा

मा. कुसुमताई जी को डॉ. सुभेदार जी के चिकित्सालय में ले जाया गया साथ में प्रमिलताई जी गयी। उनके चिकित्सालय पहुंचे और डॉक्टरों के

प्रयत्नों को यश न देते हुए कुसुमताई जी के प्राणपखेरु उड गये। दूसरे दिन उनकी पुस्तक का "दिग्विजयी रघुवंश" का मा. अशोक जी सिंघल के द्वारा लोकार्पण होनेवाला था। सारा धरा का धरा ही रह गया। कार्यालय में यह दुष्ट वार्ता पहुँची। दूरध्वनी लगातार चलता रहा। अपनी माँ के संस्कारों का परिचय देते हुएं विक्रम ने कहा "ताई जी इस प्रकार माँ का जाना बहुत ही दुःखद है। परंतु आप अपने सभी कार्यक्रम यथावत् करें यहीं माँ की आत्मा चाहती होगी।"

कुसुमताई जी समिति की बौद्धिक प्रमुख थी। समिति की प्रार्थना, प्रातःस्मरण, विश्व समिति प्रार्थना आदि की वहीं रचयिता थी। 1957 से 1987 इतने दीर्घ काल तक वह 'राष्ट्र सेविका' वार्षिक की संपादिका थी। प्रखर हिंदुत्वनिष्ठा उनमें कूटकूटकर भरीं थी। समिति के अतिरिक्त कभी अन्य कुछ विचार ही उनके मन में नही था। अपने छोटे-छोटे बच्चों को लेकर वह वर्ग पर जाती थी। पर वर्ग पर जाने का उनका व्रत कभी खंडित नही हुआ था। वं. ताई जी को एकेक बात स्मरण आ रही थी। दूसरे दिन नियोजित कार्यक्रमानुसार 'वीर माता सम्मान' और मा. कुसुमाताई जी के पुस्तक का विमोचन हुआ। कार्यक्रम समाप्त होते ही ताई जी आदि सब कुसुमताई जी के घर यशवंतनगर गये। और अर्थी उठी। एक ज्ञानसूर्य हमेशा हमेशा के लिये अस्तंगत हो गया।

वीरमाता सम्मान

वीरमाता सम्मान के लिये राम और शरद कोठारी जी का परिवार कोलकाता से समिति के आमंत्रण पर आया था, माँ, पिता और बहन पौर्णिमा। हीरे जैसे दो बेटे हुतात्मा हुएं थे। कोख सुनी होने का उनका दुख अमर्याद था। परंतु उनके प्रति अभिमान भी मन में था। बाकी चारों बहनें अयोध्या से थी। कुछ तो बहुत छोटी थी। ताई जी के साथ बैठकर उन्होंने अपना दुख हलका किया। वं. ताई जी के मातृवात्सल्य के कारण उनके मन का बोझ हलका हुआ। ताई जी की आयु का विचार करते यह सब सहन करना कठिन था। फिर भी उनके नेतृत्व ने अपनी धीरोदात्तता का परिचय दिया। तीसरे दिन उद्घाटन कार्यक्रम हुआ। 'कर्तृत्वशालिनी देवी अहल्याबाई' यह शैलाताई भागवत, मंगलताई जोशी लिखित पुस्तक का प्रकाशन हुआ। विशेष अतिथि एवं अध्यक्ष के रूप में मा. दत्तोपंत ठेंगडी जी एवं मा. सुमित्राताई महाजन आयी थी।

भगिनी निवेदिता १२५ वाँ जन्मवर्ष

मनमन में प्रेरणा जगाने के लिये निरंतर कुछ न् कुछ कार्यक्रमों की योजना बनानी होती है। भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानंद जी की परमशिष्या, भारतशरण व्यक्तित्व। सेवा की महत्प्रेरणा। उनका 125 वाँ जन्मदिन 'युवती स्वयंप्रेरणा वर्ष' के रूप में मनाने का निश्चय हुआ। अनेक स्थानों पर उनके जीवनी पर प्रश्नमंजूषा के कार्यक्रम हुएं, उसमें जयपुर अग्रेसर रहा। भगिनी निवेदिता का स्वदेश प्रेम अतुलनीय था। वह स्वयं स्वदेशी वस्तुएँ हाथगाडी पर रखकर बेचने के लिये गली गली में घूमती थी। उसका कार्यक्षेत्र बंगाल विशेष रूप से कोलकाता दीर्घकाल तक था। समिति की ओर से बंगाल में चार स्थानों पर बहुत बडे कार्यक्रम लिये गये। उनकी समाधिस्थली दार्जिलिंग में दिनांक 5 नोव्हेंबर 1992 को शोभायात्रा, सार्वजनिक सभा, स्टीकर्स वितरण, आदि कार्यक्रम हुएं। भगिनी निवेदिता का निवासस्थान समाधि स्थान पर्यटन - विभाग के दर्शनीय स्थलों की सूचि में जोडने के लिये एक निवेदन जिलाधीश को दिया। दूसरा कार्यक्रम हुआ सिलिगुडी में तीसरा मालदा में। वहाँ निवेदिता के पुतले की स्थापना वं. ताई जी द्वारा की गयी। 'सुकांत मोड' इस रास्ते के मोड को 'भगिनी निवेदिता मोड' और 'रथवाडी से कोतवाली' इस रास्ते को 'भगिनी निवेदिता सरणी' ऐसा नाम दिया गया। चौथा कार्यक्रम कोलकाता में दिनांक 5 से 8 नोव्हेंबर 1992 को हुआ। वं. ताई जी के साथ मा. रुक्मिणीअक्का, मा. सीतालक्ष्मी जी, मा. प्रमिलताई जी मेढे आदि सभी अधिकारी भी इस कार्यक्रम के लिये वहाँ पहुँची थी।

स्वदेशी मेला

कोलकाता का कार्यक्रम एक अभिनव कार्यकम था - स्वदेशी मेला। इसमें स्वदेशी उद्योग - सुंदर सुंदर वस्तुएँ - कपडे आदि विक्री हेतु उपलब्ध थे। खाने की स्वदेशी वस्तुओं के विक्रीकेंद्र थे।स्वदेशी गीत अर्थात रवींद्र संगीत, नृत्य आदि कार्यक्रम, स्वदेशी खेल अर्थात् खो-खो, कबड्डी आदि खेलों की प्रतियोगिताएं, संगठन आदि विषय लेकर स्वदेशी जादू के खेल। मा. लालकृष्ण जी अडवाणी इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि थे। वं. ताई जी भी विशेष रूप से पधारी थी। स्वदेशी कपडा उनके अंतरंग का विषय था। कार्यक्रम का मंच आदि देखते ही बनता था। माँ शारदा, भगिनी निवेदिता आदि की सुंदर

प्रतिमाएं थी। उन प्रतिमाओं को सोलावुड का खास स्वदेशी अभिनव सुशोभन था। दिनांक 8 नोव्हेंबर 1992 को वं.ताई जी द्वारा 'कस्तुरी' नाम की स्मारिका बंगला एवं हिंदी में प्रकाशित की गयी।

वंदे मातरम्

वंदे मातरम् यह राष्ट्र जागरण एक का महामंत्र है।हमारे स्वाधीनता के आंदोलन में उसीने प्राण फूंकें। उस वंदे मातरम् की रचना को 125 वर्ष हुएं और उसके रचयिता स्व.श्री बंकिमचंद्र जी की स्मृतिशताब्दि के अवसर पर समिति ने मा. प्रमिलताई जी मुंजे के मार्गदर्शन में एक प्रदर्शनी तैयार करवायी। चित्रकार थे सोलापुर के श्री. दास। प्रदर्शनी सोलापुर ही तैयार हुई और उसका उद्घाटन वं.ताई जी की अध्यक्षता में हुआ। प्रदर्शनी देखते देखते ही उन्होंने छोटीछोटी सूचनायें दी। 'तरुण भारत' सोलापुर के तत्कालीन संपादक श्री. विवेक जी घळसासी उस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि थे। वं. ताई जी की सूचनाओं से वे भी आश्चर्यचकित हुए। इस कार्यक्रम के पश्चात् ताई जी गाणगापुर भी जाकर आयी।

समाज अपना है

'बीड' में बाढ के कारण अनेकों घर उजड गये। अनेक लोग मृत्यु की गोद में समा गये। सेविकाएँ बाढपीडितों के मदद कार्य में लगी रही। वं. ताई जी ने विभाग के 7-8 सेविकाओं को पत्र लिखें और उनके मातृत्व का एहसास सबको हुआ। बाढग्रस्तों के लिये हमें क्या क्या करना चाहिये इसका मार्गदर्शन इन पत्रों में था। जब लातुर में भूकंप आया तब वहाँ का प्रवास होने के पश्चात् मा.सुशीलताई जी ने ताई जी को विस्तृत पत्र लिखा - ताई जी ने लिखा सब को तुरंत मिलकर आये अच्छा ही हुआ। समाज अपना है। आपत्तियों में हमें अपना कर्तव्य निभाना ही चाहिये। मैं रोज आप के पत्र की प्रतिक्षा करती थी। डिसेंबर 1993 में ताई जी ने उस क्षेत्र का प्रवास किया था। उनका स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण भूकंप के तुरंत पश्चात् वहाँकी प्रवास योजना नही बनायी थी। वं. मौसी जी ने जिस कार्य को प्रारंभ किया उस कार्य को संवर्धित कर वं. ताई जी ने अपने मातृत्व को विशाल व्यापक रुप में फैलाया।

मैं पत्र पहुंचा दूंगी

असम से लेकर भुज कच्छ तक, जम्मू से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हुआ काम। प्रचारिका सुनीता हळदेकर को अब महाराष्ट्र से असम भेजा गया। सुनीता ने वहाँ की नीति, रीति, भाषा भी अपना ली थी। ताई जी ने उस क्षेत्र में भी गुवाहाटी, नगाव, इंफाल आदि स्थानों पर प्रवास किया। नगाव के उनके वास्तव्य में अटूट ऐसे भावनिक संबंध इला शर्मा परिवार से जुड गये। उस घर का छोटा बालक था 'विश्वजित'। क्रिकेट का बहुत शौकिन। वं. ताई जी पुणे से है यह सुनकर उसने वं. ताई जी से पूछा कि मैं सुनील गावस्कर जी को एक पत्र दूं क्या? आप पहुंचायेगी उनको? ताई जी ने कहा - हाँ दे दो मैं पहुंचा दूंगी।

ताई जी का स्वर्गवास हुआ उस दिन प्रातः इला जी ने भयानक स्वप्न देखा। नींद खुल गयी। वह बडी अस्वस्थ हो गयी। पौ फटते ही पंडित जी के पास गयी। उन्होंने कहा किसी निकटतम व्यक्ति के बिछोह की सूचना है यह। इला जी घर पहुँची तो उन्हें ताई जी के निधन का समाचार मिला। अपनी माँ ही खो गयी ऐसा उन्हें लगा।

विनोद के फुहारे

ताई जी जिस घर में जाती वहाँ घुलमिल जाती। हँसी विनोद भी करती। ताई जी आठ वर्ष की बालिका से लेकर, युवती गृहिणी, या वृद्धा सभी के साथ खुलेपन से संवाद कर पाती थी। और हंसी मजाक से वातावरण प्रसन्न करती थी। देवी अहल्या मंदिर का नवनिर्माण होने के पश्चात् रेलिंग लगने का था। ताई जी का पैर फिसल गया। तुरंत डॉ. मृदुला को बुलाया गया। उन्हों ने पूछा 'ताई जी कैसे गिर गयी।'

'फिर दिखाऊँ गिरकर? कैसे गिर गयी? पर मृदुल, उसके लियें तो सीढियों तक चलना होगा। क्योंकि मैं यहाँ थोडे ही गिरी?" वायुमंडल एकदम तनावमुक्त। मृदुला ने उनका औषधोपचार किया अतः वं. ताई जी ने पुणे जाने के पश्चात् उसको शाबाशी का पत्र तुरंत लिखा। उससे वह अभिभूत हो उठीं।

एक बार कहीं जाना था तो प्रमिलताई जी ने वं. ताई जी को साडी बदलने के लिये कहा। उसके बाद किसीने कुछ पूछा तो कहती 'रुकिये, हमारे हेडमास्तर जी को पूछती हूं।' एक बार वं. ताई जी देवी अहल्या मंदिर में आयी

थी प्रारंभ में देवी अहल्या मंदिर में केवल प्रमिलताई जी रहती थी। उस दिन नौकरानी नही आने के कारण वह बर्तन धो रही थी। यह देख कर वं. ताई जी उनकी सहायता के लिये आयी। मना करने पर भी उन्होंने बात नही मानी। और हसते हुए कहने लगी - जाओ, छायाचित्रकार को जल्दी बुला लाओ। प्रमुख कार्यवाहिका बर्तन मांज रही है और प्रमुख संचालिका वे धो रही है। श्रीमती जयश्रीताई खांडेकर देवी अहल्या मंदिर में पूजा बताती थी तो उसे 'देवी अहल्या मंदिर की पंडित जी' कहती थी।

एक अमोल रुपया

जन्मदिन के दिन या किसी परीक्षा में सुयश प्राप्त करनेपर या किसी की पदोन्नति होने पर कोई प्रणाम करता तो ताई जी आशीर्वाद के रुप में उसे एक रुपये का सिक्का देती। सबको देना है, तो एक जैसा देना है। ताई जी ने दिया हुआ 'एक रुपया' अनेकोंने संभाल कर रखा है।वह उनकी अनमोल धरोहर बन गयी है।

पीर पराई जानी रे

समिति सेविकाओं को मिलने के लिये वे सदा तत्पर रहती। वरंगल जिले की कार्यवाहिका रुक्मिणी जी का पैर कर्करोग के कारण काटना पडा। कुछ दिन पश्चात् कृत्रिम पैर लगाने हेतु वह खडकी में गयी। उस समय वं. ताई जी प्रवास में थी। आने के पश्चात् उन्हें पता चला कि रुक्मिणी जी का ऑपरेशन हुआ है और वह कल वरंगल लौटने वाली है। यह सब पता होते तक रात हो गयी थी। मौसम भी ठीक नही था। रुक रुक कर बारिश आ रही थी। फिर भी ताई जी का निश्चय था उसे मिल कर ही आना है। अतः किसी कार्यकर्ता के स्कूटर पर बैठकर वे उनके घर से काफी दूर ऐसे खडकी में जा कर उन्हें मिलकर आयी। हमेशा जैसे ही स्कूटर चलाओ। भूल जाओ कि तुम्हारे पीछे ताई जी बैठी है। आयु के 80 वसंत पार करने के पश्चात् भी उनकी हिंमत कायम थी। उनका ममत्व ही उन्हें प्रेरित, उत्साहित करता रहता। ताई जी को देखकर रुक्मिणी जी के आँखों में आंसू आये। पैर कट जाने की निराशा भी चेहरे पर झलक रही थी। ताई जी ने समझाया 'आप अच्छे कार्य से जुडी हो। एक पैर गया तो क्या? अपना हृदय है समिति को देने के लिये, उसे दृढ बनाओ।' ताई जी के स्पर्श से वे पुलकित हो उठी। और लौटने के पश्चात् बैसाखियों के सहारे चलती रही ध्येय पथ पर।

चौका सम्हाला

वं. ताईजी का भोपाल में प्रवास था। उनकी व्यवस्था प्रमिलाताई काळे जी के घर में थी। प्रमिलाताई का हाथ फ्रॅक्चर होने के कारण गले में बंधा था। वे एक हाथ से गृहकार्य कर रही थी। घर की स्थिति देखकर, जाते ही, ताईजी ने चौका सम्हाल लिया! भोजन बनाना और सबको खिलाना यह तो ताई जी का अभिजात गुण था। उनके हाथ से बना स्वादिष्ट भोजन खा कर घर के सभी प्रसन्न हुएं।

भाग्यनगर संमेलन के दो दिन पूर्व 30 40 सेविकाएं आने की सूचना अचानक ही प्राप्त हुई। रसोई व्यवस्था की महिलाएं आपत्तिवश जल्दी लौट गयी थी। सभी सेविकाएं किसी न किसी व्यवस्था के लिये बाहर गयी हुई थी। माई अफजलपुरकर जी के घर में वं. ताईजी और एक प्रबंधिका थी। अन्य सेविकाओं के लौटने तक वं. ताईजी ने सबका भोजन बना लिया था। घर नया है, मुझे जानकारी नही है, ऐसा तनिक भी विचार उन्होंने नही किया।

मेरी कुटिया पावन नही हो पायी

जनता बँक का एक चपराशी श्री. तुकाराम जाधव बँक के काम से श्री. वसंतराव जी के पास आए। अपना काम पूर्ण कर जाने के लिए निकले। वे दो तीन सीढियाँ उतरे होंगे तो अचानक ताई जी ने उन्हें बुलाया। तुकाराम फिर से उपर आये। ताई जी ने उन्हें बैठने के लिये कहा परंतु वे खडे ही रहे। चेअरमन साहब के घर में उनके और उनकी माँ के सामने कुर्सीपर बैठना उन्हें उचित नही लगा। अतः वे बैठे नही। ताई जी ने उन्हें कारण पूछा।

"ताई जी मैं चपरासी सिपाही - उसमें भी कैकाडी जाति का, यहाँ कैसे बैठूँ?"

ताई जी ने कहा 'बँक में ठीक है। पर यह तो अपना घर है। यहाँ सभी एक जैसे, कोई भेद नही।' घर कहाँ है, घर में कौन कौन है, सब पूछताछ की। और हाथ में मिश्री रखी। कहा - तळेगाव में आऊंगी तो राजाभाऊ के साथ आपके घर अवश्य आऊंगी। परंतु उसके ही कुछ दिन पश्चात् ताई जी का निधन होने के कारण वे जा नही पायी। ताई जी के शोक सभा में अतीव दुःख से उसने कहा 'मैं अभागा ही रहा। मेरी कुटिया ताई जी के पावन पदस्पर्श से पुनीत नही हो पायी।' और वह रो पडे।

सरस्वतीनिकेतनम्

ताई जी का घर सुबह जल्दी ही जग जाता। पहली चाय भोर में ही बन जाती। जब दादा थे तब ताई और दादा दोनों पर्वती तक रोज टहलने के लिये जाते थे। शुद्ध हवा में घूमना उनके स्वास्थ्य के लिये लाभकर रहा। सुबह सुबह पेपर, कुछ अच्छे लेख, पुस्तकों का अच्छा पठनीय भाग वसंतराव पढकर बताते। ताई जी के हाथ काम करते रहते, पर कान यह सुनते थे, यह श्रवण उन्हें बहुत सी जानकारी देता था क्योंकि वे स्वयं पढने के लिये इतना समय नही दे पाती। साहित्य, समाजकारण, राजकारण सभी विषय होते थे इसमें। छोटे बच्चे बिस्तर में लेटे लेटे सुनते थे। इस कारण घर को, अनेकविध विषयों पर सामूहिक चर्चा करने का अभ्यास हो गया था। सबको यह बताया था कि कुछ अच्छी बाते सुनी, देखी तो घर में अवश्य बताओ। नगर में कोई अच्छा भाषण हो तो वहाँ जाना सभी के लिये आवश्यक था। भाषण सुनकर आनेके बाद उस विषय पर चर्चा होती।

समरस एकात्म परिवार

जब दादा थे तब शाम को भोजन करने के पश्चात् बाहर जाते। घर का सब काम जल्दी ही हो जाता था। सात के पश्चात् सब मिलकर रामरक्षा का पाठ करने की परिपाठी थी। इस समय घर के सभी सदस्यों का उपस्थित रहना अनिवार्य था। उस समय अलग अलग विषयों पर चर्चा भी होती थी। घर में कोई बीमार हो तो उसका परहेजवाला भोजन ही सभीके लिये बनता। किसी एकको कोई चीज खाना मना हैं तो वह घर में बनती नही थी। बीमार व्यक्ति स्वस्थ होने पर भगवान को पुरन की रोटी का भोग चढाया जाता था। घर के सुखदुख सभी लोगों ने आपस में बाँटने चाहिये ऐसा ताई जी का आग्रह था। वह घर की एकता का प्रतीक भी है। इसी लिये ताई जी के घर चार पीढियाँ एक साथ रह सकीं। पढने के लिये घर में नातियाँ भी रहती थी। परंतु बेटे की बेटियाँ, बेटी की बेटियाँ ऐसा भेदभाव नही था। गट थे - आयुनुसार - सरोज - भारती, शैला - विजय ऐसे। घर में आपस में बोलचाल बंद नही होती थी। घर में कभी बात का बतगंड नही बना या राई का पहाड नही बना। गलतफहमियाँ नही थी, उस के कारण विवाद नही थे। गलतधारणा के कारण वाद भी नही थे। समरस एकात्म परिवार था। उसके पीछे ताई का व्यवहार

था। उनकी तपस्या थी। वे हमेशा कहती थी कि "अरे पेट में इतना अन्न समाता है। उसे पचाते हो और किसी के चार शब्द पेट में रखना, पचाना क्यों नही संभव होता?"

ताई जी ने धार्मिक व्रत आदि भी किये पर रूढी के रूप में नही तो उनके उद्यापन के निमित्त अभावग्रस्तों को कुछ दे सकें इस विचार से। एक बार संक्रांति में, उन्होंने अपने रिश्तेदारों से संक्रांति के समय दी जानेवाली संभावित दान राशि एकत्रित की और एक महिला बीमार थी उसको आवश्यक दवाइयां ला कर दी। पूजापाठ के आडंबर में उन्हें बहुत विश्वास नही था। तीर्थयात्राएं न हो पायी तो भी चल सकता है, परंतु जहाँ गो ब्राह्मण प्रतिपालक हिंदू राजा का राज्याभिषेक हुआ वह रायगड अवश्य देखो यह उनका आग्रह रहता था। गर्मियों की छुट्टियों में सभी पोतेपोतियों को धार्मिक स्थल देखने के लिये भेजती। बच्चों के साथ कॅरम, शतरंज भी खेलती थी।

वह हमेशा बताती थी कि समय बेकार नही गवाना। प्रत्येक क्षण उपयोग में लाओ। केवल गप्पे नही करना, साथ समय हाथों से भी कुछ करे।

उस समय आपटे परिवार की आर्थिक स्थिति मध्यम की थी। परंतु वसंतराव जी का विवाह तय करते समय उन्होंने अपनी समधन को अर्थात् उज्वला भाभी की माँ को बताया- हमारे घर धनलक्ष्मी नही है परंतु जनलक्ष्मी बहुत है। उसका प्रत्यय उनकी जीवनी में पगपग पर आता रहा।

भगवत् गीता श्रद्धा निधान

भगवत् गीता उनकी श्रद्धा का विषय था। ताई जी को भी गीता मुखोद्गत थी। गीताधर्म मंडल के विविध कार्यक्रमों में सहभागी होती रहती। गीता जयंती के दिन दोपहर को महिलाओं के लिये गीतापाठ और तत्पश्चात् किसी का भाषण होना यह मूल कल्पना ताई जी की ही थी।

रसना पर नियंत्रण

ताई जी बहुत प्रकार के व्यंजन बनाती थी। सबको खिलाती भी थी। परंतु स्वयं बहुत कम खाती थी। "बनाती थी मन - मन चखती थी कणमात्र" वे कहती थी कि मेरे स्वास्थ्य का रहस्य मेरी रसना पर मेरा नियंत्रण है ही। चीज कितनी भी पंसद आयी, तो भी वह थोडा सा ही लेती थी। उनका पेट कभी खराब नही हुआ। जैसा उनका रसना पर नियंत्रण था वैसा जिव्हा पर

भी। उन्होंने अपने शब्दों से कभी किसी का मन नही दुखाया।। वह हमेशा कहती सिर पर बरफ और जिव्हा पर मिश्री रखिये। उनकी इस मिश्री से अनेकों काम हुएं है।

ताई जी की वाणी सरल सादी थी। अनुभूति के बोल उसमें समाये थे। पारिजात या बकुल पुष्प की सुखद वर्षा जैसा उनका वक्तृत्व था। अभिनिवेश नही तो अभिजातता थी। अंतर्मन में अंगार होते हुए भी वाणी में फूल की मृदुता थी। उनके शब्दों से कार्य की अपार निष्ठा झलकती थी। वही थी हम सब सेविकाओं की प्रेरणा।

राष्ट्र हमारा बडा घर

ताई जी सेविकाओं को अपने देश, धर्म,राष्ट्र के प्रति सतत सचेत करती थी। वे बताती थी कि हम जिस घर में रहते है वह हमारा छोटा घर है। और देश हमारा बडा घर है। हमारा राष्ट्र ही हमारा वास्तविक घर है। जैसे हम अपने छोटे घर को संभालते है, उसकी चिंता करते है वैसे ही बडे घर की अर्थात् देश की चिंता करनी है। उसे संभालना, उसका गौरव बढाना हमारा परम कर्तव्य है।

पैर हमेशा जमीन पर ही रहें

ताई जी के उदाहरण बडे मार्मिक रहते थे - एक बार उन्होंने कहा था - देखिये पतंग आकाश में उडती है। परंतु उसका एक छोर नीचे जमीन पर खडे पतंग उडानेवाले व्यक्ति के हाथ में रहता है अर्थात् उसका नियंत्रण जमीन से होता है। नीचे के व्यक्ति द्वारा खींचने पर वह ऊंची जाती है। ढील देने पर ढीली पड जाती है। गलती से पतंग कट गयी तो नीचे जमीन पर गिर जाती है। हम आकाश में कितनी भी ऊंची उडान ले परंतु पैर हमेशा जमीन पर ही रहे। उसीमें जीवन का गौरव है।

- भैरवी - के स्वर

1993 के जन्मदिन पर - पता नही ताई जी क्या सोच रही थी उन्होंने अपनी दैनंदिनी में लिखा था मेरा जन्मदिन ही मेरा अंतिम दिन हो। जिस दिन याने 9 मार्च को उनका स्वर्गवास हुआ उस दिन तिलक पंचाग के अनुसार फाल्गुन कृष्ण 11 ही थी। हमें किसीको पता नही चला परंतु उनके स्वभावानुसार वह चुपचाप अपने महाप्रवास की तयारी कर रही थी।इस वर्ष उन्होंने प्रवास भी काफी किया। पंजाब,जम्मू कश्मीर और असम भी जाकर आयी। जन्मगाव आंजर्ले,केळशी,मिरज, कल्याण,दिल्ली, कर्णावती (अहमदाबाद), लातुर में भूकंपग्रस्त इलाके में मिलकर आयी। किसीको ना नही कहा। विजयादशमी के दिन एक पत्र उन्होंने सभीको लिखा । उसमें एक वाक्य था कि यह मेरा अंतिम पत्र है। अपने स्वभावानुसार वह पत्र उन्होंने अपनी पोती सुहास और कर्णावती से आयी हुई विजूताई को दिखाया उन दोनों ने 'यह मेरा अंतिम पत्र है' इस पंक्ति पर आक्षेप लिया। किसकी मृत्यु कब है किसको पता? ऐसा नही लिखना। वैसी उनकी हलचलें, उनका रोज का काम करना आयु के हिसाब से बहुत अधिक था अतः ऐसा कुछ इसी वर्ष हो सकता है, ऐसा सुहास या विजूताई को लगा ही नही। किंतु 'मेरी इच्छा आप सब एकत्रित रूप में रहे।' यह वैसे ही रहने दिया। पत्र अनेकोंको मिले। कभी कभी वे मजाक में कह देती थी कि, 'देखो, मैं न किसीसे पानी मांगनेवाली हूँ, न किसीसे सेवा लेनेवाली हूँ, मैं जाने के बाद आप कहेंगें, अरे बुढिया चली गयी।' किसीने इस पर कुछ कहा नही पर इतने जल्दी वे हम सबसे विदा लेगी ऐसा किसीको लगा ही नही। 84 वर्ष की आयु में वह काम कर रही थी मानसिक शक्ति के बल पर।इस वर्ष समिति की द्वितीय अर्धवार्षिक अखिल भारतीय बैठक जुनागढ में थी।ताई जी उस बैठक में नित्यक्रम के अनुसार उपस्थित थी। देखकर सब को लगा वं. ताई जी कमर में कुछ झुक गयी है, शरीर भी थका हुआ।परंतु मन वैसा ही प्रसन्न।शरीर की थकान मन को छू तक नही रही थीं।प्रार्थना और वंदे मातरम् होते तक अब भी स्थिर खडे होने की तैयारी।पीछे मा.भारती ताई खडी थी। पर उनका दृढ विश्वास था कि मुझे कुछ नही होगा।

बैठक के अंत में समापन का भाषण। सभी बिंदुओं को स्पर्श करते हुए अत्यंत सुसूत्र, उनकी इस बार की भूमिका कुछ आग्रह की प्रतीत

हुई। पूरे समय विनोदी, मजेदार, पर सारगर्भित। चुटकियाँ सुन कर सब हंसते रहे ..हंसते रहे। बौद्धिक होने के पश्चात् सबके मुख से एक ही उद्गार 'आज तो वं.ताई जी का बौद्धिक सुन कर आनंद आ गया... मजा आ गया।' वातावरण एकदम प्रसन्न एवं हास्य विनोद भरा। जीवन में ताई जी ने कभी किसी का मन दुखाया नही परंतु इस बार वे किसी समझौते के लिये तैयार नही थी। वह संपूर्ण भाषण बहुत ही चिंतनीय है। उसके कुछ अंश नीचे प्रस्तुत है -

विशाल मातृत्व

आज समाज की धारणायें ही बदल गयी है आचार और विचार दोनों में अंतर आ गया है। हम सब लोग 150 वर्ष अंग्रेजों के गुलाम रहें। उनके चले जाने के पश्चात् भी उनकी संस्कृति का प्रभाव कम नही हुआ। वह हटाने के लिये हम मातायें ही असफल रही। बच्चा सुबह उठता है तो हम ही कहते है गुड मॉर्निंग। सुप्रभातम् क्यों नही कहते? माँ, अम्मा, बाबू जी ये अपने शब्द जाकर डॅडी मम्मी आ गये है और यह गर्व की बात बन गयी है। हम स्वयं जब राष्ट्रभाषा, राष्ट्र प्रेम और अपने धर्म के प्रति अपने मन में श्रद्धा जगायेंगे तभी अगली पीढी हमारा अनुकरण करेगी। आज स्त्री को अपना मातृत्व ही बोझ लगने लगा है। वस्तुतः मातृत्व का अर्थ केवल बालक को जन्म देना नही अपितु जिसे मैंने जन्म नही दिया ऐसे आसपास के अडोसपडोस में रहनेवाले भी मेरे बच्चे है इस प्रकार से व्यवहार करेंगे तो विशाल मातृत्व का अर्थ हमारे ध्यान में आयेगा।

भोजन का सामर्थ्य

उन्होंने कहा 'हमारी सुशीलताई कहती है 'क्या ताई, आप सबको खिलाती है। जहाँ जाते है सुनते है ताई जी के हाथ से भोजन किया है। मैंने उत्तर दिया मेरे हाथ से जिन्होंने भोजन किया है उन्होंने राष्ट्र का काम खडा किया है। मेरी स्तुति मैं नही करती.....।' ताई जी का यह वाक्य विलक्षण है। जगन्नाथराव जी का वाक्य 'मेरा व्यक्तित्व विनायक राव ने गढा है परंतु सेहत बनायी है ताई जी ने ' इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। यह बात सच है कि प्रवास के निमित्त अलग अलग प्रांतों में जाने पर अनेक प्रचारक जब मिलते है तब वं. ताई जी के घर भोजन किया था यह अभिमान से बताते है। उस भोजन की तृप्ति आज भी उनके चेहरे पर दिखाई पडती है। ताई जी के बनाये

भोजन में उनका मन भी समाहित रहता था और वह मन राष्ट्र को समर्पित था।'राष्ट्र राष्ट्र' का जाप करता रहता था। और वहीं संस्कार अन्नपर भी होते थे। उसी पूर्णब्रह्म के सेवन से वही गुणधर्म सेवनकर्ता के शरीर में पहुँचते थे। ताई जी आज हमें पता चलता है कि आप हमें आपके हाथ से बनाये हुएं भोजन का आग्रह क्यों करती थी।आपकी हर सेविका को अद्रक की बरफी या कुछ न कुछ देने का आशय आज समझ में आ रहा है। 'मातृहस्तेन भोजनम्' इस भगवान् कृष्ण की उक्ति का अर्थ आज मन को समझ रहा है। *ताई जी ने बनायें भोजन का एक और गुणधर्म था- अहंभाव को दूर करना। आपकी किसी भी कृति में मैं- मेरा यह भाव नही था। अहम् और आवाम् को तो आपने तिलांजलि दे दी थी। अस्तित्व में था केवल 'वयम्' ।*

जुनागढ से ताई जी कर्णावती में अपनी बेटी विजूताई के घर दो दिन रही। वहाँसे निकलते समय पता नही, क्यों? पर ताई जी की आँखें भर आयी। ताई जी को ऐसा भावुक होते कभी किसीने देखा नही परंतु गाडी का समय हो गया था। इसलिये कारण पूछना रह गया....।आज कल उनका बाँया हाथ भी दुखने लगा था। चोटी डालते समय तकलीफ होती थी। प्रार्थना के समय वे हाथ 3 मिनिट एक स्थिति में कैसे रख सकती है, इसका आश्चर्य कुमुदताई को लगता था। फिर भी वे स्वयं ही पत्र लिखती थी।अंतिम दिन तक यह क्रम चल रहा था। कभी हाथ कांपता था, थोडासा अक्षर भी तिरछा होता था, तो भी लिखना कायम था। वे गयी उसी दिन कलकत्ता के श्री.वसंतराव जी बापट को विमलताई के स्वर्गवास के कारण और नागपुर के बाकरू परिवार को लतादीदी के स्वर्गवास के कारण लिखा हुआ शोक संवेदना का पत्र प्राप्त हुआ। पत्र डाकपेटी में भी वे स्वयं डालकर आती थी। कई बार वसंतराव बोलते थे "माँ मैं बाहर जा रहा हूँ, मैं डाल दूंगा" पर ताई जी कहती थी - नही, आप काम में व्यस्त रहते हो, भूल जाओंगे तो, मेरे पत्र की सेविकायें राह देखती हैं।"

दैनंदिनी के कुछ पन्ने

जुनागढ से आने के पश्चात् दिनक्रम यथावत् चलने लगा। कर्णावती में ही उन्हें गंगूताई के पैर का गँगरीन होने का समाचार मिला था। ताई जी 4 मार्च को उनके घर जाकर मिल कर आयी। गंगूताई के बहू की प्रशंसा की, कि उसने अच्छी शुश्रुषा कर गंगूताई को अपाहिज होने से बचाया। उनकी छोटी

बहू ने स्वयं सीलें हुए कपडों की प्रदर्शनी देखकर आयी। हँसी हँसी में बोली 'मेरे नाप की पोशाख आये तो संदेशा देना।' ताई की इस हँसी मजाक से वातावरण थोडा बदला। उस परिवार को धैर्य मिला।

कार्यकर्ता का बिछोह

दिनांक 5 मार्च को अण्णा जी एवं शैलाताई काकिर्डे (ग्वालियर) उन्हें मिलने उनके घर गये।12.30 से 1.30 बजे तक उनके घर थे। मा.सीतालक्ष्मी जी बैठक में नही आयी। उसके स्वास्थ्य को लेकर वह चिंतित थी। उन्होंने पत्र लिखकर उसे मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। लिखा था ' मेरा श्रीकाकुलम् आना मुश्किल है। आप नागपुर आईये मुझें भी वहाँ आना सुविधा का है।मैं भी वहीं आऊंगी।उसको मिल न पाने के कष्ट उन्होंने पत्र में प्रकट किये। सौ.विमलताई बापट सांगली की सेविका परंतु बंगाल में विवाह के बाद आयी तो समिति कार्य की नींव रखी।शारीरिक भी अच्छा था। पुणे सम्मेलन में 1200 की संख्या बिना माईक नियंत्रित करना उसे सहज संभव हुआ था। ऐसी होनहार सेविका चल बसने का दुःख उन्हें वंचित कर रहा था। नागपुर कार्यालय में रोज आनेवाली लतादीदी बाकरू किडनी विकार से मृत्यु के अधीन हुई।इस शोक समाचार से भी वे बहुत व्याकुल थी।तुरंत उन्होंने उन दोनों के घर पत्र लिखें। शैलाताई ने उनको इतना बेचैन कभी नही देखा था। हमेशा जैसी ताई उन्हें विदा करने सीढियों तक आयी।

'ताई अपने स्वास्थ्य की चिंता करिये।' - शैलाताई

'अब मेरा क्या बाकी रहा है? मैं पूर्णरूप से तृप्त हूँ। अब चिंता (आकाश की ओर हाथ दिखाकर कहा) उसे करनी है ' - और ताई जी मुड गयी।

दिनांक 6 मार्च को ताई जी संचेती हॉस्पिटल में किसीसे मिलने गयी। बिजली नही थी अतः 4 मंजिलें चढकर गयी। वहाँकी नर्स ने उनकी परेशानी के लिये दिलगिरी व्यक्त की। पर उन्हें दूसरों के लिये हुए अपने कष्ट की कोई परवाह नही थी। वहाँसे अपने भतीजे की बेटी की सगाई में भी गयी। हमारे परिवार की ज्येष्ठ के रूप में उनका परिचय कराया गया। दूसरे दिन अपनी पोता बहू माधवी से उन्होंने कहा भी 'माधवी, कल की सीढियाँ चढना सहन नही हुआ।'

उनकी बहु पोती भार्गवी की परीक्षा के लिये दिल्ली गयी थी। वह कब आ रही है ऐसा दो-तीन बार पूछा। इन दिनों में रोज मिलने के लिये आनेवाली

पोती सुहास, शैला को ताई पास बिठा लेती।हमेशा 7 बज गये की कहती थी -'चलो अपने अपने घर लौट जाओ। अब उन्हें रोक लेती कहती थी 4 लोगों का भोजन बनाने में समय ही कितना लगता है।'

दिनांक 7 को डॉ.साठे आये थे। परंतु उन्हें भी कोई गंभीर बात नही लगी। स्नान के लिये जाते समय विक्रांत के दो-चार कपडे लेकर गयी। साफ सुथरे धो कर सुखा दिये। उमेश को नही बताना ऐसा माधवी को जताया। शाम को उषाताई जोशी के साथ दो तीन स्थानों पर जाकर आयी।

दिनांक 8 को ताई जी ने सुबह नागपुर कार्यालय फोन करके बहुत देर तक बात की। अंत में कहा-' अभी मुझसे काम नही होगा। ऑगस्ट में अ.भा. बैठक में आ सकूंगी या नही पता नही।आप सब मिलकर काम संभालो।'

उषाताई जी सुन रही थी ताई जी के ऐसे कहने पर मौन हो गयी।

'उषाताई सुन रही हो न?' उन्होंने पूछा। 'हाँ' के अतिरिक्त कोई उत्तर भी उषाताई के पास नही था।

उस दिन एकादशी थी। वैसे वं.ताई जी का हमेशा एकादशी के दिन उनकी सहेली कमलताई मांडके के यहाँ फलाहार के लिये जाने का क्रम तय था। परंतु आज जानेका मन नही हो रहा था। उषाताई जोशी के साथ कमलताई के लिये फलाहार का डिब्बा भेज दिया।

दोपहर में वह अकेली ही जिजामाता स्मारक समिति में बैठक के लिये अकेली ही गयी। वहाँ सब आश्चर्यचकित हुए कि ताई जी के आने की सूचना तो नही थी। शाम को सुहास आयी तो ताई जी चाय बनाने लगी।

'ताई आप मत बनाइये ।'

'अरे, वह थक कर आयी है।' - ताई जी

'नही, वही बनायेगी, हम दोनों पीयेंगें' वसंतराव जी ने कहा।

मेहमान बनकर रहिये

चाय के साथ साथ गप्पें भी हुई। 'ताई आप शक्ति से बाहर काम करना छोड दीजिये।जब हम बाहरगांव किसी के घर जाते है तो कैसे रहते है वैसा ही समझना और शांत रहना।'- श्री. वसंतराव जी और सुहास ने कहा

'अरे, यह अपना घर है। अपने घर को पराया कैसे मान लूं।'-ताई जी

'ताई वैसे ही समझो।' - ताई जी से जो लगाव था उसके कारण दोनोंने कहा। कई बार नियति अपने मुँह से कुछ बुलवा लेती है वैसे ही हुआ।'कल कहाँ

अपना घर।' कल ताई के लिये यह दुनिया, यह घर पराया ही होने वाला था। ताई है वह ताई थी- ऐसा वर्तमान भूतकाल में परिवर्तित होनेवाला था।

सुहास जाने के लिये निकली। ताई ने कहा 'अरे 20 को मुंबई से कुछ बहनें आनेवाली है, यह डायरी लो और उनसे चर्चा के विषय काश्मीर अभियान, बालिका सम्मेलन उसमें लिख कर रखो।आज कल ठीक से याद नही रहता।'

हमेशा जैसी ही उषाताई जोशी आयी। उनसे बातचीत हुई। माधवी की बहन का दूरभाष आया वह घर में नही थी, अतः उससे सबकी पूछताछ की। उसके लिये कुछ संदेशा है क्या? यह भी पूछ लिया।कोल्हापुर से कर्णिक आये उनसे बातचीत की।बँक से राजाभाऊ कदम आये उनसे हलचल पूछी।दूरदर्शन पर सज्जनगढ का कार्यक्रम चल रहा था वह देखा।रात को सब काम समाप्त कर सोने के लिये आयी।विक्रांत की उछलकूद चल रही थी।बिस्तर पर बैठने के बाद ध्यान में आया अरे, आज दासबोध पढना रह गया। वसंतराव जी ने कहा, 'मैं पढता हूँ ।' दोनोंने एक समास पढा। 'अब आप शांति से सो जाइये ।' ताई जी ने पानी पिया। ईश्वर का स्मरण किया। और चादर ओढकर शांति से निद्रा के स्वाधीन हुई । सदा सदा के लिये। कभी न उठने के लिये।

हिंदुत्व का मातृहृदय चिरनिद्रा में

माघ वद्य 12 दिनांक 9 मार्च पौने छः बजे गये। ताई जी जगी नही।वसंतराव जी को आश्चर्य लगा।परंतु सोचा कभी नही ऐसी सोयी। परंतु आजकल थक भी बहुत जाती है। उठेगी थोडी देर से। फिर भी उन्होंने कहा 'ताई, उठना नही क्या?' न कोई उत्तर मिला न कोई हलचल हुई। पाँच मिनट के बाद उन्हों ने फिर से आवाज दी। हिलाकर जगाया।कोई चेतना नही। उन्होंने सामने के ब्लॉक से माधवी, उमेश को आवाज दी। ताई जी निश्चल थी। आज सब कुछ पराया हो गया था। डॉक्टर को बुलाया। उन्होंने नाडी देखी। ताई जी नही रही।शायद ताई जी प्रातः 3 बजे के आसपास ही गयी होगी।न कोई चीत्कार, न कराहना, न चेहरे पर कोई शिकन, न हाथों की मुठ्ठियाँ बंधी थी न कुछ वेदना के निशान कहीं दिख रहे थे।डॉ.पल्लवी अथणीकर आयी-उन्होंने कहा 'सब समाप्त हो गया।' डॉ. साठे आये उन्होंने दूर से देखा कहा- 'ताई ने चकमा दिया।' आशा की अंतिम किरन लुप्त हुई। उसी क्षण कुसुमताई भिशीकर जी का फोन आया कि ताई जी ने मुझे फोन करने के लिये बताया था।ताई जी हैं परंतु उनकी वाणी मूक हो गयी। देखते देखते समाचार फैला।

कौशिक की ओर सेविकायें, छोटे बडे सब दौडने लगे।एक गृहिणी,समिति की सेविका,सामाजिक कार्यकर्ता, समिति की सर्वोच्च पदाधिकारी इससे भी अधिक यानि एक स्नेहमयी माँ शांत हुई थी। हिंदुत्व का मातृहृदय चिरनिद्रा ले रहा था।

दूसरे दिन सुबह अंत्यसंस्कार निश्चित हुआ। जग का नियम ऐसा ही हम कार्य करते हैं तब तक सबकुछ है।परंतु हमने साँस लेने का कर्म छोड दिया की लोग उस व्यक्ति का कर्म करना शुरू करते हैं। देश के कोने कोने से सेविकायें पुणे की ओर चल पडीं। उज्ज्वला वहिनी 40 साल तक साथ रही वह इस समय दिल्ली थी। वहाँ से पुणे पहुँची। विजूताई दूसरे दिन पहुँचनेवाली थी। विहिंप के कार्यक्रम के लिये वह और शांताताई गुवाहाटी गयी थी।

मा.उषाताई जी, मा.प्रमिलताई जी मेढे, मा.प्रमिलताई जी मुंजे, तीनों विमान मुंबई मार्ग से पुणे गये। मा. आबा जी थत्ते अ.भा. बैठक होते हुए भी उनके साथ पुणे के लिये निकलें। उन्होंने बताया - समाचार सुनते ही बालासाहब जी की आँखों में आँसू आ गयें।मुंबई से ये चार लोग रात के 12 बजे ताई जी के घर पहुँचे-रात को 12 बजे भी चिमण्या गणपती चौक लोगों से भरा हुआ था। चंदन जैसे घिसनेवाला एक देह शांत हो गया था। घर चौराहा रास्ते सब अपने ही दर्शनार्थी लोंगों से भरें हुए थे।फिर भी सब सुना सुना था, अनाथ था।केवल एक ही स्वर गूंज रहा था माँ, माँ। अनेकों देह परंतु हर हृदय में एक ही क्रंदन था 'मेरी माँ चली गयी।मेरी माँ चली गयी।'

महायात्रा

रात 1 बजे मा.उषाताई जी,मा. प्रमिलताई जी मेढे, मा.प्रमिलताई जी मुंजे, जिजामाता कार्यालय में पहुँचे। वहाँ कोल्हापुर, सातारा तथा आसपास से आयी हुई सब सेविकायें रूकी थीं। ऐसे दुःख के समय सबका साथ रहना ही बडा आश्वासक होता है। तीन बजे तक बैठक हुई। दूसरे दिन के कार्यक्रम की निश्चित योजना बनी। दूसरा दिन महाशिवरात्रि का पवित्र दिन था।' शिवो भूत्वा शिवं यजेत्' ऐसे एक जीवन का शिवरूप होना भी पवित्र था। ताई तो कब की शिवरूप हुई थी। अब शेष था पार्थिव। उसे शिवरूप बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। शिव के हिमखंड से धरती माता की गोदी में उन्हें रखा गया। समिति के गणवेष में वह तैयार हुई अपनी अंतिम यात्रा के लिये। नीचे गाडी खडी थी। पुष्पमालाओं से सुशोभित ।' ताई आप के जीवन में कभी आपने ऐसा सुशोभन

मान्य नही किया।' कभी बहुत जरी की भडकीली साडी में किसी ने ताई जी को देखा ही नही।बहुत सादा वेष रहता उनका।श्रीराम जयराम जय जय राम की धुन में ताई ने कौशिक छोडा। घर से जाते तक अबतक बताती थी कि इस दिन ...लौटकर आऊंगी । पर आज वह निकली थी परमधाम जाने के लिये।कभी भी न लौटने के लिये। ताई जी के न रहने की कल्पना ही घर में सहन न करने जैसे थी। सरस्वती निकेतन तो यथावत् था परंतु सरस्वती विसर्जित हुई थी। उसकी गागर सागर में समा गयी थी। उसका अलग अस्तित्व आज मिट गया था। ताई के घर जाकर ही अपना दिन शुरू करनेवाले भी कुछ लोग थे।आज ताई की उस प्रेममयी, ममतामयी मूर्ति के बिना वह मंदिर सुना हो गया था। फरशीवाले साठे जी रोज सुबह आते थे, चाय लेकर काम के लिये चले जाते थे। कहते थे कि मैं मर जाऊँगा न् 'तो मेरी अर्थी ताई जी के घर से ले जाना। उनकी बनायी हुई चाय मेरे मुँह में डालना, फिर आगे ले जाना।'

इस यात्रा में लगभग 3000 गणवेश धारी सेविकायें थी। अंत्ययात्रा में इतनी बडी मात्रा में महिलाओं का सम्मिलित होना यह पुणे के इतिहास की प्रथम घटना थी।अग्रभाग में भजनपथक, उसके पश्चात् सेविकायें, वं. ताई जी का पार्थिव वहन करने वाली गाडी, समिति के अधिकारी, परिवार जन और अगणित बंधु सम्मिलित थे। यह अभूतपूर्व यात्रा जहाँ जहाँसे गुजरती थी लोग आश्चर्य से देखते थे और श्रद्धा से मस्तक नवा लेते थें। अंत्ययात्रा में सत्तर वर्ष की वृद्ध महिलायें भी अनुशासनबद्ध चल रही थी।

वं. उषाताई प्रमुख संचालिका

गाडी समिति कार्यालय के परिसर में आयी। ताई जी को अपने प्रिय कार्यालय का अंतिम दर्शन कराने के लिये। वहाँ से ताई जी का पार्थिव सरस्वती मंदिर के प्रांगण में ले जाया गया। वहाँ समिति के केंद्रीय अधिकारी , विविध संस्थाओं के प्रतिनिधि, अनेक ज्येष्ठ समाज कार्यकर्ता उपस्थित , थे। सभी मौन थे। मन भारी था।सब की आँखें अश्रुपूरित थीं। सरस्वती मंदिर का मैदान खचाखच भरा था। फिर भी पूर्णतः शांत था।ध्वजारोहण, प्रार्थना, प्रमुख संचालिका प्रणाम के पश्चात् ताई जी ने लिखकर रखा हुआ उनका अंतिम पत्र प्रमुख कार्यवाहिका जी ने पढा। आँखें बारबार भर आती थीं। सामने के अक्षर धूसर हो रहे थे फिर भी कर्तव्य तो निभाना ही था।

ताई जी का पत्र

प्रिय भगिनी

सप्रेम नमस्कार

आप सबको ज्ञात है कि वं. मौसी जी के दुःखद निधन के पश्चात् उनकी आज्ञा से और आप सभीके सहयोग से राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका इस सर्वोच्च पद का दायित्व मैं अपनी अल्प मति के अनुसार निभा रही हूँ। समिति का कार्य मैं अपने अंतिम साँस तक करती रहूँगी।

किसी भी भौतिक वस्तु के जीवन की एक सीमा होती है वैसी मेरे जीवन की भी है। यह सीमा समाप्त होने के पश्चात् अपनी परंपरा के अनुसार यह दायित्व आप सभीकी परिचित नागपुर की कार्यकर्ता मा. उषाताई चाटी को सौंपने का निर्णय मैंने लिया है। मेरे पश्चात् यह दायित्व वे संभालेगी। वं. मौसी जी के आशिर्वाद से एवं आप सभी के सक्रिय सहयोग से चलनेवाला यह कार्य मा. उषाताई अधिक व्यापकता से, समर्थता से आगे बढायेगी ऐसा मेरा विश्वास है। आप सभीसे मैं प्रेमपूर्वक प्रार्थना करती हूं कि जो प्रेम, सहकार्य आपने मुझे दिया वैसा ही उनको दें।

प्रमुख संचालिका पद बहुत दायित्वपूर्ण है। मैं उसके योग्य थी ऐसा मुझे नही लगता परंतु आप सभीने मुझे संभाल लिया, कार्य का विस्तार किया इसलिये मैं आप सभीकी ऋणी हूँ। मेरे इस कार्यकाल में जाने-अनजाने किसी कार्यकर्ता को मैं ने कुछ भलाबुरा कहा होगा तो आप मुझे क्षमा करें, ऐसी मेरी प्रार्थना है।

पुनः एक बार आप सभीको धन्यवाद। संगठन पर नितांत श्रद्धा रहने दो। अनंत के प्रवास को निकलते हुए मैं आपसे अंतिम बिदाई ले रही हूँ।

आनंद। शांति ।समाधान।

भवदीया

ताई आपटे

ताई जी का व्यक्तित्व ही उनके पत्र से झलक रहा था - "मेरे इस कार्यकाल में जाने-अनजाने किसी कार्यकर्ता को मैंने कुछ भलाबुरा कहा होगा तो आप मुझे क्षमा करें, ऐसी मेरी प्रार्थना है " यह वाक्य सभीके मन को छू गया। इस हृदयस्पर्शी निवेदन से ताई जी के मन का अत्युच्च स्तर प्रकट हो रहा था। मैदान से निकल ही रहे थे कि एक सुरक्षा जवान ने स्वयंप्रेरणा से बिगुल पर अंतिम बिदाई के स्वर बजाये।यात्रा में सबसे आगे भजन मंडल का गण था। रास्ते में अनेक स्थानों पर पुष्पवृष्टि हो रही थी। स्टेशन से आंध्र की प्रचारिका कन्याकुमारी दौडती हुए आयी और अंत्ययात्रा में सम्मिलित हुई। 'महाराष्ट्र एक्सप्रेस' लेट हुई थी। विदर्भ की बहनें उसीसे आनेवाली थी। अंततः वे स्मशान में ही पहुँचीं। सभी सेविकाएं आज वैकुंठभूमि में शायद जीवन में पहली बार गयी। धार्मिक संस्कारों के पश्चात् ताई जी का देह अग्नि को समर्पण किया गया। उन ज्वालाओं ने देखते ही देखते बडी आत्मीयता से उनको अपने बाहों में लपेट लिया। आज तक जिसकी बाहों में समा कर सब सुख, आनंद, समाधान पाते थे वहीं ताई जी आज अग्निज्वालाओं की बाहों में आनंद पा रही थी। ताई जी अब स्मृतिरूप शेष रही। कीर्तिरूप में अमर बन गयी। वं. ताई जी की स्मृति हम सब के मन में एक संस्कार का भांडार है।

ताई जी का अंतिम पत्र फॅक्सद्वारा समिति के केंद्र कार्यालय में भेजा गया। देवी अहल्या मंदिर में भी दिनांक 10 मार्च को दोपहर चार बजे ताई जी का अंतिम पत्र पढकर बताया गया। उसके अनुसार वं. उषाताई जी प्रमुख संचालिका बनीं यह सभी को ज्ञात हुआ। एक बडे ही संजोग की बात थी की इसी दिन प.पू. बाळासाहब जी का पत्र स्मृति-मंदिर परिसर रेशीमबाग में प्रतिनिधि सभा में मा.श्रीकांत जी जोशी ने पढकर दिखाया और उसके अनुसार प.पू.रज्जूभैय्या जी ने कार्यभार संभाला। दोनों भाई-बहनों ने एक ही दिन अपना दायित्व बडे शान से दूसरे को सौंपकर एक अलौकिक आनंद प्राप्त किया।उनकी राह पर चलना इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है। इसीलिये ताई जी हम कहते है -

ध्येय की वह लगन हमको आप जैसी दीजिये
आपको जो प्राप्त थी वह प्रेरणा भी दीजिये
साधनामय करे सेवा चाह हम को दीजिये
राष्ट्र हित में लगे जीवन आशीष हम को दीजिये
आशीष हम को दीजिये

सरस्वती उवाच

संस्कार, संसार और सहकार इन तीनों बातों का अखंड स्मरण महिलाओंने किया तो समाज का कल्याण होगा।

संयम से रहें, मन दृढ रखे। मणिबंध अपने आप सशक्त होगा।
संगठन के प्रति निष्ठा यह तारक शक्ति है। उसी के आधार पर संगठन का गौरवमय मार्गक्रमण होगा। जीवन में आनंद, शांति, समाधान चाहिये तो अधिक समय देकर काम करना होगा।

सेविका के सिर पर बर्फ और मुँह में मिश्री हो
मस्तिष्क हमेशा शांत हो और नित्य मधुर भाषण करें।

स्वत्व, स्वधर्म, स्वराष्ट्र, स्वाभिमान और स्वकीय इन पाँच 'स्व' के सरंक्षण एवं संवर्धन का दायित्व स्त्री का है। इन पांच स्व के सरंक्षण हेतु स्त्री को स्वसरंक्षणक्षम बनना चाहिये ऐसा ताई जी का आग्रह था ।

सेविका की भाषा में मैं, मेरा, तेरा इस प्रकार के शब्द ना हो। हम हमारा जैसे शब्दों का प्रयोग करें और वैसा ही व्यवहार कीजिये।

सामाजिक काम करनेवालों को बहुत सोचना चाहिये, वह मितव्ययी होना चाहिये, उसने सीधा सादा रहना चाहिये ।

सेविका कैसी हो? वं. ताईजी कहती थी - उसका शरीर सुदृढ हो। मन निश्चल हो। दृष्टि भेदक हो। हृदय प्रेम से पूर्ण हो। उसको निरंतर कार्यरत रहना चाहिये। वह दूरदर्शी हो। निष्ठावान् हो। उसके शब्द मीठे, चेहरा सस्मित प्रसन्न हो। व्यक्ति व्यक्ति को जोडना, राष्ट्रकार्य के लिये प्रेरित करना यही सेविका का काम है। सेविका का अर्थ है स्वयंस्फूर्ति से काम करनेवाली स्त्री। वह समाज में घुलमिल जाय और ज्योत से ज्योत जलाती रहे। एक एक बिंदु जोडने से सिंधु अपने आप बन जाता है।

मैं समाज की हूं और यह समाज मेरा है इसकी सेवा में मुझे आनंद प्राप्त होता है अतः मैं संगठन का कार्य करती हूँ।

हम कभी भी निराश न होवें, न निष्क्रिय, अपना काम करने का व्रत अखंड रखना है। जीवन में उतार-चढाव तो आते ही रहते है। धूपछांव तो चलती ही रहती है। यह ध्यान में रखकर हिंमत नही हारना है।

दिन के चौबीसो घंटे स्वदेश एवं स्वधर्म का हि चिंतन करनेवाली सेविका हम बनें।

कार्यकर्ता के कार्य का यश और उसके गृहस्थ जीवन का यश समानातंर से प्रगति करता है ऐसा नही। विनायकरावजी के गृहस्थजीवन के यश का आलेख इसे अपवाद नही था। ताईजी जैसी सहधर्मचारिणी के कारण ही वे ऐश्वर्यवान और यशवंत थे। वैभव के परिमाणों का अभाव ताईजी के समृद्ध सहवास ने नष्ट कर दिया। विनायकरावजी का गृहस्थजीवन इसी कारण सामाजिक कार्यकर्ता स्वयंसेवक का आदर्श गृहस्थ जीवन है। शनिपार के निकट रहनेवाले इस परिवार का प्रतिबिंब यदि हजारों घरों में प्रतिबिंबित हुआ तो आजके अपने समाज में सुवर्ण चंपक का गंध महकने लगेगा।

- *शिवराय तेलंग*

* ताई आपटे स्मृति प्रतिष्ठान - तळेगाव दाभाडे
उद्योग मंदिर, बालवाडी, संगणक प्रशिक्षण केंद्र आदि

* सरस्वती सेवा प्रतिष्ठान नांदेड द्वारा
वं. ताई आपटे कन्या छात्रावास
मेघालय की बालिकाओं के लिये छात्रावास

* देवी अहल्याबाई स्मारक समिति -
वं.ताई आपटे रुग्णोपयोगी प्रकल्प के अंतर्गत
कै.मालतीबाई पटवर्धन रुग्णोपयोगी साहित्य सेवा केंद्र
स्वामी विवेकानंद मेडिकल मिशन खापरी में नवजात
शिशुओं के लिये सिले हुएं सुती कपडों के लगभग
200 सेट प्रतिवर्ष एवं छोटे स्वेटर्स का वितरण
इस प्रकल्प के माध्यम से आज तक स्वामी विवेकानंद मेडिकल मिशन, खापरी (मोतीबिंदू के ऑपरेशन के लिये पैसे दिये), कर्ण बधिर विद्यालय-नागपुर, संज्ञा सवंर्धन - बुटीबोरी, श्रद्धानंदपेठ अनाथालय नागपुर आदि संस्थाओं को 9 मार्च को आवश्यक वस्तुओं का सहयोग

* सरस्वती स्मारक समिति - सिलचर दक्षिण असम

* सरस्वती सेवा प्रकल्प- धुबडी उत्तर असम
गमछे, शाल, चद्दर आदि बुनाई केंद्र -

* भारतीय स्त्री जीवन विकास परिषद द्वारा सन् 2002 से वं.ताई आपटे सेवा पुरस्कार दिये जाते हैं।

* वं. ताई जी नित्य कहती थी की शाखा यह संजीवनी है। अतः उनका जन्मशताब्दि वर्ष शाखा संजीवनी वर्ष निश्चित किया है।

* पंजाब प्रांत ने 1-2 नोव्हेंबर 2008 को संजीवनी सम्मेलन लिया

भरत-भू-चंद्रिका

हे मनस्विन्! शुचि, सुशीला, भरत-भू-चंद्रिका,
कोटि-कोटिक भगिनियों में, दीप्त तव मन की प्रभा ।।धृ।।

मातृ-भू की साधिका प्रिय दृढवती आराधिका,
भक्ति-भावित, भाविका, चिंतन-रता उद्भाविका
ध्येय-हित सर्वस् समर्पित स्वाभिमानिनि, शम शुभा।।1।।

तुम विराजो स्वप्न बनकर, हर हृदय की कामना,
प्राण- फूंके इस जगत् में, शुद्ध शाश्वत भावना,
वंदना, अभिनंदना! शुभ चन्दना यशमय विभा ।।2।।

हे तपस्विन्! तप-स्वरूपा स्वप्न हो साकार आगे,
राष्ट्र चेतन की दिशा ले सुप्त जडता अन्ध भागे,
यह प्रशस्ति पंथ अपना कर्मव्रत लेंगे निभा।।3।।

हो यशस्वी कर्म-पथ पर यह हमें आशीष वर दो,
तुच्छ मांटी के खिलौने प्रेरणा शुभ हृदय भर दो,
ध्येय हित संकट सहेंगे धैर्य हम सबमें जगा।।4।।